श्रीजैनप्रतिमा-लेखसंग्रह।



संग्राहक और संयोजक-

इतिहासप्रेमी-व्याख्यानवाचस्पति-

जैनाचार्य्य श्रीमद् विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी

महाराज

卐

संपादक और अनुवादक-

जैन-जगती के लेखक और प्राग्वाट-इतिहास-कर्ता-

दौलतसिंह लोढ़ा 'अरविंद' बी. ए.



सर्वतंत्रस्वतंत्र विश्वपूज्य परमयोगिराज—

प्रभु श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज।

श्रीजैनप्रतिमा-लेखसंग्रह ।

संग्राहक और संयोजक-

इतिहासप्रेमी-व्याख्यानवाचस्पति-

जैनाचार्य्य श्रीमद् विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज ।



संपादक और अनुवादक-

जैन-जगती के लेखक और प्राग्वाट इतिहास-कर्ता-

दौलतसिंह लोढ़ा 'अरविंद' बी. ए.



अर्थसहायक

काव्यप्रेमी मुनिराजश्री विद्याविजयजी के सदुपदेश से

मरुधरदेशान्तर-बालीनगरवास्तव्य-प्राग्वाटज्ञातीय-

सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय-श्वेताम्बरजैनसंघ ।



प्रकाशक

श्री यतीन्द्र-साहित्य-सदन, धामणिया (मेवाड़)

प्राप्तिस्थान—

१ श्री राजेन्द्रप्रवचन-कार्यालय,
खुडाला पो० फालना (मारवाड)

२ श्री यतीन्द्र-साहित्य-सदन,
धामणिया (मेवाड)
पो० काछोला-राजस्थान.

प्रथम संस्करण

मूल्य रु. ३)

वीर सं. २४७८. वि. सं २००८. ई स १९५१ राजेन्द्र स. ४५.

मुद्रक—
शाह गुलाबचंद लल्लुभाई,
श्री महोदय प्रिन्टींग प्रेस,
दाणापीठ-भावनगर.

प्रस्तावना



श्रीसौधर्मवृहत्तपागच्छीय आचार्यदेव श्रीमद् विजय-यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज का विक्रम संवत् २००४ में चातुर्मास थराद (थिरपुर) बनासकांठा, उत्तरगुजरात में था। कार्त्तिक माह में आपश्री डब्बल निमोनिया से इतने अधिक पीड़ित हुए कि जीवन की आशा भी नहीं रही। दूर-दूर के नगर, ग्राम एवं प्रान्तों से अनेक भक्तगण दर्शनार्थ दौड़े जा रहे थे, मैं भी गया था। स्थिति सुधार पर थी, परन्तु आपको अधिक भाषण करने से तथा आये हुए भक्तजनों को दर्शन तक देने में भी होनेवाले श्रमसे बचने की चिकित्सकों की सम्मति थी। मुझ को दर्शन करने की आज्ञा मिल गई थी। आचार्यदेवने मुझ को कर-सङ्केत से धर्मलाभ देकर चिकित्सक महोदय की ओर देखा। चिकित्सक आचार्यदेव की अभिलाषा को समझ गये और मुझ से कुछ क्षण चर्चा करने की सम्मति दे दी। आचार्यदेवने पुस्तकों की एक ग्रन्थी खोली और उसमें रही हुई शिला-लेखों के अक्षरान्तर की दो प्रतियाँ देखने को दीं। मैंने प्रतियों को सहज दृष्टि से देखीं तो ऐतिहासिक दृष्टि से वे अमूल्य प्रतीत हुईं। चर्चा के अन्तर में आचार्यदेवने कहा

कि-मैं इतना अस्वस्थ और अशक्त हूं कि शिला-लेखों का अनुवाद, अनुक्रमणिका आदि करने में अपने को असमर्थ पाता हूं। मेरी प्रार्थना पर वे प्रतियें मुझको दे दी गईं। मुझ से जैसा बन पड़ा, वैसा संपादन एवं अनुवाद पाठकों के सामने हैं।

संपादन कला—

ऐसी पुस्तकें नहीं तो मैंने लिखी ही हैं और नहीं संपादित ही की हैं। शिला-लेख सम्बन्धी पुस्तकों का संपादन भी एक अलग कला है। उस पर दो शब्द लिखना कभी भी अप्रासंगिक नहीं है। शिला-लेखों का अनुवाद करने बैठने के पूर्व शिला-लेख सम्बन्धी साधन-सामग्री अधिक से अधिक संग्रह करनी चाहिये। तत्पश्चात् प्रारम्भ में प्रतिष्ठा करानेवाले आचार्यों की वर्णानुक्रम से अनुक्रमणिका का गच्छ, संवत् और लेखाङ्कों के उल्लेख के साथ साथ निर्माण करना अत्यन्त लाभदायक है। जब यह अनुक्रमणिका विनिर्मित हो जाय तब ऐसी अन्य पुस्तकों की अनुक्रमणिकाओं को इस दृष्टि से देखिये कि आप की पुस्तक में आये हुए आचार्यों के नाम उन पुस्तकों की कनुक्रमणिकाओं में आये हैं? एक ही नाम के अनेक आचार्य हो गये हैं, लेकिन इससे घबराने की कोई आवश्यकता नहीं। एक ही नाम के यद्यपि एक और विभिन्न-विभिन्न गच्छोंमें

अनेक आचार्य हो गये हैं, परन्तु वे आगे पीछे हुए हैं और अगर कुछ एक ही नाम के एक ही समय में भी हो गये हैं तो भी गच्छ अलग अलग होने से वे थोड़े श्रम से अलग अलग वर्गीकृत किये जा सकते हैं। एक ही गच्छ में एक नाम के दो या अधिक आचार्य कभी भी एक समय में नहीं हो सकते, उनमें कुछ अन्तर रहता ही है ऐसी मर्यादा है। ऐसा करने से संवतों की भूल भले न निकले, लेकिन आचार्यमय गच्छ अनुक्रमणिकाओं में परस्पर एक और अनेक संवतों में मिल जाते हैं। कभी कभी गुरुपरम्परायें भी मिल जाती हैं। कभी एक ही आचार्य के दो या अधिक कुछ या सर्वांशतः मिलते हुए लेख एक या अन्य पुस्तकों में इस प्रकार यत्न और श्रम से निकल आते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि संवतों की त्रुटियाँ भी यथासंभव दूर की जा सकती हैं और शासनकाल और शताब्दियों की त्रुटियाँ तो अनेक सुधारी जा सकती हैं। लेखों में आये हुए गृहस्थों के नामों की भी अगर वर्णानुक्रम से अनुक्रमणिकायें ज्ञाति, गोत्र और संवत् लेखाङ्क के साथ साथ हो तो एक ही दिन, तिथि और माह-संवत् के कभी कभी एक ही वंश के एक ही पुरुषों या कुछ पुरुषों के नामों से गर्भित एक-दो लेख एक या अन्य पुस्तकों में क्रम से मिल जाते हैं और आचार्य के नाम और गच्छ में रही त्रुटियाँ बहुत अधिक दूर की जा सकती है और इनसे उनकी

भी। उक्त अनुक्रमणिका के बन जाने तथा उसकी तुलना अन्य पुस्तकों की अनुक्रमणिकाओं से कर लेने के पश्चात् अनुवाद का कार्य उठाना अधिक उपयुक्त एवं सुविधाजनक होता है, क्योंकि उस समय तक शिला-लेखों का अनेक समय अवलोकन जैसा अनुक्रमणिका बनाने के कारण बार-बार करना पड़ता है, हो गया होता है और लेखों का सुधार एवं संशोधन भी जो इसी कार्य के साथ साथ अनिवार्यतः चलता था समाप्त हो जाता है। अन्य अनुक्रमणिकायें अनुवाद कार्य के पश्चात् बनाई जा सकती हैं।

शिला-लेखों का क्रम—

आचार्यदेव का चतुर्मास थराद में होना निश्चित हो गया था और खुडाला (मारवाड़) से आपका विहार एतदर्थ थराद की ओर जुलाई सन् १९४७ में प्रारम्भ हो गया था। जीरापल्ली से लगा कर आपके मार्ग में जितने ग्राम, नगर, पुर पड़े आपने अधिकांश मन्दिरों के और प्रतिमाओं के लेख उतारे, जिनका उतारना सुविधा, अवसर से बन सका। जैनप्रतिमा-लेखसंग्रह का निमित्त कारण थराद में चतुर्मास का निश्चित होना है तथा स्वयं थराद के २७३ दोसौ तिहत्तर धातुप्रतिमा एवं पाषाणप्रतिमा लेख हैं। इन दो कारणों से इस पुस्तक में अधिक प्रमुखता थराद की है। अतः लेखों का क्रम थराद के लेखों से ही प्रारम्भ किया

है। थराद के लेखों के पश्चात् जीरापल्ली (जिरावला) तीर्थ से मार्ग में आये हुए गाँवों के लेखों का अक्षरान्तर क्रम से दिया है। जैनघरों की तथा मन्दिरों की संख्या तो आपने अपने मार्ग में आये प्रत्येक ग्राम, नगर की ली है जो अलग विहार-दिग्दर्शन शीर्षक से लिखी गई है।

अनुवाद—

१. भले कोई समझे कि अनुवाद में अधिक श्रम नहीं पडता है, क्योंकि आदर्श और आधार सामने होते हैं। लेकिन अनुवाद एक ऐसा निश्चित, सीमित निर्दिष्ट पंथ है कि जिसमें होकर सफलता पूर्वक पार हो जाना भाग्यशाली का कर्म है। यतीन्द्रजैनलेखसंग्रह के लेखों की रचना प्रायः अधिकतर एक-सी मिलती हुई होने पर वाक्य-विन्यास इतना शिथिल है कि अभीष्ट की प्राप्ति में उलझन पड़ जाती है। सर्व से अधिक जो द्विधा रहती है, वह है लेख के न्यास करनेवाले को शोधने की। अनेक लेखों से पता ही नहीं चलता कि प्रतिमा का करानेवाला कौन व्यक्ति है?, जैसे देखिये 'धरणा पुत्र वेला भार्या विमलादे पुत्र खेमा, गेला, गजादिनि०' प्रतिमा करानेवाला धरणा है या वेला? 'धरणापुत्र वेला' इस प्रकार के लेखन से तथा धरणा की स्त्री का नामोल्लेख भी नहीं होने से तथा वेला तीन या अधिक लडकों का पिता है से यही ध्वनि निकलती है कि

इस प्रतिमा का करानेवाला वेला था और प्रतिष्ठा के समय से पूर्व संभवतः मातापिता मर चुके थे। यही अनुमान सत्य है—मेरा यह दावा नहीं है।

२. लेखाङ्क ७७ में 'जीवितस्वामि' पद का प्रयोग किया गया है। इसका अर्थ यह हो सकता है कि देवराजने अपने माता-पिता की जीवितावस्था में ही शीतलनाथबिम्ब प्रतिष्ठित करवाया, परन्तु इससे यह सिद्धान्त स्थिर नहीं किया जा सकता कि जिस लेख में 'जीवितस्वामि' पद का प्रयोग नहीं हुआ हो वहाँ लेख के लिखानेवाले के माता, पिता, या पति उस समय से पूर्व मर चुके थे? लेखाङ्क १८, ३१, ३६, ३७, ४३, ४६, १३९, १६१ में भी इस पद का प्रयोग है। श्रेयकर्म करानेवाली केवल स्त्रियाँ हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि 'जीवितस्वामी' पद का प्रयोग सौ० स्त्रियों के शिलालेखोंमें 'अधिक' मिलता है।

३. केवल मंगलसूचक शब्दों एवं कुछ पदों को छोड़ कर शेष प्रत्येक लेख का पूरा पूरा अनुवाद किया है। जहाँ एक ही वंश के अधिक लेख प्राप्त हुए हैं, वहा उनका वंश-चक्र भी देने का प्रयत्न किया गया है। परस्पर मिलनेवाले दो या अधिक लेखों के नीचे चरण-लेख दिया गया है। जिन लेखों में दुर्बोधता एवं अस्पष्टता है, उनको यथाशक्या स्पष्ट करने का पूरा पूरा यत्न किया गया है। प्रत्येक लेख

के अनुवाद को तत्सम्बन्धी ग्राम, तीर्थ, नगर और जिनालय के नाम से तथा देवकुलिका की क्रम-संख्या से शीर्षाङ्कित किया गया है। अर्थात् ग्राम, तीर्थ, नगरवार; सेरी, मोहल्ला और मन्दिरवार तथा देवकुलिकाओं की संख्यावार उनको वर्गीकृत किया गया हैं। ऐसा करने का उद्देश्य पाठकों को सुविधा देना तो है ही, परन्तु कार्य को सुगम बनाना प्रथम है और अतः अनिवार्य है।

लेखों की भाषा, शैली और लिपि—

लेखों में वर्णित विषय गद्य में है। समूचे पुस्तक में केवल ५ श्लोक आये हैं। लेखों की भाषा संस्कृत होते हुए भी अशुद्धता लिये हुए है, परन्तु निश्चित और संमत है और वाक्यविन्यास की दृष्टि से अप्रौढ़ है, फिर भी व्यवहारिक है। वाक्यों में शब्दों का क्रम कलापूर्ण नहीं है परन्तु, सोद्देश है। अशुद्ध, अप्रौढ, कलाविहीन होते हुए भी भाषा निश्चित-सी हो गई है। ग्यारहवीं शताब्दि के और सतरहवीं अठारहवीं शताब्दि के लेखों की भाषाओं में कोई अन्तर नहीं दिखाई देता। निम्न उदाहरण देखिये:—

लेखाङ्क ३३१-सं० १०११ आषाढसुदि २ शनीश्वरे सनढभार्या नयणादेवी पुत्र वसीया भार्या वयजलदेवी पुत्र लाखसिंह तेन श्रीपार्श्वयुग्म कारितः, बृहद्गच्छीयपरमानन्दसूरिशिष्यश्रीयक्षदेवसूरिभिः प्र० ।

लेखाङ्क ३१९—सं० १८६९ पौषसुदि १२ गुरौ श्री-ऋषभदेवजी पादुकाभ्यो नमः, भ० श्रीविजयलक्ष्मीसूरिभिः प्रतिष्ठितं लोटीपुरपट्टणे।

भाषा का यह रूढरूप आज तक ज्यों का त्यों चला आ रहा है। आज के प्रतिमा लेखों में भी, जब कि भाषाओं की उन्नति आशातीत होती चली जा रही है, हमारे शिला-लेख लिखनेवाले भाषा को विकाश नहीं दे रहे हैं। उसी रूढरूप को आप्त और शास्त्रीय मान बैठे हैं, और शैली को भी रूढ़ बना दिया है।

१ अ—प्रत्येक लेख की आदि में संवत्।
ब—तत्पश्चात् माह, तिथि और दिवस।

अधिक प्राचीन लेखों की आदि में अधिकतर केवल संवत् का ही उल्लेख मिलता है। जैसे लेखाङ्क १८७, ३२१, ३२३, ३३३ को देखिये। तेरहवीं शताब्दि से संवत्, माह, तिथि, दिवस का उल्लेख नियमित रूप से मिलता है।

२ संवत्, दिवसादि के पश्चात् व्यवहारी, श्रेष्ठि के ग्राम, ज्ञाति, गोत्र और कहीं गच्छ का उल्लेख होता है। ग्राम का नाम लेखों के अन्त में भी पाया जाता है। किसी किसी लेख में ये सर्वाङ्ग न होकर कम भी होते हैं।

३ तत्पश्चात् व्यवहारी--श्रेष्ठि का नाम या उसके पूर्वजों

के नाम मय--विशिष्ट पद चिह्न जैसे संघवी, मंत्री और महत्तम आदि अनुक्रम से होते हैं। कहीं कहीं आचार्यादि नाम भी इस स्थल पर मिलते हैं। ऐसे लेख बहुत कम हैं जिनमें श्रेष्टि पुरुष के नाम नहीं हैं। ऐसे भी लेख हैं जिनमें पूर्वजों के नाम नहीं है।

४ तत्पश्चात् उस स्त्री और पुरुष का नाम होता है जिसके श्रेयार्थ वह पुण्यकार्य किया जाता है। अगर व्यवहारी अपने श्रेयार्थ ही वह पुण्यकार्य करवाता है तो वहाँ आत्मश्रेयार्थ या स्वश्रेयार्थ लिखा होता है।

५ तत्पश्चात् विम्ब और पट्ट का उल्लेख होता है।

६ तत्पश्चात गच्छ, गच्छान्तर, शाखादि के साथ प्रतिष्टा करनेवाले आचार्य, साधु का नाम, उनके गुरु आदि पूर्वाचार्यों के नाम--अनुक्रम से होते हैं। गच्छ का नाम कहीं कहीं लेखों के अन्त में भी होता है। ऐसे पांच लेख हैं जिनमें प्रतिष्ठा--कर्त्ता आचार्यों के नाम नहीं हैं। अन्य उनतीस लेख ऐसे हैं जिनमें से नौ में गच्छ और आचार्य के और बीस में गच्छ के नाम नहीं हैं।

७ क्रियापद कहीं आचार्यादि के नाम के पहिले और कहीं पश्चात् होता है।

८ शुभं भवतु, श्री श्री आदि मंगलसूचक शब्द हमेशा जहाँ कहीं भी होते हैं लेखों के अन्त में रहते हैं।

शिला और प्रतिमा के लेखों की लिपि देवनागरी होती है। अक्षरों का आकार शास्त्रीय लिपि का होता है। परन्तु यह कहना पड़ेगा कि समय की गति के साथ लिपि की ति भी परिवर्तित होती रही है। अक्षरों का आकार उत्तरोत्तर परिमार्जित होता चला आया है। अधिकतम प्राचीन लेखों के अक्षरों का आकार इतना विचित्र होता है कि उनका पढ़ना उस पुरुष के लिये ही संभव और शक्य है कि जो प्राचीनतम् लेखों के पढ़ने का अभ्यासी हो। दो बातें जो खटकती हैं--एक यह है कि ऐसे भी लेख हैं जिनकी रचना से यह पता नहीं लगता कि लेख को उत्कीर्ण करानेवाला तथा पुण्यकर्म करने करानेवाला व्यक्ति कौन है ? तथा उस लेख में वर्णित व्यक्तियों में से कौन उस दिन उपस्थित या जीवित था ? कोई एक सिद्धान्त स्थिर करके ही यह जाना जा सकता है।

दूसरी बात यह है कि ऐसे भी लेख हैं जिनसे प्रतिष्ठा कहाँ हुई ? किस ग्राम के वासीने करवाई का पता चलना भी कठिन होता है। जैसे 'राजपुरे' अर्थात् प्रतिष्ठा राजपुर में हुई, परन्तु प्रतिष्ठा करानेवाले श्रेष्ठि राजपुर का था या अन्य ग्राम का ? प्रश्न रह जाता है। ऐसी स्थिति में वह श्रेष्ठि राजपुर का ही निवासी था मानना अधिक उपयुक्त एवं संगत होता है। इसी प्रकार राजपुर निवासीने प्रतिष्ठा करवाई का अर्थ 'राजपुर' शब्द के अभाव में राजपुर में

प्रतिष्ठा करवाई अर्थ लेना पड़ता है। जहाँ प्रतिष्ठा हुई हो, अगर ग्राम का नाम भी दिया हो तब तो कोई प्रश्न ही नहीं बनता है।

व्यवहारी, श्रेष्ठि के नामों की विचित्रता—

प्रथम बात जो यहाँ कहनी है वह यह है कि नामों में आजकल जो लाल, चन्द्र, राज, सिंह, देव, मल्ल आदि प्रत्यय होते हैं वे १६ वीं शताब्दि से पूर्व के नामों में प्रायः नहीं मिलते, अर्थात् नाम एक-शब्दात्मक ही होते थे या लिखे जाते थे। एक-शब्दात्मक नाम का रूप भी कहीं कहीं ऐसा विचित्र मिलता है कि इस विकास के युग में भी जिसका अर्थ और रूप समझना बड़ा कठिन हो जाता है। उस समय के पुरुषों और स्त्रियों के नामों के उच्चारण की ध्वनि उस युग के वातावरण की अनुसारिणी थी-वह ऐतिहासिक या वैज्ञानिक तत्व इन नामों की बनावट में ओत-प्रोत समाया हुआ है, या यों कहना चाहिये कि उस युग ने ही नामों की ऐसी एक-शब्दात्मक रचना की। दशवीं शताब्दी से भारत में यवनों के आक्रमणों का जोर बढ़ चला था। चारों ओर क्रोध, उत्साह, घृणा, जुगुप्सा, आक्रोश के भाव बढ़ते चले जा रहे थे, जिनका अन्त अकबर बादशाह के समय में जा कर होना प्रारम्भ हुआ। अकबर बादशाह के समय में बाहरी आक्रमणों का अन्त पूर्णतः हो गया था और सर्वत्र

अत्याचार, बलात्कार रुक-से गये थे। प्रेम और शान्ति का वातावरण पुनः जाग्रत होने लगा था। मनुष्य जब क्रोधातुर, आक्रोश में होता है, अथवा राग-द्वेष भरे शब्दों में बोलता है या किसी अन्य पुरुष के साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करता है, उस समय वह मेघराज के स्थान पर मेघा, रामचन्द्र के स्थान पर रामा बोलता है। युद्ध करते समय देल्हण, पल्हण, मल्हण, साजण, राउल आदि नामों का प्रयोग प्रिय, सहज एवं उत्साह वर्धक होता है।

रामादे, माल्हणदे, साजणदे आदि स्त्रियों के नामों से हमें उस समय के वीरपुरुषों की देवी अर्थात् रणचण्डिका के प्रति आस्था और श्रद्धा का परिचय मिलता है और साथ ही स्त्रियों में भी रौद्रभाव अथवा ओजस्व भरा होता है और उस समय में स्त्रियों में रहे हुए ये भाव जाग्रत और वृद्धि-गत रहने चाहिये थे का परिचय मिलता है। रामा और रामू का प्रयोग प्रेमभरा भी कहा जा सकता है, लेकिन मात्र बच्चों के लिये। एक ही नाम को भिन्न भिन्न रसातिरेक में किस प्रकार तोड़मरोड़ कर अपभ्रंसित कर बोला जाता है का उदाहरण नीचे देखिये। इस उदाहरण के देने का मूल अर्थ यह है कि उस काल में किस रस का अतिरेक था। पाठक भलिविध समझ सकेंगे। शृङ्गार, शान्त और करुण रस सतोगुणी हैं; हास्य, वीर और रौद्र रजोगुणी तथा भया-नक, वीभत्स और अद्भुत रस तमोगुणी हैं।

१ शृङ्गार-रामचन्द्र, रामनाथ, प्रेमचन्द्र, [illegible] ।
शान्त-राम, प्रेम, बुद्धिचन्द्र, हरि ।
करुण-राम, रामू, प्रेम, प्रेमू, [illegible] ।

२ वीर-रामसिंह, [illegible], [illegible], प्रेमसिंह, [illegible] ।
रौद्र-रामजी, प्रेमजी, [illegible], [illegible]
हास्य-रामो, प्रेमो, [illegible] ।

३ भयानक-रामा, प्रेमा, [illegible] ।
वीभत्स-[illegible], [illegible], [illegible] ।
अद्भुत-[illegible], [illegible], [illegible] ।

प्रस्तुत पुस्तक में आये हुए नाम रजोगुणी एवं तमोगुणी रसों की रचना है। यवन आततायियों का हिन्दुओं पर अत्याचार, नाना राजाओं में परस्पर मान एवं मिथ्या गौरव को लेकर द्वन्द्वता और उनमें भोली प्रजा का सर्वनाश, व्यापार एवं कृषिकी हानि, तलवार के धनियों का निर्बलों पर, व्यापार एवं कृषिप्रियतथा शूद्र जातियों पर आतंक और अत्याचार, रात-दिन युद्ध में लगे रहनेवालों के लिये व्यापारी एवं कृषकवर्ग को तथा शूद्रों को आयुभर बेंठ और बेगार करते रहना, योद्धाओं का ध्यान और योद्धाओं की सुविधा के लिये व्यापारी शूद्र और कृषकवर्ग के इस प्रकार अमानुषिक उपयोगने पु[illegible] की शान्ति को भंग कर दिया, गृहस्थ का सुखमरा जी[illegible]

नष्ट कर दिया, प्रेम, स्नेह और सहानुभूति की इतिश्री कर दी। इस प्रकार व्यापारी, शूद्र एवं कृषकवर्ग लगभग ५०० वर्षों तक पददलित और आतंकित रहा, उस समय विप्र पूजनीय और क्षत्री योद्धा होने के कारण सम्माननीय थे। क्षत्री लोग, व्यापारी, शूद्र एवं कृषकवर्ग के पुरुषों को एक-शब्दात्मक और वह भी अपमान जनक नाम लेकर बोलाते थे। जैसे मूलचन्द्र को मूला, मूले, मूलिया, मूल्या और योद्धाओं को मल्हण, मूल्लण, मूलसी एवं मूलसिंह कह कर बोलाते थे। इस प्रकार यह हुआ कि इन वर्गों के नाम ऐसे ही रहने और पड़ने लगे। अंतर इतना हुआ कि मूला, मल्हण, मूल्लण व्यापारी एवं कृषकवर्ग के पुरुषों के नाम रहे और मूलिया, मूल्या, मूला शूद्रवर्ग के पुरुषों के नाम पड़े। मेरे विचार से अब पाठक समझ गये होंगे कि नामों की इस वैचित्र्यपूर्ण रचना और आकृति में वह अशान्त युग झलक रहा है। ये नाम उस युग की वैज्ञानिक एवं रासायनिक ग्रन्थियाँ हैं, उस युग के वातावरण के, पारस्परिक व्यवहार के, सभ्यता नैतिकतापूर्ण सम्बन्ध के घट हैं, पाठ हैं। नामों की यह आकृति उपहास एवं विस्मय की वस्तु नहीं, वरन इतिहास की संरक्षणीय एवं संग्रहणीय संपत्ति है।

अनुक्रमणिका का महत्व—

बिना कुंजी के एक ताला खोलने में कितना समय

लग जाता है और इसके उपरान्त चित्त को कितनी बेचैनी और पीड़ा होती है, मस्तिष्क में कैसा धक्का लगता है—यह या तो वे जानते हैं जो अनुभवी हैं, या वे जिनकी कभी कुंजियाँ गुम गई हों, जहाँ सैकड़ो तालों की कुंजियाँ हों ही नहीं या गुम गई हों. फिर वहाँ तो व्याकुलता का पार ही नहीं रहता। अनुक्रमणिकाओं के बिना ऐसी ऐतिहासिक पुस्तकें अकारण झंझट हो जाती हैं। लेखक या संपादक अनुक्रमणिकायें बना कर पाठकों को एक अद्भुत सुविधा तो प्रदान करते ही है, साथ में पुस्तक की उपयोगिना भी अनन्त बढ़ जाती है। इस पर -सुविधा के अतिरिक्त लेखक तथा संपादक को अनुक्रमणिकामें विनिर्मित करते समय लेखों में स्थान तथा आचार्य और पुरुषों के नामों में, वर्ष, माह, तिथि और दिनों में, जाति, गोत्र, संप्रदाय, गच्छ, सन्तानीय, शाखा, प्रशाखा, आचार्य और पुरुषों की सन्तति की परम्पराओं में जो त्रुटियाँ नेत्रदोष के कारण लेखों की प्रतिलिपि करते समय आ जाती हैं, अथवा मूल लेखों में वर्षा, आतप, भूकंप, जैसे प्रकृति के सर्गों के कारण शीर्णता और भग्नता, अधिक काल व्यतीत हो जाने के कारण जीर्णता, और विधर्मी आततायियों के दुष्प्रहारों के कारण भग्न होने से विकृति, और अस्पष्टता आ जाती है, वे पूर्ण समान अथवा कुछ अंशों में मिलनेवाले लेखों के परस्पर मिलान से अत्यधिक दूर हो जाती हैं। लेखक का श्रम सफल हो

जाता है और पुस्तक अत्यन्त उपादेय और एक ऐतिहासिक सत्य बन जाती हैं।

ज्यों ज्यों अनुक्रमणिकायें बनती जाती हैं, लेखकमें अधिकाधिक साधन सामग्री जुटाने के भाव बढ़ते जाते हैं और लेखक में अथक श्रम, अनुशीलन, मनन और विवेचन करने की मधुर रुचि बढ़ती जाती है और इस प्रकार पुस्तक अधिकतम सत्य एवं सुन्दर बन जाती है। शिला एवं प्रतिमा--लेखों में आये हुए संवत्, ज्ञाति, गोत्र, कुल, शाखा, ग्राम, नगर, तीर्थ, गृहस्थ, गच्छ, आचार्य, राजा, मंत्री, श्रेष्ठी आदि सर्व की परिचायिका अनुक्रमणिका है। शोधकों का यह समय और धन बचानेवाली हैं। इन सब बातों को दृष्टि में रखते हुए प्रमुख प्रमुख सर्व प्रकार की अनुक्रमणिकायें देने का प्रयत्न किया है।

अन्तिम निवेदन।

मैंने पुस्तक को साधनसामग्री एवं योग्यतानुसार अधिकतम ऐतिहासिक एवं रुचिकर और उपादेय बनाने का प्रयत्न तो किया है, लेकिन फिर भी अनेक त्रुटीयों एवं कमियों का रह जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मेरी शक्ति के बाहर की बातों के लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। एक बात जो मेरे साथियों से निवेदन करनी है वह यह है कि मैंने इस कार्य को जिस शैली एवं मार्ग से पूर्ण किया है

और वह शैली एवं मार्ग किस प्रकार असुविधाओं से खाली पाया जा सकता है जिसका विवेचन मैंने स्थल स्थल पर दिया है को वे मनन, अनुशीलन कर अपने श्रम, समय और पैसे की पर्याप्त बचत कर सकते हैं।

आचार्यदेवने मुझको यह कार्य देकर जो मेरा मान और अनुभव बढ़ाया है, मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ और उनके लिये आपका अमर आभारी रहूँगा। मुनि श्रीविद्याविजयजी साहब तथा सागरविजयजी का भी इस पुस्तक में अनेक भांति से श्रम मिला हुआ है, वे भी अनेक धन्यवाद के पात्र हैं।

महावीरजयन्ती चैत्र शु० १३ बुधवार विक्रम सं० २००५	श्रीवर्धमान जैन बोर्डिंग हाउस सुमेरपुर(मारवाड)	संपादक- दौलतसिंह लोढ़ा जैन 'अरविन्द' बी. ए.



१ विहार—दिग्दर्शन ।

[जीरापल्लीतीर्थ से प्रारंभ हुआ]

ग्राम, नगर.	अंतर(कोष).	जैनमदिर.	जैनवस्ती.
वरमाण	३	१	३
मंडार	४	२	२५०
आरखी	२½	१	१४
कूंचावाड़ा	३	०	८
फनदोतरा	१	०	२
राबो	१	०	३
जावल	१½	०	३
वईवाड़ा	२	०	५
बनोड़ा	२	०	५
बड़नाल	४	०	२
भीलड़िया	१	२	४
नेहड़ा	१½	१	२०
थोरगढ़	२	०	३
मानपुर	१½	०	०
नारायण	१	०	०
वात्यम	१	१	२५
वासणा	१½	१	३५

ळुआणा	२	१	२५
खोरला	३	०	१
मसुपुर	३	०	०
थराद्	१	१२	६००
पावड़ मोटी	३	१	१८
जेतड़ा	२½	१	२५
पड़ादर	३½	०	०

२ लेखोंकी ग्राम, नगर, तीर्थ क्रम से अनुक्रमणिका

---

३ लेखों की स्थान क्रम से अनुक्रमणिका—

४ संवत्सरवार अनुक्रमणिका ।

१३७३	३२१
१३७७	१९२
१३८७	१७१
१३९२	२४१
१३९४	१९३
१३९९	१०७
१८	२२

पन्द्रहवीं शताब्दि।

१४०१	९१
१४०४	१७८
१४०६	३३०
१४११	२२४, ३१०
१४१२	२०१, ३११
१४१३	३०९
१४१७	१३
१४२१	६, ३०३ (अ) ३०४ (अ)
१४२२	२४५
१४२४	२९२ (अ)
१४२५	३७२, ३७४
१४२९	१५
१४३०	१०५
१४३२	२१
१४३३	७
१४३४	१०२
१४३५	९९
१४३६	११२, १७०
१४३७	२०२
१४४२	१६१, ३२८
१४४९	१५९, ३४७
१४५०	१३६
१४५२	१८१
१४५३	६२, १८४
१४५६	१८२
१४६२	१०३
१४६५	१८३
१४७१	७५, १५२
१४७२	३६९
१४७४	२८७
१४७९	९६, ११३, २०६
१४८०	२०५
१४८१	२१८, २७४, २७५, २७६
१४८२	६०, १५४

१४८३ २३, २०८, २६८, २७८ से २८६, २८८, २८९, २९० से ३०१, ३०३ (घ), ३०४ (घ), ३०५ से ३०८, ३१२, ३१३

१४८४ १६९, १८६

१४८५ ७०, १७६, २३०

१४८६ ३२७

१४८७ २७७, २७८, ३१६

१४८८ ५८, २३७, ३७३

१४८९ १८८, १९८

१४९२ ३१४

१४९३ ७३, ९८, १६३, २४४

१४९४ १९६, २७३

१४९५ १४

१४९६ १८५

१४९७ ५४

१४९९ ५०, ७८, १३२, १९०, २३८, २५५

४८ ११०½

सोलहवीं शताब्दि।

१५०१ ४, १६, ६५, ९१, ०६, १५३

१५०३ १५०, १६५, १६८, २१०, ३१९

१५०५ १, २४, ८९, ९३, १३८, १४२, २०९, ३६०

१५०६ ४३, ४६, ७७, १०४, ११९, १५६, २२८, २४३

१५०७ ६४, १४८, १९७, २४८, ३३८

१५०८ ४५, ७४, २५२, २५४, २५६

१५०९ १९, २२

१५१० ४२, ४८, ८१, ८८, १००, १४७, १५७, २२१, ३६५

१५११ १८, ६७, ८६, ९४, ११८, १२१, ३५६

५ गच्छवार अनुक्रमणिका।

६ आचार्य, साधुओं की अनुक्रमणिका ।

---

७ कालक्रमसे आचार्य-मुनियों की गच्छवार अनुक्रमणिका.

१४८८	कार्त्तिक शु० ३ बुध	जयकीर्त्तिसूरि के उपदेश से श्रीसूरि	२३७
१५०१	पौष कृ० ९ शनि	,, ,, ,,	१६
१५०५	माघ शु० १० रवि	जयकेसरसूरि	२०९
१५०७	माघ शु० १३ शुक्र	,,	६४
१५०८	ज्येष्ठ शु० ७ बुध	,,	२५४
१५१७	मार्ग शु० १० सोम	,,	१९५
१५१९	मार्ग शु० ५ शुक्र	,,	२६३
,,	,, ६ शनि	,,	२७२
१५२०	वैशाख शु० ५ बुध	,,	२३९
१५२८	चैत्र कृ० १० गुरु	,,	२६
१५२९	फा० शु० २ शुक्र	,,	१४६
१५३२	वैशाख शु० १० शुक्र	,,	३६१
१५३५	पौष कृ० १२ रवि	,,	६३
१५३६	माघ कृ० ७ सोम	,,	१२०
१५३७	वैशाख शु० १० सोम	,,	१३७
१५३७	ज्येष्ठ शु० २ सोम	,,	१७५
१५४७	वैशाख शु० ३ सोम	सिद्धान्तसागरसूरि	१८९
१५५२	वैशाख कृ० ३ शनि	,,	१९४

(आगमगच्छ)

१४२१	फा० शु० ५ रवि	अमरसिंहसूरि	३०४(अ)
१४७१	वैशाख शु० ३ रवि	,,	७५

(उपकेशगच्छ)

जगदेवसन्तानीय-

(काछोलीगच्छ)

(कृष्णर्षिगच्छ)

(कोरण्टगच्छ)

१४८० फा० शु० १० बुध ककसूरि २०५

(खरतरगच्छ)

१३३४ वैशाख कृ० ५ बुध जिनेश्वरसूरिशिष्य जिन-
प्रबोधसूरि ३३९

१४५० माघ कृ० ९ सोम जिनवल्लभसूरि १३६

१४७९ माघ शु० ४ जिनभद्रसूरि ६६

१४९३ फा० कृ० १ " ७३

१५०५ वैशाख शु० २ बुध " ९७

१५१० आषाढ कृ० १ शुक्र जिनराजसूरिपट्टे
जिनभद्रसूरि ४८

१५१७ चैत्र शु० १५ जिनभद्रसूरिपट्टे जिनचन्द्रसूरि ८४

१५३५ माघ शु० ३ रवि जिनचन्द्रसूरि ७२

(चैत्रगच्छ)

१३०९ माघ कृष्ण २ हरिचन्द्रसूरि १०६

१५११ माघ शु० ५ लक्ष्मीदेवसूरि (धारणपद्रीय) ६७

१५१३ पौष कृ० ५ रवि " " ३, १७

१५२४ चैत्र कृ० ५ " " १५५

१५२८ पौषध कृ० ३ सोम ज्ञानदेवसूरि ३७

१५३८ वैशाख शु० ५ बुध रत्नदेवसूरिपट्टे अमरदेवसूरि २१३

१५८२ वैशाख शु० १० शुक्र विजयदेवसूरि
(धारणपद्रीय) २६७

(जीरापल्लीगच्छ)

१४११ कृ० ६ बुध देवचन्द्रपट्टे जिनचन्द्रपट्टे सागरचन्द्रसूरि ३०९

१४१३ फा० शु० १३ " " " ३१०

१४३५ माघ कृ० १२ सोम वीरसिंहसूरिपट्टे वीरचन्द्रसूरि ९९

१४५३ वैशाख शु० २ सोम वीरचन्द्रसूरिपट्टे शालिभद्रसूरि ६२

१५०८ ज्येष्ठ शु० १० सोम उदयचन्द्रसूरि २५६

१५२७ माघ कृ० ७ रवि उदयचन्द्रपट्टे सागरचन्द्रसूरि १६८

(वृहत्तपागच्छ)

१२२० ज्येष्ठ शु० ९ रवि हेमचन्द्राचार्य ८५

१४८१ वैशाख शु० ३ रत्नाकरसूरिके अनुक्रमसे अभय-
सिंहसूरिपट्टे जयतिलकसूरिपट्टे
रत्नसिंहसूरि २७४, २७५, २७६

१४८३ प्रथम वै० कृ० ७ रवि देवसुन्दरसूरिपट्टे सोम-
सुन्दरसूरि, मुनिसुन्दरसूरि,
जयचन्द्रसूरि ३०५, ३०६

१४८३ वैशाख शु० ७ देव० सोम० भुवनसुंदरसूरि
जिनसुंदरसूरि ३०३(प) ३०४(प)

" " १३ देवसुन्दरसूरिपट्टे सोमसुन्दरसूरि
जयचन्द्रसूरि ३०७

१४८३ भाद्र० कृ० ७ गुरु देवसुन्दरसूरिपट्टे सोमसुन्दर-
सूरि मुनिसुन्दरसूरि २७९
से २८६, २८९

		जयचन्द्रसूरि भुवनसुन्दरसूरि	२९३, ३०८(ब) ३१२
१४८४		सोमसुन्दरसूरि	१६९
१४८७	पौष शु० २ रवि	देवसुंदरसूरिपट्टे सोमसुन्दरसूरि मुनिसुन्दरसूरि जयचन्द्रसूरि जिनचन्द्रसूरि	२७८
१४८९	मार्ग० कृ० ५ गुरु	सोमसुन्दरसूरि	३७३
१४९३		,,	१६३
१५०३	माघ शु० १३	रत्नशेखरसूरि	२१०
१५०७	माघ	सोमसुन्दरसूरि जयचन्द्रसूरि शिष्य रत्नशेखरसूरि	३३८
१५१०	वैशाख शु० ३	रत्नशेखरसूरि	१४७
१५	माघ कृ० २ बुध	जिनसुन्दर (रत्न, चन्द्र)सूरि	१२७
१५१५	ज्येष्ठ कृ० १ शुक्र	रत्नसिंह (शेखर)सूरि	१५४
१५१७	वैशाख शु० ३	रत्नशेखरपट्टे लक्ष्मीसागरसूरि	३०
१५२२	माघ शु० ९ शनि	जिनरत्नसूरि	३५७
१५२३	वैशाख शु० ३	रत्नशेखरपट्टे लक्ष्मीसागरसूरि	३५८
१५२३	वैशाख शु० १३	लक्ष्मीसागरसूरि	१२८, २४२
१५२४	माघ कृ० २	रत्नशेखरपट्टे लक्ष्मीसागरसूरि	९२
१५२५	माघ कृ० ६	लक्ष्मीसागरसूरि	२१४
१५२७	माघ कृ० ५ गुरु	,,	१५१
१५२८	वै० शु० ५ गुरु	ज्ञानसागरसूरि	४९
१५३२	ज्येष्ठ कृ० ३ रवि	लक्ष्मीसागरसूरि	२३६

(सौधर्मबृहत्तपागच्छ)

(थिरापद्रीयगच्छ)

१४७० चैत्र कृ० २ गुरु शान्तिसूरि २०६
१४८३ ज्येष्ठ शु० ९ मंगल शान्तिसूरि २६८
१५०१ पौष कृ० ६ बुध सर्वदेवसूरिपट्टे विजयसिंहसूरि ६५
१५०५ वैशाख शु० ३ शुक्र " " १४२
१५१२ ज्येष्ठ शु० ५ रवि " " २२१
१५१६ पौष कृ० ५ गुरु " " ६१
१५२७ कार्तिक कृ० ५ सोम विजयसिंहसूरिपट्टे शान्तिसूरि १६५
१५३२ वैशाख शु० १३ सोम " " १७२

(धर्मघोषगच्छ)

१३०९ फा० शु० १३ बुध अमरप्रभसूरि शिष्य
ज्ञानचन्द्रसूरि १९९
१४८३ भाद्र० कृ० ७ गुरु मलयचन्द्रसूरिपट्टे
विजयचन्द्रसूरि २९०
१४९३ वैशाख शु० ५ बुध पद्मशेखरसूरिपट्टे ९८
१५१८ फा० कृ० १ सोम पद्मानन्दसूरि २६९
१५२१ ज्येष्ठ शु० ९ सोम " १२३

(नागेन्द्रगच्छ)

१३६९ वैशाख कृ० ८ भुवनानन्दसूरि शिष्य पद्मचन्द्रसूरि ५७
१४२१ वैशाख शु० ५ शनि गुणाकरसूरि ६

१४६५ वैशाख शु० ३ गुरु रत्नसिंहसूरि १८३
१४७२ ज्येष्ठ कृ० ११ सोम ,, २६९
१४८१ पौष कृ० ८ शुक्र पद्मानन्दसूरि २१८
१५०१ पौष कृ० ६ शुक्र पद्मानन्दसूरिपट्टे विजयप्रभसूरि ९६
१५०७ माघ शु० १० सोम ,, ,, १९७
१५१० फा० शु० ३ गुरु गुणसमुद्रसूरि ३६५
१५३३ वैशाख शु० ६ शुक्र गुणदेवसूरि ३९, २१५
१५६० वैशाख शु० ३ बुध सोमरत्नसूरिपट्टे हेमसिंहसूरि १२२
१६१७ ज्येष्ठ शु० ५ धरसंघसूरिपट्टे ज्ञानसागरसूरि २७

(निगमप्रभावक)

१५८१ माघ कृ० १० शुक्र आणन्दसागरसूरि ८०, २४१

(निर्वृतिकुल)

११३० ज्येष्ठ शु० ५ शेखरसूरि ३१८

(पिप्पलगच्छ)

१२९१ माघ शु० ५ गुरु सर्वदेवसूरि ३४
१४१७ वैशाख शु० २ रवि उदयानन्दसूरिपट्टे गुणदेवसूरि १३
१४२२ ज्येष्ठ शु० ५ शुक्र मुनिप्रभसूरि २४५
१४३० माघ कृ० ८ सोम धर्मदेवसूरिसन्ताने प्रीतिसूरि १०५
१४३४ वैशाख कृ० २ बुध मुनिप्रभसूरि १०२
१४३६ वैशाखकृ० ११ मंगल विजयप्रभसूरिपट्टे
उदयानन्दसूरि ११२

१४३७	वैशाखशु० ११ सोम	नय(धर्म)तिलकसूरि	२०२
१४४२	वैशाखकृ० १० रवि	सागरचन्द्रसूरि	१६१
१४७१	माघशु० ३	धर्मप्रभसूरि	१५२
१४८२	वैशाखकृ० ४ गुरु	धर्मप्रभसूरिपट्टे	
		धर्मशेखरसूरि	६०
,,	,, ,,	सागरभद्रसूरि	१६४
१४८४	वैशाखकृ० ११ रवि	धर्मशेखरसूरि	१८६
१४८५	माघशु० १० शनि	धर्मशेखरसूरि	२३०
१४८७	,, ,,	धर्मशेखरसूरि शिष्य देवचन्द्र	३१६
१४८८	ज्येष्ठशु०३ सोम	धर्मशेखरसूरि	५८
१४८९	वैशाखशु० १ सोम	सोमचन्द्रसूरि	१९८
१४९४	श्रावणकृ० ९ रवि	धर्मशेखरसूरि	१९६
१४९६	फा० कृ० ३ रवि	प्र निरत्नसूरि	१८५
१४९९	कार्त्तिककृ० २ रवि	धर्मशे रसूरि	२३८
१४९९	कार्त्तिकशु० १५ गुरु	,,	५०, ७८, १३२, १९०
१५०६	वैशाखशु० ८ रवि	,,	४३, ४६, २२८
१५०६	माघशु० १० शुक्र	धर्मशेखरसूरिपट्टे	
		विजयदेवसूरि	१५६
१५०६	माघशु० १० शुक्र	सोमचन्द्रसूरिपट्टे	
		उदयदेवसूरि	७७
१५०७	वैशाखशु० ११ सोम	चन्द्रप्रभसूरि	२४८
१५०८	चैत्रशु० ५ बुध	समरचन्द्रसूरिपट्टे	
		शुभचन्द्रसूरि	७४

१५०९ माघशु० १० शनि	सोमचन्द्रसूरिपट्टे उदयदेवसूरि	२२
१५१० का० कृ० ४ रवि	क्षेमशेखरसूरि	८१
१५१० (१५१७) पौष कृ० ५ गुरु	धर्मसागरसूरि	५९, १००
१५१० माघशु० ५ रवि	धर्मशेखरसूरि	४२
१५११ ज्येष्ठकृ० ९ रवि	उदयदेवसूरि	११८
१५११ माघशु० ५ गुरु	धर्मशेखरसूरिपट्टे धर्मसुन्दरसूरि	८६
१५१५ वैशाखकृ० २ गुरु	चन्द्रप्रभसूरि	३६
१५१५ वैशाखशु० १३ रवि	विजयदेवसूरि के उप-देश से शालिभद्रसूरि	१४४
१५१६ आषाढशु० १ शुक्र	सोमचन्द्रसूरिपट्टे उदयदेवसूरि	८३
१५१७ वैशाखशु० १२ मंगल	गुणरत्नसूरि	१३०
१५१९ माघकृ० २ शनि	मुनिसुन्दरसूरिपट्टे अमरचन्द्रसूरि	३५
१५२० चैत्रकृ० ५ बुध	धर्मशेखरसूरिपट्टे धर्मसूरि	१४३
१५२४ वैशाखशु० ३ सोम	उदयदेवसूरिपट्टे रत्नदेवसूरि	१४५

१५२७	पौषकृ० ४ गुरु	विजयदेवसूरि शिष्य शालिभद्रसूरि	१३४
१५२८	वैशाखशु० ३ शनि	धर्मसागरसूरि	५, १२
१५३०	कार्त्तिकशु० १२ सोम	मुनिसिंहसूरिपट्टे असरचन्द्रसरि	९०
१५४८	वैशाखकृ० १० रवि	रत्नदेवसूरिपट्टे पद्मानन्दसूरि	१३१
१५५३	वैशाखशु० १३ सोम	पद्मानन्दसूरि	६८
१५६१	माघकृ० ५ शुक्र	धर्मसागरसूरिपट्टे धर्मप्रभसूरि	८९

(पूर्णिमागच्छ)

१४०४	कार्तिककृ० ९ सोम	श्रीसूरि	१७८
१४८५	माघशु० १० शनि	विद्याशेखरसूरि	७०
१४९४	माघशु० ५ सोम	जयप्रभसूरि	२७३
१४९७	वैशाखकृ० ६ शुक्र	जयशेखरसूरि	५४
१५०५	वैशाखकृ० ९ शुक्र	वीरप्रभसूरि	१३९
१५०५	माघशु० ५ रवि	गुणसमुद्रसूरि	३६०
१५०६	चैत्रकृ० ५ गुरु	वीरप्रभसूरि	११९
१५१०	माघशु० १० बुध	साधुरत्नसूरि	२२१
१५११	माघशु० ५ गुरु	राजतिलकसूरि के उपदेश से श्रीसूरि	१८
"	" "	" "	९४
"	" "	" "	१२१

१५११	माघशु० ९ सोम	राजतिलकसूरि	३५६
१५१३	पौषकृ० ३ शुक्र	कमलसूरि	३६३
१५१३	माघकृ० ७ बुध	जयशेखरसूरि	२८
१५१५	ज्येष्ठशु० ९ शुक्र	साधुरत्नसूरि	२
१५१५	आषाढशु० ५	सागरतिलकसूरि	३६८
१५१५	माघशु० १ शुक्र	साधुरत्नसूरि	५६
१५१५	फा० शु० ४ शनि	साधुरत्नसूरिपट्टे	
		साधुसुन्दरसूरि	२६२
१५१६	....	गुणधीरसूरि	३२
१५१६	आषाढशु० ३ रवि	गुणसमुद्रसूरिपट्टे	
		गुणधीरसूरि	१४०
१५१६	माघकृ० ९ सोम	देवचन्द्रसूरि	१४१
१५१७	पौषकृ० ५ गुरु	मुनिसिंहसूरि	९३
१५१७	माघकृ० ८ बुध	गुणसमुद्रसूरिपट्टे	
		पुण्यरत्नसूरि	७१
१५१९	मार्गशु० ४ गुरु	साधुरत्नसूरि	८
१५१९	माघशु० ६ सोम	जयसिंहसूरिपट्टे	
		जयप्रभसूरि	२६१
१५२७	ज्येष्ठशु० १० बुध	पुण्यरत्नसूरि	७९
१५३३	माघशु० १३ सोम	कमलप्रभसूरि	१६८
१५३६	....	पुण्यरत्नसूरि	११
१५३६	फा०शु० ३ सोम	गुणधीरसूरि	९५

१५४३	ज्येष्ठशु० ११	श्रीसूरि,सौभाग्यरत्नसूरि	१२६
१५४५	फा०कृ० २ मंगल	साधुसुन्दरसूरिपट्टे	
		देवसुन्दरसूरि	२१७
१५५२	फा०शु० ३	विजयराजसूरि	१६६
१५५३	आषाढशु० २ शुक्र	चारित्रचन्द्रसूरिपट्टे	
		मुनिचन्द्रसूरि	२६०
१५६३	फा०शु० ८ शनि	सुमतिप्रभसूरि	३१
१५६४	वैशाखशु० ३ गुरु	रत्नशेखरसूरि	२४६
१५७२	वैशा०कृ० ४ रवि	भुवनप्रभसूरि	१०१
१५८०	वैशाखशु० १३ शुक्र	पुण्यरत्नसूरिपट्टे	
		सुमतिरत्नसूरि	२९
१५८२	वैशा०शु० ३	कमलप्रभसूरि	२०७
१५८..	वैशाखकृ० ५	जिनहर्षसूरि	२६७
१६१५	चैत्रकृ० ४ गुरु	वीरप्रभसूरिपट्टे	
		कमलप्रभसूरि	५३
१६२४	शकसं० १४८९	विद्याचन्द्रसूरि	३६२
		सागरचन्द्रसूरिपट्टे	
		सोमचन्द्रसूरि	२२६

(बृहद्गच्छ)

१०११	आषाढशु० ३ शनि	परमानन्दसूरि शिष्य	
		यक्षदेवसूरि	३३१

१४२४ वैशाखकृ० ३ गुरु — दिन्नविजयसूरि — २९२ (अ)
१५०३ ज्येष्ठशु० ९ बुध — पार्श्वचन्द्रसूरि — २१९
१५१३ माघशु० ३ शुक्र — सर्वदेवसूरि — २२०

(ब्रह्माणगच्छ)

१२१७ वैशाखकृ० १ — प्रद्युम्नसूरि — २००
१२४२ चैत्रशु० १५ — ३२८
१३४१ — श्रीधरसूरि — १४९
१३५१ माघकृ० १ सोम — ३२५
१३५१ — ३२६
१३५९ — वीरसूरि — १५८
१३८७ वैशाखशु० २ रवि — जज्जगसूरि — १७९
१४११ ज्येष्ठकृ० ९ शनि — लब्धिसागरसूरि — २२४
१४१२ आश्विनकृ० ४ बुध — विजयसेनसूरिशिष्य रत्नाकरसूरि — ३११
१४२५ वैशाखशु० ११ — बुद्धिसागरसूरि — ३७२
१४८३ ज्येष्ठकृ० ८ रवि — वीरसूरिपट्टे मणिचन्द्रसूरि — २३
१४८६ वैशाखकृ० १ बुध — पुण्यप्रभसूरिपट्टे भद्रेश्वरसूरिपट्टे विजयसेनसूरिपट्टे रत्नाकरसूरिपट्टे हेमविमलसूरि — ३२७
१४८९ वैशाखशु० ३ बुध — क्षमासूरि — १८८

१४९५	आषाढ़शु० ९ रवि	जज्जगसूरिपट्टे पज्जूनसूरि	१४
१५०१	फा०शु० ५ गुरु	पज्जूनसूरि	९१
१५०३	ज्येष्ठकृ० ७	,,	१६०
१५०५	चैत्रकृ० १३ रवि	प्रद्युम्नसूरि (पज्जूनसूरि)	२४
१५०५	वैशाखशु० ३ शुक्र	पज्जूनसूरि	६९
१५०६	माघशु० ५ रवि	,,	२४३
१५०७	फा०कृ० ११ गुरु	मणिचन्द्रसूरि	१४८
१५१३	माघशु० ३ शुक्र	,,	१३३
१५१७	माघशु० १० बुध	पज्जूनसूरि	४४
१५२५	ज्येष्ठशु० ५ सोम	वीरसूरि	८७, २४०
१५२५	फा०शु० ७ शनि	,,	२५
१५२८	वैशाखकृ० ५ गुरु	विमलसूरिपट्टे बुद्धिसागरसूरि	३२२
१५२९	माघशु० १ बुध	,,	१७१
१५३६	पौषकृ० २ बुध	बुद्धिसागरसूरि	१२९
१५६८	माघशु० ५ शुक्र	मुनिचन्द्रसूरि	२३३
१५...	पौषकृ० १० बुध	विमलसूरि	१७७

(भावडारगच्छ)

१३४९	ज्येष्ठशु० २...	विजयसिंहसूरि	२०
१४७९	माघकृ० ७ सोम	विजयसिंहसूरि	११३

१४८५ माघकृ० ९ गुरु विजयसिंहसूरि १७६
१४९९ वैशाखकृ० ४ गुरु वीरसूरि
(कालिकाचार्यसन्तानीय) २५५
१५०३ ज्येष्ठकृ० ३ सोम ,, ,, १५०
१५०३ मार्गकृ० ५ .... ,, ,, १६२
१५१० फा०शु०११ शनि ,, ,, ८८, १५७
१५१२ मार्ग०शु०१५ सोम ,, ,, ९
१५१५ कार्त्तिककृ० १४ शुक्र वीरसूरिपट्टे जिनदेवसूरि १९१
१५१८ फा० शु० ९ सोम भावदेवसूरि २३५
१५३२ ज्येष्ठशु० १३ बुध ,, १२४

(मडाहड़गच्छ)

१३६७ वैशाखशु० ९ चन्द्रसिंहसूरि शिष्य
रविकरसूरि ३३४
१४६२ वैशाखशु० ५ शुक्र हरिभद्रसूरि १०३

(मल्लधारीगच्छ)

१४८३ भाद्र०कृ० ७ गुरु शांतिसागरसूरिपट्टे
विद्यासागरसूरि यशो-
भद्रसूरिसन्तानीय २९२ (ब)
१२१४ फा०शु० ५ प्रीतिसूरि ३२४

(विमलगच्छ)

१५१७ फा०शु० ३ शुक्र धर्मसागरसूरि ३५९

(षंडेरकगच्छ)

१२०४	वैशाखशु० ३ गुरु	शान्तिसूरि	१७३
१४८३	वैशाखशु० ५ गुरु	शान्तिसूरि	२०८

(सरस्वतीगच्छ)

१५१३	वैशाखशु० ३	कुन्दकुन्दाचार्यसन्तानीय सकलकीर्त्तिदेव तत्पट्टे	१७४
१५२०	पौषकृ० ५ शुक्र	विमलेन्द्रकीर्त्तिगुरु	२६४

(सैद्धान्तिकगच्छ)

१५०१	पौषकृ० ६	सोमचन्द्रसूरि	४
१५०१	पौषकृ० ९	"	१५३
१५०८	वैशाखकृ० ४ सोम	"	४५, २५२
१५०९	माघशु० ५ सोम	"	१९
१५१५	वैशाखकृ० २ गुरु	"	२१२

---

८ गच्छ, गच्छ और आचार्य या संवत आदि से अगर्भित लेखों की अनुक्रमणिका।

संवत्		गच्छ और आचार्य	लेखाङ्क
१००१		....	३३३
१०४६	चैत्रकृ० १	....	१८७
१०६३		....	३२३
११४४	ज्येष्ठकृ० ४	देवाचार्य	३२०

११४८	....	१८०
११५९	विजयसेनसूरि	२२७
१२०९	....	२५९
१२४० माघशु० १३	........यशोदेवसूरि	३४९
१२४४ माघशु० १० सोम	........प्रसन्नसूरि	३४५
१२४४ फा०शु० ३ बुध	........मतिप्रभसूरि	२१६
१२६१	....	२०३
१२६३ वैशाखशु० ६ गुरु	देवसूरिशिष्य वयरसेण	५१
१३४४ ज्येष्ठशु० १० बुध	....	३४३, ३४४
१३५७ वैशाखकृ० ५ शुक्र	साधुप्रभसिंह	५५
१३६४ वैशाखशु० १३	महेन्द्रसूरिपट्टे अभयदेवसूरि	१११
१३५९ फा०शु० ५ सोम	........श्रीसूरि	३४६
१३७३ वैशाखशु० ११ शुक्र	........पद्मनन्दी	३२९
१३७७ चैत्रकृ० ८ मंगल	........देवसूरि	१९२
१३९२ वैशाखकृ० ७ शुक्र	देवेन्द्रसूरिपट्टे जिनचन्द्रसूरि	२४९
१३९४ वैशाखशु० ९ बुध	........जयवल्लभसूरि	१९३
१३९९ फा०शु० १३ सोम	....	१०७
१४०६ फा०शु० १० गुरु	........धनेश्वरसूरि	३३०
१४१२ ज्येष्ठशु० १३ गुरु	........माणिक्यसूरि	२०१
१४२५ माघशु० ८	....	३७४

१४२९	माघकृ० ५ सोम	........नरप्रभसूरि	१५
१४३२	फा०शु० २ शुक्र	...........,,	२१
१४३६	वैशाखकृ० ११	........पार्श्वचन्द्रसूरि	१७०
१४४९	वैशाखशु० ६ शुक्र	...........,,	१५९
१४५२	वैशाखशु० ५ गुरु	........पुण्यतिलकसूरि	१८१
१४५३	वैशाखशु० ३ गुरु	धनतिलकसरि	१८४
१४५६	ज्येष्ठशु० १३ गुरु	........रत्नप्रभसूरि	१८२
१४७४	श्रावणशु० ५ शनि	....	२८७
१४८३	भाद्र०कृ० ७ गुरु	....	३१३
१४९२	मार्ग०कृ० १४ रवि	....	३१४
१४९३	फा०शु० १० शुक्र	........श्रीसूरि	२४४
१५०६	वैशाखशु० ६ सोम	....जिनमाणिक्यसूरि	१०४
१५३४	वैशाखकृ० १० रवि (सोम)	........श्रीसूरि	५२
१५३४	,, ,, सोम (रवि)	....	३०२
१५५५	वैशाखशु० ३ शनि	...........,,	२११
१५६५	ज्येष्ठकृ० २	........मुनिमेरु	२२२
१५६७	ज्येष्ठशु० ५ बुध	....	२५८
१५६९	ज्येष्ठशु० ५ बुध	....	२३४
१५७२	कार्त्तिकशु० २ सोम	....	२०४
१५७८	माघकृ० ५ शुक्र	....	११६
१५८४	माघकृ० ११ रवि	....	२३१
१५८७	वैशाखकृ० ७ सोम	........श्रीसूरि	२७०

९ ज्ञाति, गोत्र एवं कुल की अनुक्रमणिका ।

१० ग्राम एवं नगरों की अनुक्रमणिका

११ सांकेतिक काव्यो की समझ ।

ओ°, औ°	औसवाल	भ°	भगवान्, भट्टारक
का°	कारितम्	भट्टा°	भट्टारक
कृ°	कृष्णपक्ष	भण°	भणसाली
ज्ञा°	ज्ञाति, जाति	म°	महाजन
गो°	गोष्ठिक	मह्°	महत्तर, मंत्री
ठ°, ठा°	ठक्कुर, ठाकुर	मं°	मंत्री
दे°	देवी	ल°, लघु°	लघुशाखीय
नि°	निर्मित	व;व्य,व्यव.	व्यवहारी
परि, परी°	परीक्षक गोत्र	वा°	वास्तव्य
पं°	पन्यास	व्या°	व्यापारी
पु°	पुत्र, पुत्री	बृ°	बृहत्
पूर्णि°	पूर्णिमागच्छ	शा°	शाह
प्र°	प्रतिष्ठितम्	शु°	शुक्लपक्ष
प्रा°	प्राग्वाट	श्रे°	श्रेष्ठी, श्रेष्ठि
बि°	बिम्ब	सं°	संघवी, सन्तानीय, संवत्
भं°	भंडारी		

णमोत्थुणं समणस्स सिरिमहावीरवीयरायस्स ।

श्री धातुप्रतिमा लेखसंग्रहः ।

(ऐतिहासिक)

थरादचैत्यप्रतिमालेखाः–

वीरचैत्यान्तर्गत–वासुपूज्यचैत्ये धातुमूर्त्तयः ।

(१)

संवत् १५०५ वर्षे माघशु० ९ शनौ श्रीमालज्ञातीय व्य० परवत भार्या खीमलदे सुता मांजूदेव्या आत्मश्रेयसे श्रीसुविधिनाथबिम्बं कारितं, श्रीआगमगच्छे श्रीहेमरतनसूरिगुरूपदेशेन प्रतिष्ठितं धंधुकावास्तव्ये ।

(२)

सं० १५१५ वर्षे ज्येष्ठसुदि ९ शुक्रे श्रीमालज्ञातीय गूंजरवाडावास्तव्य व्य० जेसा भा०जानू सुत

मूलाकेन श्रीसुविधिनाथबिम्बं का०, प्र० श्रीपूर्णिमासाधुरत्नसूरीणामुपदेशेन विधिना।

(३)

सं० १५१३ वर्षे पौषवदि ५ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० महा० धना सारंग गेला धर्मा राजा दूदा नारद समस्तकुटुंबैः पूर्वजसांगानिमित्तं श्रीअजितनाथबिम्बं का०, प्र० भ० श्रीलक्ष्मीदेवसूरिभिः।

(४)

सं १५०१ वर्षे पौषवदि ६ श्रीश्रीमालज्ञातीय मं० संताने पिता से० जेसिंग माता बाईपत्रापदी, भा० राजूसुतेन मातापिताश्रेयसे श्रीकुन्थुनाथबिम्बं कारापितं प्रति० सिद्धांती श्रीसोमचन्द्रसूरिभिर्गृहे सर्वत्र सौभाग्यं भवतु।

(५)

सं० १५२८ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० वापा भा० रतनू सुत वणवीरेण भा० शाणी पितृमातृपितृव्यनिमित्तं आत्मश्रेयसे च श्रीविमलनाथबिंबं का०, प्र० पिप्पल० त्रिभविया भ० श्रीधर्मसागरसूरिभिः भोअलीवास्तव्य।

(६)

सं० १४२१ वर्षे वैशाख सु० ५ शनौ श्रीमाल-पितृजयता मातृजयतलदे पितृव्य कर्मणश्रेयोर्थं सुतहेलाकेन पार्श्वनाथबिंबं का०, प्र० नागेन्द्रगच्छे श्रीगुणाकरसूरिभिः।

(७)

सं० १४३३ वर्षे वैशाख शु० ९ शनौ दिने श्रीकोरंटगच्छे श्रीनन्नाचार्यसंताने उपकेशज्ञातौ भंड पुत्रशाखायां महिमदेव भा० मंदोदरी पुत्र नरश्रेष्ठिना पितृमातृश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीभावदेवसूरिभिः।

(८)

सं० १५१९ वर्षे मार्गशिर सुदि ४ गुरौ श्रीमा-लज्ञा० लघुसंतानीय व्य० जेसा भा० हरखू पुत्र व्य० राजाकेन भार्या भवकुयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमापक्षे श्रीसाधुरत्नसूरीणामुपदेशेन। शुभं भवतु श्रीः।

(९)

सं० १५१२ वर्षे मार्गशिर सुदि १५ सोमे श्री भावडारगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० पदमा भार्या

पाल्हदे पु० माला भा० माल्हणपदे पु० रतना पर्वत संघा मोकल देवा जाणा सहितेन व्यव० मालाकेन पितामहभ्रातृ व्य० घडसी निमित्तं श्रीसुमतिनाथ-बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीकालिकाचार्यसं० पूज्य श्रीवीरसूरिभिः ।

(१०)

सं० १५८३ वर्षे ज्येष्ठ सु० ११ शुक्रे उएस० श्री ककुदाचार्यसंताने उए० ज्ञा० श्रेष्ठिगोत्रे सा० मह-ताजू पुत्र सलखण भार्या पूंजरी पुत्र हरिराजेन भा० हेमादे पु० भीमराजसहितेन श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्र० श्रीयक्षदेवसूरिभिः ।

(११)

सं० १५३६ वर्षे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० नाथा भा० धर्मिणी पु० रलामण भा० गूरी, शिवदत्तेन भा० कुअरी प्रभृति कुटुंबयुतेन स्वभ्रातृश्रेयसे श्री-आदिनाथबिंबं श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीपुण्यरत्नसूरीणामु-पदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना काकरग्रामे ।

(१२)

सं० १५२८ वर्षे वैशाख शु० ३ शनौ श्रीश्री-मालज्ञा० व्य० ऊदिरा भा० फदू सु० भोटाकेन

पितृमातृपितृव्यवापानिमित्तं आत्मश्रेयसे च श्री शांतिनाथबिंबं का०, प्र० पिप्पलगच्छे त्रिभविया भट्टा० श्रीधर्मसागरसूरिभिः भोयलीग्रामे।

(१३)

सं० १४१७ वर्षे वैशाख सुदि २ रवौ श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्यव० लींबा भार्या नामलदे सुत सहजा-केन भा० सहजलदे पितृ लींबाश्रेयसे श्रीवासुपूज्य-बिंबं कारापितं प्र० श्रीपिप्पलगच्छे श्रीउदयानंद-सूरिपट्टे श्रीगुणदेवसूरिभिः। श्रीः।

(१४)

सं० १४९५ वर्षे आषाढसुदि ९ रवौ श्रीब्रह्माण-गच्छे श्रीश्रीमा० व्य० गोरा भा० देल्हणदे सुत भा० रमल भार्या पोमादे सुत डूंगर भाखराभ्यां पित्रोः श्रेयसे श्रीधर्मनाथबिंबं का०, प्र० श्रीजज्जग-सूरिपट्टे श्रीपज्जुन्नसूरिभिः।

(१५)

सं० १४२९ वर्षे माघवदि ५ सोमे श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० अभयसिंह भा० आल्हणदेव्या पितृव्य-कमा श्रीमूलराजपार्श्वश्रेयस्करबिंबं का० श्रीनरप्रभ-सूरीणामुपदेशेन।

(१६)

सं० १५०१ वर्षे पौषवदि ९ शनौ श्रीअंचल-गच्छेश श्रीजयकीर्त्तिसूरीणामुपदेशेन सा० कालू-पत्नी कमलादे सुत सा० हरिसेनेन पत्नी माल्ह-णदेश्रेयोर्थं श्रीअजितनाथबिंबं कारितं श्रीसंघ-प्रतिष्ठितं च ।

(१७)

सं० १५१३ वर्षे पौषवदि ५ रवौ श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० तिहुअण भा० कर्मादे सुत डाहाकेन भा० धारणापद्री मेचू सुत भाखरसहितैर्मातृपितृ-श्रेयसे श्रीअजितनाथबिंबं का०, प्र० चैत्रगच्छीय भ० श्रीलक्ष्मीदेवसूरिभिः वाविग्रामवास्तव्यः ।

(१८)

सं० १५११ वर्षे माघशु० ५ सोमे श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० वानरसुत जोधराज भा० रतूदेव्या पतिनिमित्तं आत्मश्रेयसे श्रीकुन्थुनाथजीवितस्वा-मिबिंबं का०, प्र० श्रीराजतिलकसूरीणामुपदेशेन श्रीसूरिभिः ।

---

१ लेखाङ्क ९४, १२१, ३५६ को देखते हुए लेखाङ्क १८ में सोमे के स्थान में गुरौ चाहिये ।

(१९)

संवत् १५०९ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० सोनमलेन भा० राजी, स्वभ्रातृ वदा भार्या पूरी निमित्तं श्रीसुमतिनाथबिंबं कारितं सिद्धांतीगच्छे सोमचंद्रसूरिप्रतिष्ठितं ।

(२०)

सं० १३४९ ज्येष्ठ शु० २ श्रीभावडारगच्छे सा० सोभा भार्या सोमश्री पुत्र छाडा-नागा-गयवरैः स्वमातृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीविजयसिंहसूरिभिः ।

(२१)

सं० १४३२ वर्षे फा० सु० २ शुक्रे श्रीश्रीमाल-ज्ञा० व्य० वागा भार्या विजयश्रीश्रेयसे पुत्र विजय-कर्णेन श्रीवासुपूज्यबिंबं कारितं श्रीनरप्रभसूरीणा-मुपदेशेन ।

(२२)

सं० १५०९ वर्षे माघ सुदि १० शनौ श्रीश्रीमाल-ज्ञा० पितामह हापा पितामही हांसलदे सुत चूंडा भा० चांपलदे सुत देवाकेन भार्यालूणादे सहितेन पि० भा० पितृव्य चांपा हेमा भ्राता वीजा सर्वपूर्वज-

निमित्तं श्रीशीतलनाथचतुर्विंशतिका पट्टः का०, प्र० पिप्पलगच्छे श्रीसोमचंद्रसूरिपट्टे श्रीउदयदेव-सूरिभिः थिरापद्रवास्तव्यः।

वीरप्रभुचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

(२३)

संवत् १४८३ वर्षे ज्येष्ठ वदि ८ रवौ श्रीश्रीमाल० व्यव० सिंबा भा० लखमादे पुत्र सलखा भा० प्रीमलदे पुत्र गोला लींबा सींहाख्यैः पितृमातृ-श्रेयोर्थं श्रीनेमिनाथबिंबं का०, प्र० ब्रह्माणगच्छे श्रीवीरसूरिपट्टे श्रीमणिचन्द्रसूरिभिः।

(२४)

सं० १५०५ चैत्र वदि १३ रवौ राथरवास्तव्य श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमाल० व्य० वाघणसुत मेघा भा० प्रीमलदे सुत क्षीमा गोसल देसल गोसल भा० सिंगारदे सुत वडुआ कर्मसिंहाभ्यां पित्रोः श्रेयसे श्रीविमलनाथचतुर्विंशतिपट्टः का०, प्र० श्रीप्रद्युम्न-(पज्जून)सूरिभिः।

(२५)

संवत् १५२५ वर्षे फा० शु० ७ शनौ श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय साहु रामा श्रे० कुंभा भा० कसमीरश्री

सुन लापाकेन भा० फली सुत धन्ना भा० झावली पांची सुत मेहादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीशांति-नाथचतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्रतिष्ठितः ब्रह्माणगच्छे श्रीवीरसूरिभिः शुभं भवतु तइडवाडावास्तव्य।

(२६)

संवत् १५२८ वर्षे चैत्र वदि १० गुरौ श्रीश्रीवंशे मं० सांगा भार्या टीबूपुत्र मं० रत्ना सुश्रावकेण भा० धारिणी पुत्र वीरा हीरा नीना बाबा सहितेन पितृव्य मं० सहसा पुण्यार्थं श्रीअंचलगच्छ गुरु श्रीजयकेसरिसूरिरुप० श्रीसुविधिनाथबिंबं का० प्र० श्रीसंघेन श्रीः।

(२७)

संवत् १६१७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ दिने काकर-वास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० नवा भा० बाई धनीसुत श्रे० धरणा भार्या प्रोमीसुत जेसा रत-नाभ्यां श्रीविमलनाथस्य बिंबं कारापितं श्रीनागे-न्द्रगच्छभट्टारक श्रीधरसंघसूरि तत्पट्टे भट्टारक श्रीज्ञानसूरिभिः।

(२८)

सं० १५१२ वर्षे माघवदि ७ बुधे प्रा० ज्ञा० लघुसं० परी० वाला भा० डाहीसुत भोजाकेन

भा० लाछी पुत्र नाथा साजन सहितेन पितृमातृश्रे० श्रीशांतिनाथबिंबं का०, प्र० पूर्णिमा० क्षीमाणिया भ० श्रीजयशेखरसूरीणामुपदेशेन लायताग्रामे।

(२९)

* सं १५८० वर्षे वैशाखवदि १३ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० मं० हीरा भार्या राखीसुत महं० हेमा भा० हमीरदे सु० मं तेजाकेन भा० नीतिसुत-डूंगर-सूंगर-भाणायुतेन स्वश्रेयसे श्रीसुपार्श्वनाथ-बिंबं श्रीपू० श्रीपुण्यरत्नसूरिपट्टे श्रीसुमतिरत्नसूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं विधिसंयुक्तं।

(३०)

सं० १५१७ वर्षे वै० शु० ३ प्राग्वाट व्य० कूंपा भा० रूडीसुत देवसी भा० वाल्हीसुत देपालेन भांडादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंबं का०, प्र० तपाश्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः कालुआवासी श्रीः।

(३१)

सं १५६३ वर्षे फा० सु० ८ शनौ श्रीश्रीमाल-

---

*जैनधातुप्रतिमा लेखसंग्रह द्वि. भाग का लेखाङ्क ८९५ और यह दोनों एक ही हैं।

ज्ञातीय आजूसखा व्यव० मेघासुत आशा भार्या अमरी नाम्न्या आत्मश्रेयसे जीवितस्वामि-श्रीचंद्र-प्रभस्वामिबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं भ० सुमति-प्रभसूरिभिः, थिरापद्रनगरवास्तव्य पूर्णिमापक्षे ।

(३२)

* सं० १५१६ वर्षे सं० गेलाकेन सपरिवारेण (पूर्णिमापक्षे) श्रीगणधीरसूरीणामुपदेशेन श्रीगौतम मूर्त्तिः कारापिता ।

(३३)

सं० १६५१ वर्षे फाल्गुन वदि १० शनौ श्री-थिराद्रवास्तव्येन श्रीमुनिसुव्रतबिंबं प्रतिष्ठितं ।

वीरचैत्ये प्रस्तरमय कायोत्सर्गमूर्त्ति—

(३४)

संवत् १२९१ वर्षे माघ सुदि ५ गुरौ पिप्पल-पक्षगच्छे वीरसुत झांझणेन तथा सुत नेनक नेढक ब्रह्मा केशु तथा आम्रदेवेन श्रीरिषभदेवचैत्ये जिन-युग्मद्वयं कारितं, वला० अभयकुमारकुटुंबसमुदायेन जीर्णोद्धारः कारितः प्रतिष्ठितं श्रीसर्वदेवसूरिभिः ।

* लेखांक १४०-४१ के अनुसार ये आचार्य पूर्णिमा पक्षीय हैं.

वीरचैत्यान्तर्गत आदीश्वरचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

(३५)

सं० १५१९ वर्षे माघव० द्वितीया शनौ श्रीश्री-मालज्ञातीय श्रे० लापा भा० लाछनदे पुत्र वस्ता, हला, भा० हमीरदे सुत वेला गेलाकेन वेलाभा० वय-जलदेयुतेन पितृमा तृभ्रातृस्वपूर्वजनिमि०श्रीशीतल-नाथ चतु० पट्टः का०, प्र० पिप्पलगच्छे श्रीमुनि-सिंहसूरिपट्टे श्रीअमरचन्द्रसूरिभिः कोहरवास्तव्यः।

(३६)

संवत् १५१५ वर्षे वैशाखवदि २ गुरौ श्रीश्री-मालज्ञातीय परी० खेता भा० खेतलदे पु० ईसर भा० राजलदे पु० मोकल भा० महिंगलदेव्या पु० वऊलासहितेन पित्रोर्निमित्तं स्वश्रेयोर्थं च जीवित-स्वामी श्रीआदिनाथचतुर्विंशतिपट्टः का०, प्र० श्रीपिप्पलगच्छे श्रीचन्द्रप्रभसूरिभिः श्रीसत्यपुर-वास्तव्यः श्रीः।

(३७)

संवत् १५२८ वर्षे पौष वदि ३ सोमे श्रीश्री-मालज्ञातीय भंडारी भोला भा० वाल्हीदेव्या स्व-पुण्यार्थं जीवितस्वामी श्रीविमलनाथबिंबं कारितं

प्रतिष्ठितं चैत्रगच्छे धारणपद्रीय भट्टारक श्रीज्ञानदेवसूरिभिः, काकरवास्तव्यः।

(३८)

(सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ शु० १० दिने प्राग्वाट व्य० गोपाल भा० लखीसुत व्य० लाखा भा० कीमी प्रमुखयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीशांतिजिनबिंबं कारितं प्र० तपा श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्री रत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः।

(३९)

सं० १५३३ वर्षे वैशाख शु० ६ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० कर्मसी भा० लाछु सु० श्रे० मामाकेन भा० देवलीसहितेन पितृमातृनिमित्तं आत्मश्रेयसे श्रीसुविधिनाथबिंबं का०, प्र० नागेंद्रगच्छे भ० श्रीगुण देवसूरिभिः थराद्दनगरे।

(४०)

सं० १५२२ वर्षे पौष वदि १ गुरौ उपकेशज्ञातौ श्रेष्ठिगोत्रे म० मोखापुत्र म० धन्नाकेन भा० साल्ही-केन च महाजनीखीदापुण्यार्थं श्रीशीतलनाथबिंबं कारितं प्र० श्रीउपकेशगच्छे श्रीकक्कुदाचार्यसंताने श्रीकक्कसूरिभिः पारकरनगरे।

(४१)

सं० १७५७ वर्षे माघसुदि ५ दिने श्रीथिरापद्र वास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञातीय वृद्धशाखायां वो० देवराजेन भा० मानी सुत वो० वासा सांकला सुत भोजराजादि सहितेन [स्व] पुण्यार्थं श्रीसंभवनाथबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे भ० श्रीविजयप्रभसूरिपट्टे संविज्ञपक्षे भ० श्रीज्ञानविमलसूरिभिः।

(४२)

सं० १५१० वर्षे माघसुदि ५ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय पितृभोला मातृभावदेवि सुत लूणसिंहेन भ्रातृ हेमला निमित्तं निजकुटुंबश्रेयसे श्रीशांतिनाथपंचतीर्थीका०, प्रति० पिप्पलगच्छे त्रिभवियागच्छनायक श्रीधर्मशेखरसूरिभिः थिरपद्रपुरे श्रीः।

(४३)

सं० १५०६ वर्षे वैशाखसुदि ८ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय व्यव० भोला सुत सं० लूणसी भा० लूणादेव्या आत्मश्रेयसे जीवितस्वामी श्रीश्रेयांसनाथपंचतीर्थीबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीपिप्पलगच्छे त्रिभ० भ० श्रीधर्मशेखरसूरिभिः थारापद्रवास्तव्यः।

(४४)

सं० १५१७ वर्षे माघसुदि १० बुधे श्रीब्रह्माण-

गच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्यव० सादूल सुत भारमलेन भा० कपूरदे सुत डाहा वेला मातृपितृश्रेयसे श्रीअजितनाथबिंबं कारितं प्र० शीपज्जूनसूरिभिः महंडकाग्रामे।

(४५)

सं० १५०८ वर्षे वैशाखवदि ४ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० नयणेन भा० टहिकु सु० लाखा हेमा दूदादि कुटुंबयुतेन पितृव्यकतुहणा भा० हांसू श्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का०, सिद्धांतीगच्छे श्री सोमचंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं। शुभं भवतु श्रीः।

(४६)

सं० १५०६ वर्षे वैशाखवदि ८ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय व्यव० वरसिंघ भा० तिलुश्रिया आत्मश्रेयोर्थं जीवितस्वामी श्रीश्रेयांसनाथबिंबं कारा०, प्रति० श्रीपिप्पलगच्छे त्रिभविया श्रीधर्मशेखरसूरिभिः।

(४७)

सं० १६१८ वर्षे माघसुदि १३ प्राग्वाट सोनी सामा पुत्री सोनीदेव्या श्री आदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीविजयदानसूरिभिः।

(४८)

संवत् १५१० वर्षे आषाढवदि १ शुक्रे उपकेश-वंशे भण० गोत्रे म० माला भा० माल्हणदे पु० कावाश्रावकेन बंधव गुणिया डूंगर पुत्र मदा वदा राजा प्रमुखपरिवारयुतेन श्रीशांतिनाथबिंबं स्व-पुण्यार्थं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिन-राजसूरिपट्टे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ।

(४९)

सं० १५२८ वर्षे वैशाखसुदि ५ गुरौ श्रीप्राग्वाट ज्ञा० स० काला भा० माल्हणदे सुत सं० रत्ना भा० लाबू सं० भीमाकेन भा० देमति सु० कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीसुविधिनाथबिंबं कारितं श्रीवृहत्त-पापक्षे श्रीज्ञानसागरसूरिभिः ।

(५०)

संवत् १४९९ वर्षे कार्त्तिकसुदि १५ गुरौ श्रीश्री-मालज्ञातीय व्यव० खीदा भा० काउं पुत्र धीरा केन आत्मश्रेयोर्थं श्रीशीतनाथबिंबं कारितं, प्र० पिप्पल० त्रिभवीया भ० श्रीश्रीधर्मशेखरसूरिभिः श्रीथिरापद्रे ।

(५१)

सं० १२६३ वर्षे वैशाखसुदि ६ गुरौ सा० टीला

(८१)

सुत सा० लूणेन मातृपितृश्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथ-प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्रीदेवसूरिशिष्य श्री वयरसेणसूरिभिः।

(५२)

सं० १५३४ वर्षे वै० व० १० रवौ[1] (सोमे) प्राग्वाट व्य० सेला भा० तेजू पुत्र अजा भा० वमी पु० नर-पालेन पितृव्य व्य० वाछा डाहा पांचादि कुटुंबयुतेन श्रीश्रेयांसनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः डीसामहास्थाने।

(५३)

सं० १६१५ चैत्रवदि ४ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय महाजनी सोमा भार्या झमकलदे द्वितीया मिरगादे सुत वाछाकेन मातृपितृपितृव्यनिमित्तं आत्मश्रेयोर्थं श्रीचंद्रप्रभबिंबं कारापितं श्रीपूर्णि० श्रीवीरप्रभसूरि-पट्टे श्रीकमलप्रभसूरिभिः प्रतिष्ठितं विधिभिः।

(५४)

सं० १४९७ वर्षे वैशाखवदि ६ शुक्रे वडली-वास्तव्य डीसावालज्ञातीय श्रे० कउझा भा० मांकू

१ ले. ३०२ में सोमवार लिखा है।

पुत्र समधरेण भा० लाछीयुतेन पितृश्रेयोर्थं श्रीसु-
पार्श्वबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीपूर्णिमापक्षीय क्षीमा-
णिया श्रीजयशेखरसूरीणामुपदेशेन ।

(५५)

सं० १३४७ वैशाख वदि ५ शुक्रे श्रीमन्मंडला-
[क्रेन] गुरूपदेशेन साधुप्रभसिंहमुनिकारितेन बिंबं।

(५६)

सं० १५१५ वर्षे माघशुदि १ शुक्रे श्रीश्रीमाल-
ज्ञातीय पितृदेपाल भा० धापुश्रेयोर्थं सु० खीमा
खेताभ्यां श्रीनमिनाथबिंबं कारितं श्रीपूर्णिमापक्षीय
श्रीसाधुरत्नसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन
इडिवास्तव्यः ।

(५७)

सं० १३६९ वर्षे वैशाखवदि ८ श्रीश्रीमालज्ञातीय
परी० भंडाश्रेयोर्थं सुत पांताकेन श्रीचतुर्विंशति-
तीर्थंकराणां बिंबं कारितं प्रति० श्रीनागेंद्रगच्छे
श्रीभुवनानंदसूरिशिष्य श्रीपद्मचंद्रसूरिभिः ।

(५८)

सं० १४८८ ज्येष्ठशु० २ सोमे श्रीमालज्ञातीय
माहणसी जइता भा० जइतलदे पु० वीरधवल हरि-

धवल विक्रमैरेकमतीभूय मातृपितृजस्वश्रेयसे श्री विमलनाथचतुर्विंशतिपट्टः का०, प्र० त्रिभविया- पिष्पलाचार्य श्रीधर्मशेखरसूरिभिः।

(५९)

सं० १५१७ वर्षे पौषवदि ५ गुरौ श्रीश्रीमाल- ज्ञातीय व्यव० माहणसुत व्य० सूरा भा० सुहवदे सुत व्य० रूदा राणाभ्यां आत्मश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथ- चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रति० श्रीपिष्पलगच्छे त्रिभविया भट्टा० श्रीधर्मसागरसूरिभिः थारापद्रवा- स्तव्यः शांतिवर्धनार्थं सर्वेषां पूर्वपुरुषाणां भवतु।

(६०)

सं० १४८२ वर्षे वैशाखवदि ४ गुरौ श्रीश्रीमाल- ज्ञातीय व्य० ऊदिर भा० हांसलदे सुत भोला भा० भावलदे सु० नेमा-लूणा-सिंहाभ्यां मातृपितृ तथा भ्रातृ हेमला श्रे० चतुर्विंशतिपट्टः श्रीअजितनाथस्य का०, प्र० पिष्पलगच्छे त्रिभवीया श्रीधर्मप्रभसूरि- पट्टे श्रीधर्मशेखरसूरिभिः, शुभं।

(६१)

सं० १५१६ वर्षे पौषवदि ५ गुरौ थिरापद्रगच्छे

---

१ ले. ५१ और १०० एक ही कुल के लेख हैं।

श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० सूरा भा० श्रियादे सुत वीसलेन भा० नीनादे सुत धीरा काला कुटुंब-युतेन स्वमातृपितृश्रे० श्रीश्रेयांसनाथचतुर्विंशति-पट्टः का० प्रतिष्ठितं श्रीविजयसिंहसूरिभिः थिरा-पद्रवास्तव्यः । श्री श्रीः ।

(६२)

सं० १४५३ वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे २ सोमे उएशवंशे महं० माहण भार्या आल्हणदे सुत लूणा वाछा वइरमल केल्हा प्रभृति भ्रातृसमुदायेन निजमातृभ्रातृसर्वजननिमित्तं चतुर्विंशतिजिनपट्टः कारापितः, प्रतिष्ठितः श्रीजीराउलीपुरीयगच्छे श्री-वीरचन्द्रसूरिपट्टे श्रीशालिभद्रसूरिभिः । श्रीसंघस्य शुभं भवतु ।

(६३)

संवत् १५३५ वर्षे पौषवदि १२ रवौ श्रीउएस-वंशे श्रे० हीरा भा० हीरादे पुत्र श्रे० पासासुश्राव-केण भा० पूनादे पुत्र खीमा भूता देवा सहितैः स्वश्रेयोर्थं श्रीअंचलगच्छे श्रीजयकेसरसूरीणामुपदे-शेन श्रीसंभवनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन वागूडीग्रामे ।

(६४)

सं० १५०७ वर्षे माघसुदि १३ शुक्रे वीरवंशे सं० लीबा भार्या मोटी पुत्र सं० नारदसुश्राव-केण भा० जयरू सहितेन श्रीअंचलगच्छेश श्री-जयकेसरिसूरीणामुपदेशात् श्रीधर्मनाथबिंबं पितुः श्रेयसे कारितं श्रीसंघेन च प्रतिष्ठितं श्रीर्भवतु पूज्यमानं विजयतां।

(६५)

सं० १५०१ वर्षे पौषवदि ६ बुधे गोत्रजा बाराही श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० सहिपाल सुत व्य० सिंहा भा० सुहवदे सुत नाथा राउल धरणाकेन स्वमातृ-श्रेयोर्थं श्रीश्रेयांसनाथबिंबं कारापितं प्रति० थारा-पद्रगच्छे श्रीसर्वदेवसूरिपट्टे श्रीविजयसिंहसूरिभिः।

(६६)

सं० १४७९ वर्षे भा० सु० ४ काकसवंशे वोहरा-शाखीय सा० राणिगसिंघ पुत्र गांगा भा० महंघलदे सुत सांवलाकेन पुत्र वस्ता तेजा सहितेन भा० खेतलदे वल्लालदे श्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्रति० खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः।

(६७)

सं० १५११ वर्षे माघसुदि ५ श्रीश्रीमालज्ञातीय

व्य० सांडासुत अदऊ भा० गेलीसुत हरराजेन भा० बाऊसहितेन स्वपितृश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं चैत्रगच्छे धारणपद्रीय श्रीलक्ष्मी-देवसूरिभिः।

(६८)

सं० १५५३ वर्षे वैशाखसुदि १३ सोमे श्रीश्री-माल० व्य० मना भा० डाही सुत रहिआकेन भा० रंगीसहि० पितृमातृपितृव्यभ्रातनि० आत्मश्रे० श्री-सुमतिनाथबिंबं का०, प्र० पिप्पलगच्छे श्रीपद्मा-नंदसूरिभिर्वाविवास्तव्यः।

(६९)

सं० १५०५ वर्षे वैशाखसुदि ३ शुक्रे श्रीब्रह्माण-गच्छे श्रीश्रीमाल० व्य० मेघा सुत गोसलेन भा० सिणगारदे सुत कर्मसीसहितेन पितृदेसल मातृमहं-गदे निमित्तं श्रीनमिनाथबिंबं का०, प्र० श्रीपज्जुन्न-सूरिभिः।

(७०)

सं० १४८५ माघसुदि १० शनौ श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय मं० ठाकुरसी भा० झनकु पुत्र मं० काला-केन पित्रोः श्रेयसे श्रीपद्मप्रभबिंबं का०, प्रति०

पूर्णिमापक्षे श्रीविद्याशेखरसूरीणामुपदेशेन विधिना श्रेयः शुभं।

(७१)

सं० १५१७ वर्षे माघवदि ८ बुधे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० वीरा भा० शाणी सुत जोगाकेन भा० मानू सु० महीराज कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीनमिनाथबिंबं श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीगुणसमुद्रसूरिपट्टे श्रीपुण्यरत्नसूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना दोलावाड़ाग्रामे।

(७२)

सं० १५३५ वर्षे माघसुदि ३ रवौ श्रीउकेशवंशे रायथला सेठियागोत्रे धरणा पुत्र वेलाकेन भा० विमलादे पुत्र खेमागेलागजादिनि० श्रीनमिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतरगच्छे श्रीजिनचंद्रसूरिभि। श्रीः।

(७३)

सं० १४९३ वर्षे फागुणवदि १ दिने उकेशवंशे नवलक्षशाखायां सा० पाल्हा पुत्र सा० पीचा फमणश्रावकाभ्यां श्रीआदिनाथबिंबं का०, प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः।

(७४)

सं० १५०८ वर्षे चैत्रसुदि ५ बुधे श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय प्रपिता पेथा प्रपि० प्रथमादे पि० नींबा पिता कमांदे पितृ मेघउ भा० आशादे सुत परखा लल्लुभ्यां पूर्वजश्रे० मातृपितृश्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथ-चतुर्विंशतिपट्टबिंबं का०, प्र० पिप्पलगच्छे श्री-समरचंद्रसूरिपट्टे श्रीशुभचंद्रसूरिभिः । कावेयरि-वास्तव्यः ।

(७५)

सं० १४७१ वर्षे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० केरहुआ भा० मंजु सुत वालइ[केन]भ्रातृलालाश्रेयोर्थं चतु-र्विंशतिपट्टः कारितः श्रीआगमगच्छे श्रीअमरसिंह-सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना ।

(७६)

सं० ....६५ वर्षे माघसुदि १२ शुक्रे माद्रीपुर-वास्तव्य श्रीप्राग्वाटज्ञातीय व्य० जेसाश्रेयोर्थं सुत पूनाकेन श्रीशांतिनाथबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री-सूरिभिः ।

(७७)

सं० १५०६ वर्षे माघशुदि १० शुक्रे श्रीश्रीमाल-

ज्ञा० श्रे० चूणा भा० वापलदे सुत देवाकेन मातृपितृ श्रे० श्रीजिवीतस्वामी श्रीशीतलनाथबिंबं का०, प्र० पिप्पलगच्छे श्रीसोमचंद्रसूरिपट्टे श्रीउदयदेवसूरिभिः पडधलिया ग्रामे।

(७८)

सं० १४९९ वर्षे कार्त्तिकसुदि ५ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० मांडण भा० माह्णदे पुत्र ववा-वरड़ाकेन भ्रातृकर्मा, राघवनिमित्तं श्रीचंद्रप्रभस्वामिबिंबं कारितं प्र० पिप्पलत्रिभविया भट्टारकश्रीधर्मशेखरसूरिभिः।

(७९)

सं० १५२७ वर्षे ज्येष्ठसुदि १० बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० संदा सुत श्रे० सूराकेन सुत देवा पोपट प्रभृति कुटुंबयुतेन भार्या बागूश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं पूर्णिमापक्षे श्रीपुण्यरत्नसूरीणामुपदेशेन का०, प्र० विधिना श्रेयोर्थं।

(८०)

सं० १५८१ वर्षे माघवदि १० शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय वृद्धशाखायां मं० लाला[केन]भा० लीलादे

१ ले० ५०, १९० के अनुसार १५ पूर्णिमा होना चाहिए।

सुत आशा भा० ऊमादे सुत लाखा हीरा कुटुंब-युतेन श्रीनिगमप्रभावक श्रीआनंदसागरसूरिभिः श्रीशांतिनाथबिंबं प्रतिष्ठितं कारितं च ।

(८१)

सं० १५१० वर्षे कार्तिकवदि ४ रवौ श्रीश्रीमाल-ज्ञा० व्य० लूणसिंह भा० लूणादेवि सु० संग्रामसी [हेन]भा०वल्हादेविश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पिप्पलगच्छे त्रिभविया श्रीक्षेमशेखर-सूरिभिः श्रीथिरापद्रे ।

(८२)

सं० १५२९ वर्षे ज्येष्ठवदि १ शुक्रे श्रीश्रीमाल-ज्ञा० श्रे० धना भा० धांधलदे सुत पेमाकेन भा० आसू सुत चांपायुतेन पितृव्यश्रेयसे श्रीपद्मप्रभादि-पंचतीर्थी आगमगच्छे श्रीअमररत्नसूरिणामुपदेशेन कारापिता प्रतिष्ठिता विराणपुरवास्तव्यः ।

(८३)

सं० १५१६ वर्षे आषाढसुदि १ शुक्रे श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० कान्हा भा० कमलादे सु० गुहिमा-सूराभ्यां पितृमातृनिमित्तं आत्मश्रेयसे श्रीनमि-नाथबिंबं का० प्रतिष्ठितं पिप्पलगच्छे श्रीसोमचंद्र-सूरिपट्टे श्रीउदयदेवसूरिभिः ।

(८४)

सं० १५१७ वर्षे चैत्रसुदिपूर्णिमायां श्रीमालज्ञातीय खेडरियागोत्रे सं० कानू पुत्र सं० रणवीर श्रावकेन भा०हरखूश्राविका पुन्यार्थं श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिपट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः।

(८५)

सं० १२२० ज्येष्ठसुदि ९ रवौ श्रियाहठेन श्रीपार्श्वनाथप्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता प्रभुहेमचंद्रसूरिभिः।

(८६)

सं० १५११ वर्षे माघसुदि ५ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० सायर भा० संसारदे सुत व्य० कुरसी भा० नयणादे सुत व्य० जेसिंगेन श्रीधर्मनाथबिंबं का०,प्रति० पिप्पल० त्रिभवीया श्रीधर्मशेखरसूरिपट्टे श्रीधर्मसुंदरसूरिभिः।

(८७)

सं० १५२५ वर्षे ज्येष्ठसुदि ५ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० गोला भा० गुरदेसुत हेमाकेन भार्या हीरादे माघु सुत वहजादिकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं

श्रीअजितनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ब्रह्माणगच्छे श्रीवीरसूरिभिर्वइरवाड़ावास्तव्यः ।

(८८)

सं० १५१० वर्षे फागुणसुदि ११ शनौ श्रीश्रीमालज्ञा० व्यव० पूनपाल भा० पाल्हणदेवी पुत्रीहीराहरियाभ्यां सुपूर्वजैर्निमित्तं श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्र० श्रीभावडारगच्छे श्रीकालिकाचार्यसं० श्रीवीरसूरिरुपदेशेन ।

(८९)

सं० १५६१ वर्षे माघवदि ५ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० देवड भा० पावीपुत्र खीमा भा० वरजू पुत्र आर्जुनेन पितृमातृ आत्मश्रेयसे श्रीनमिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पिप्पलगच्छे त्रिभवीया भ० श्रीधर्मसागरसूरिपट्टे भट्टारक श्रीधर्मप्रभसूरिभिः ।

(९०)

सं० १५३० वर्षे का० सु० १२ सोमे श्रीश्रीमा० व्य० लींबा भा० लाछू सु० धर्मसी भा० धांधलदे भ्रा० वीना आत्मश्रे० श्रीशीतलनाथबिंबं का०, प्र० पिप्पल० श्रीमुनिसिंघसूरिपट्टे श्रीअमरचंद्रसूरिभिः।

(९१)

सं० १५०१ वर्षे फागुणसुदि ५ गुरौ श्रीब्रह्माण-

गच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० तेजपाल भार्या मूली सुत लाखा [केन] भा० ललितादे सुता रतनू पितृमातृश्रेयोर्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं का०, प्र० श्रीपजूनसूरिभिः ।

(९२)

सं० १५२४ वर्षे मार्गवदि २ प्राग्वाट व्य० तेजा भा० सीरी पुत्र व्य० पोपाकेन भा० पांतीदे पु० वजांग देपाल प्रमुखकुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीसुविधिनाथबिंबं का०, प्र० तपागच्छेश श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।

(९३)

सं० १५१७ वर्षे पौषवदि ५ गुरौ श्रीमालज्ञातीय श्रे० वीरम भा० विल्हदे तयोः सुतौ श्रे० राउल भीमा भा० धीरु सुत हापाकेन स्वमातृपितृश्रेयोर्थं श्रीसुविधिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमापक्षे श्रीमुनिसिंहसूरिभिः, राडवडवास्तव्यः ।

(९४)

सं० १५११ वर्षे माघसुदि ५ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० कर्मसी भा० मदी सुत महिपाकेन पितृमातृनिमित्तमात्मश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं

कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीराजतिलक-सूरिभिः स्थिरापद्रे ।

(९५)

सं० १५३६ वर्षे फागुणसुदि ३ सोमे श्रीश्री-माल० श्रे० लूणा भा० वमकु सुत भोजाकेन भा० अमकु सुत रहिआदि कुटुंबयुतेन मातृपितृश्रेयसे श्रीश्रेयांसनाथबिंबं पूर्णि० श्रीगुणधीरसूरीणामुप० का० प्रति० विधिना साणीवास्तव्यः ।

(९६)

सं० १५०१ वर्षे पौषवदि ६ शुक्रे श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० वगसा भा० जेसलदे सुत धडसिंहेन स्व-पितृभ्रातृश्रेयोर्थं जीवंतस्वामि-श्रीसुमतिनाथबिंबं कारितं प्रति० नागेंद्रगच्छे श्रीपद्मानंदसूरिपट्टे श्री-विनयप्रभसूरिभिः ।

(९७)

सं० १५०५ वैशाखसुदि २ बुधे लठाउरागोत्रे सं० नगराज भा० लाढ़ी सु० सं० धनराजेन भा० सोनाई पु० सं० कालुप्रमुखपरिवारेण स्वश्रेयोर्थं श्री-सुविधिनाथबिंबं कारितं श्रीखरतरगच्छे श्रीगुरु-श्रीजिनभद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(९८)

सं० १४९३ वर्षे वैशाखसुदि ५ बुधे फलऊधीया-गोत्रे सा० छाहू भा० छाजुई पुत्र सावाकेन आत्म-पुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं कारापितं प्र० श्रीधर्म-घोषगच्छे भ० श्रीपद्मशेखरसूरिपट्टे भ० श्रीविजय-चंद्रसूरिभिः ।

(९९)

सं० १४३५ वर्षे माघवदि १२ सोमे श्रीश्रीमाल-ज्ञा० सं० खेडसिंग सुत सं० हादाकेन का० शांतिनाथ-बिंबं, प्र० श्रीवीरसिंहसूरिपट्टे श्रीवीरचंद्रसूरिभिः ।

(१००)

सं० १५१७ वर्षे पौषवदि ५ गुरौ श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० सूरा भा० सुहवदे सुत रूदाराणाभ्यां मातृपितृनिमित्तं श्रीशान्तिनाथबिंबं का०, प्र० पिप्पल० त्रिभवीया श्रीधर्मसागरसूरिभिः ।

(१०१)

सं १५७२ वर्षे वैशाखवदि ४ रवौ श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्यव० भूवर सुत व्य० पोपट [केन] भा० प्रीमलदे भ्रा० गोपाल सुत हादासहितेनात्मश्रेयोर्थं श्रीसुविधिनाथबिंबं कारापितं श्रीपूर्णिमापक्षे प्रधान-शाखायां श्रीभुवनप्रभसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीः ।

(१०२)

सं० १४३४ वर्षे वैशाखवदि २ बुधे श्रीमालज्ञा० व्य० जाठिल भा० खेमलदे श्रे० मालाकेन श्रीशांतिनाथबिंबं का०, प्रतिष्ठितं पिप्पलाचार्यश्रीमुनिप्रभसूरिभिः ।

(१०३)

सं० १४६२ वर्षे वैशाखसुदि ६ शुक्रे प्राग्वाटज्ञा० प्रलेपन भा० साथलदे पुत्र मालणकेन श्रीआदिनाथबिंबं का०, प्र० मडाहड़ा श्रीहरिभद्रसूरिभिः ।

(१०४)

सं० १५०६ वर्षे वैशाखसुदि ६ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० लाखा भा० पातली सुत कीकाकेन आत्मश्रेयोर्थं श्रीनमिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः ।

(१०५)

सं० १४३० वर्षे माघवदि ८ सोमे ओसवंशीय व्य० आशधर भा० रामलदे पित्रोः श्रेयसे [सुत] व्य० सादाकेन श्रीआदिनाथः कारितः प्र० पिप्पलाचार्यश्रीधर्मदेवसूरिसंताने श्रीप्रीतिसूरिभिः ।

(१०६)

सं० १२०० माघवदि २ श्रीश्रीमाल पितृव्य श्रे०

(९७)

नरसिंह भां० नयनादे खीमा साहा पु० करणाकेन श्रीशांतिनाथबिंबं का०, प्र० चैत्रगच्छे श्रीहरिश्चंद्र-सूरिभिः ।

(१०७)

सं० १३९९ फागणसुदि १३ सोमे श्रीमूलसंघेन वयउठी [प्रतिष्ठा कारिता]

(१०८)

सं० १७०८ मागसरसुदि २ रवौ सा० यक्षरा-जेन पुण्यार्थं श्रीपार्श्वबिंबं कडुआमतगच्छे भाणाजी लाधाजीकेन [का० प्रतिष्ठितम्]

(१०९)

सं० १६८३ ज्येष्ठसु० ३ कडुआमती थरादरा ठाकुर रत्नपाल भा०रमादेव्या सुमतिनाथबिंबं का० तेजपालेन प्र० ।

(११०)

सं० १६६२ फागणसु० २ बुधे हारापित्रासा-जनसी [श्रे०] श्रीवासुपूज्यबिंबं का० थरादनगर-वास्तव्ये ।

७

(१११)

सं० १३६४ वर्षे वैशाखशुक्ले १३ श्रे० छाडा पुत्र खीमड भा० जयतु पुत्र केल्हण भा० लूणी पु० हरपाल भा० कपूरदे सुत रत्नसिंहेन भा० गउरादे सहितेन पितृव्यदेवल पूनपाल पितापितृव्य नरपालश्रेयसे आदिनाथप्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्रीमहेंद्रसूरिपट्टे श्रीअभयदेवसूरिभिः।

(११२)

सं० १४३६ वैशाख वदि ११ भोमे श्रीमालज्ञा० व्य० वीवा भा० हमीरदे सुत भूदेवेन पितृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिंबं का०, प्र० पिप्पलगच्छीय श्री विजयप्रभसूरिपट्टे श्रीउदयानंदसूरिभिः।

(११३)

सं० १४७९ माघवधि ७ सोमे श्रीभावडारगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० भरमा पुत्र सरवणेन पुत्र पर्वतश्रेयसे श्री चंद्रप्रभस्वामिबिंबं कारितं प्रति० श्रीविजयसिंहसूरिभिः।

(११४)

सं० १६१७ वर्षे पौष वदि १ गुरौ राजाधिराज श्रीअश्वसेन राणी वामादेवी तयोः पुत्र श्रीश्रीपार्श्व-

नाथबिंबं कारितं श्रीथिरापद्रवास्तव्य लघु० श्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० बीजा पूना मूलादिकेन स्वकर्मक्षयार्थं ।

(११५)

सं० १६१७ वर्षे पौष वदि १ गुरौ राजा श्री कुम्भाराणा राणीश्रीप्रभावती तयोः पुत्र श्रीश्री मल्लिनाथस्य बिंबं कारितं श्रीथिराद्रवास्तव्य श्री श्रीमालज्ञातीय सहं० घड़सी रंगा उदयवंत धनपाल संघवी कर्मक्षयार्थं प्रतिष्ठितं बिंबं श्रीशुभं भवतु ।

(११६)

सं० १५७८ वर्षे माहवदि ५ शुक्रे महाराजा-धिराज श्रीदशरथ राज्ञीश्रीनंदादेवी पुत्र श्री श्री श्री श्री श्री शीतलनाथबिंबं कारितं श्रेयसेस्तु ।

(११७)

सं० १६१३ वर्षे वैशाखसुदि १० गुरौ राजाधि-राज महाराज श्रीनाभिनरेश्वर माता श्रीमरुदेवी तत्पुत्र श्री श्री श्री श्री श्रीआदिनाथबिंबं कारितं श्रीथिराद्रवास्तव्य श्रीश्रीमालज्ञातीय बाई नीनू कर्मक्षयार्थं कारितं ।

(११८)

सं० १५११ वर्षे ज्येष्ठवदि ९ रवौ श्रीश्रीमालज्ञा०

मं० सोना भा० खेतलदे सुत गाडा भा० भोली सुत काला भा० कामलदे भ्रा० धर्मण, नरियाभिः पितृमातृश्रेयसे श्रीनमिनाथबिंबं का०, प्र० श्री पिप्पलगच्छे भ० श्रीउदयदेवसूरिभिः, वालहरग्रामे।

(११९)

सं० १५०६ वर्षे चैत्रवदि ५ गुरौ श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय मं० जेसिंग भा० वापू सु० वनाकेन पितृव्यसारंग भ्रा० कर्मणश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं पूर्णिमापक्षे श्रीवीरप्रभसूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना लिउरवाड़ाग्रामे श्रीः ।

(१२०)

सं० १५३६ वर्षे माघवदि ७ सोमे श्रीउएसवंशे सा० राणा भा० रयणादे पुत्र सा० खरहर्षश्रावकेण भा० माणिकदे पुत्र लखमण केसवण कीर्ति पौत्र मदन सूरा माणिक सहितेन पुत्ररावणपुण्यार्थं श्री-अंचलगच्छे श्रीजयकेसरीसूरीणामुपदेशेन संभव-नाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च ।

(१२१)

सं० १५११ वर्षे माघवदि ५ गुरौ श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्यव० कर्मसिंह भा० मदी सु० वाघाकेन

पुत्र मातृश्रेयोर्थं श्रीअजितनाथबिंबं कारापितं श्री-पू० भ० राजतिलकसूरेरुपदेशेन प्र० श्रीसूरिभिः थिरपद्रे।

(१२२)

सं० १५६० वर्षे वैशाखसुदि ३ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० सारंग भा० रंगी सुत लखमणकेन भा० पाल्हू सुत रहिया देपाल सहितेन स्वपितुर्निमित्तं आत्मश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं का० श्रीनागेंद्रगच्छे भ० श्रीसोमरत्नसूरिपट्टे भ० श्रीहेमसिंघसूरिभिः प्रतिष्ठितं।

(१२३)

सं० १५२१ ज्येष्ठसुदि ९ सोमे उप० ज्ञातीय नाहरगोत्रे कुशला भा० कल्हणदे पुत्र महणाकेन पितृव्यपुण्यार्थमात्मश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं का०, प्र० धर्मघोषगच्छे श्रीपद्मानंदसूरिभिः पुंजपुरवास्तव्यः।

(१२४)

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठसुदि १३ बुधे उपकेशज्ञातीय व्यव० कीका भा० सरसइ सुत खेता भा० रंगी सुत रूपाकेन भ्रातृदेवराजनिमित्तमात्मश्रेयसे

श्रीनमिनाथबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं भावडारगच्छे श्रीभावदेवसूरिभिः सत्यपुरवास्तव्यः।

(१२५)

सं० १५६० वर्षे वै० सु० ३ सं० खेता भा० हांसलदे पुत्र सं० खेटाभ्रातृ सं० अर्जुनेन भा० अधिकादे पुत्र सं० मांडण भ्रातृज डूंगर वना जेसा प्रभृति कुटुंबयुतेन वृद्धपितृव्य सं० मेहा श्रेयसे प्रीतये श्रीवासुपूज्यबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीसोमसुंदरसूरिपट्टे नायक श्रीकमलसूरिभिः।

(१२६)

सं० १५४३ वर्षे ज्येष्ठसुदि ११ श्रीश्रीमालीय व्य० ससधर भा० जीलिणी पुत्र व्य० धर्मसिंहेन भा० माणिकी पुत्र महिराज वरजांगादियुतेन स्वश्रेयसे श्रीशीतलनाथबिंबं का०, प्र० श्रीसूरिभिः पूज्यश्रीशौभाग्यरत्नसूरिभिः।

(१२७)

सं० १५.... वर्षे माघ व. २ गुरौ श्रीप्राग्वाट ज्ञा० श्रे० धांगा भा० पंगादे सुत पर्वतकेन भा० मटकू पुत्र कर्मणादि कुटुंबयुतेन श्रीविमलनाथबिंबं का०, प्र० वृद्धतपापक्षे भ० श्रीजिनसुंदरसूरिभिः। सहूआलावास्तव्यः श्रीः।

(१२८)

सं० १५२३ वर्षे वैशाखसुदि १२ प्राग्वाट व्य० मुंजा भा० जसू पुत्र व्य० हापाकेन भा० रत्नादे पुत्र जावड़ जीवा जगादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीअभिनंदनबिंबं का०, प्र० तपागच्छाधिराज श्री-लक्ष्मीसागरसूरिभिः मूजिगपुरे ।

(१२९)

सं० १५३६ वर्षे पौष वदि २ गुरौ श्रीब्रह्माण-गच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठिरामा भार्या रत्नादे सुत वरदेवेन भा० वील्हणदे सुत मांजर भाखर सहितैः स्वपितृमातृश्रे० श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागरसूरिभिः कह्लीआणावास्तव्यः।

(१३०)

सं० १५१७ वर्षे वैशाखसुदि १२ भोमे श्रीश्री-मालज्ञातीय श्रे० हला भा०हेली सुत सवसीकेन पितृमातृस्वपूर्वजश्रेयसे श्रीश्रेयांसनाथपंचतीर्थी का-रिता प्र० पिप्पलगच्छे भ० श्रीगुणरत्नसूरिभिः वालुकडग्रामे ।

(१३१)

सं० १५४८ वर्षे वैशाखवदि १० रवौ श्रीश्री-

मालज्ञा० सिद्धशा० श्रे०लखमसी भा०मांजू सुत मदा भा० मांकू सुत तेजाकेन भा० मल्हईसहितेन पितृमातृभ्रातृनिमित्तमात्मश्रेयसे श्रीशीतलनाथ-बिंबं का०, प्र० पिप्पलगच्छे श्रीरत्नदेवसूरिपट्टे श्री-पद्मानंदसूरिभिः पत्तनवास्तव्यः।

(१३२)

सं० १४९९ वर्षे कार्तिकसुदि १५ गुरौ श्रीश्री-मालज्ञातीय व्य० सूरा भा० सुहवदे पुत्र पतारूदा-भ्यामात्मश्रेयोर्थं श्रीसंभवनाथबिंबं कारितं प्रति-ष्ठितं पिप्पलगच्छत्रिभवीया श्रीधर्मशेखरसूरिभिः थारापद्रे।

(१३३)

सं० १५१३ वर्षे माघसुदि ३ शुक्रे श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय मं० सूरा भा० नोडी सुत हापाकेन भा० कली सु० समधर सहसा वरदेव वीरा पंचायण नहिराज सहितेन पितृमातृ श्रे० श्रीआदिनाथबिंबं का०, प्र० श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीमणिचंद्रसूरिभिः, राउद्रवास्तव्यः।

(१३४)

सं० १५२७ वर्षे पौषवदि ४ गुरौ श्रीसिद्धशा-

खीय श्रीश्रीमाल व्यव० दूदा भा०माणिकदे सुत राणाकेन सभ्रातृयुतेनात्मश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिं० का०, प्र० श्रीपिप्पलगच्छे श्रीविजयदेवसूरिशिष्य-शालिभद्रसूरिभिः ।

(१३५)

सं० १५३४ वर्षे पौषव० १० दिने श्रे० मांजा भा० माल्हणदे सुत मावड भा० दूंवीनाम्न्या नि-जश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० भ० श्रीलक्ष्मी सागरसूरिभिः संखारुवास्तव्यः ।

(१३६)

सं० १४५० वर्षे माघवदि ९ सोमे श्रीमाल-ज्ञातीय धांधीयागोत्रे ठक्कुर हरिराज पु० ठ० हापा ठ०जयपालनिमित्तं ठ० हेमाकेन श्रीअजितनाथबिं-बंका० प्र० खरतरगच्छे श्रीजिनवल्लभसूरिभिः ।

(१३७)

सं० १५३७ वर्षे वैशाखसुदि १० सोमे श्रीवीर-वंशे श्रे० मोखा भा० रामति पुत्र श्रे०देवा सुश्राव-केण पुत्र नारद पूना युतेन निजश्रेयोर्थं श्रीअंचल-गच्छेश श्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीअनन्त-नाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन पत्तननगरे ।

(१३८)

सं० १५२७ वर्षे माघवदि ७ रवौ उपकेश-ज्ञातीय व्य० मांडण भा० करणू सुत मोका[केन] भा० ऊदी द्वि० भा० समू सुत आल्हणपांचायुतेनात्मश्रेयसे श्रीसंभवनाथबिंबं का०, प्र० श्रीजीरापल्लीय श्रीउदयचंद्रसूरिपट्टे भ० श्रीसागरचंद्र-सूरिभिः शुभं भवतु।

(१३९)

सं० १५०५ वर्षे वैशाखवदि ९ शुक्रे श्रीश्री-मालज्ञातीय म० साल्हा भा० फरकूदे सुत खेमा भा० खेतलदेव्या सुत राजासहितेन स्वश्रेयोर्थं जीवितस्वामिश्रीनमिनाथबिंबं का० श्रीपू० भ० श्रीवीरप्रभसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठिता थिरापद्र-वास्तव्यः।

(१४०)

सं० १५१६ वर्षे आषाढसुदि ३ रवौ श्रीश्री-माल० श्रे० वत्सा भा० वीझलदेसुत श्रे० शिवाकेन मातृपितृश्रेयोर्थं श्रीअजितनाथबिंबं पूर्णिमापक्षे श्रीगुणसमुद्रसूरिपट्टे श्रीगुणधीरसूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना तड़ेडाग्रामे।

(१४१)

सं० १५१६ वर्षे माघवदि ९ सोमे प्राग्वाट व्य० खोखा भा० कील्हणदे पु० देवा[केन] भा० सूलेसिरी सुत भरमादिसहितेनात्मश्रेयसे श्री-शीतलनाथबिंबं का०, प्र० पूर्णिमापक्षे श्रीदेवचंद्र-सूरीणामुपदेशेन ।

(१४२)

सं० १५०५ वर्षे वैशाखसु० २ शुक्रे थिरापद्र-गच्छे श्रीश्रीमाल श्रु० धीरा भ्रातृ नरसी धीरा भा० धांधलदे सुत इला, अर्जुन गोलाकेन स्वपितृमातृश्रे० श्रीआदिनाथबिंबं का०, प्र० श्रीविजयसिंहसूरिभिः थराद्रवास्तव्यः

(१४३)

सं० १५२० वर्षे चैत्रवदि ५ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० पितृकान्हा मातृरूपिणि निमित्तं पुत्र सालिगेन भा० गेरीयुतेनात्मकश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं का०, प्र० पिप्पलगच्छे त्रिभवीया श्रीधर्मशेखरसूरिपट्टे श्रीधर्मसूरिभिः ।

(१४४)

सं० १५१५ वैशाखसुदि १३ रवौ श्रीश्रीमाल

व्य० मेहा भा० खेतलदे सुत जयसिंघेन भा० जयमादेसहितेन पितृभ्रातृनिमित्तमात्मश्रेयोर्थं श्री चंद्रप्रभस्वामिबिंबं का०, प्र० पिप्पलगच्छे भ० श्रीविजयदेवसूरिरुपदेशेन श्रीशालिभद्रसूरिभिः, मजोहग्रामे ।

(१४५)

सं० १५२४ वर्षे वैशाखसुदि ३ सोमे श्रीसिद्ध-संताने श्रीमालज्ञा० श्रे० लखमसी भा० मांजू सुत गणियाकेन भा० बीजू सुत आशधरसहितेन पितृ-मातृश्रेयोर्थं श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का०, प्र० श्रीपिप्प-लगच्छे श्रीउदयदेवसूरि पट्टे श्रीरत्नदेवसूरिभिः श्रीपत्तने ।

(१४६)

सं० १५२९ वर्षे फागुणसुदि २ शुक्रे श्रीउएस-वंशे वड़हराशाखायां सा० दरगा भा० लीलादे पुत्र विक्रमसुश्रावकेण भा० पल्हादे पुत्र व्याघ्रसिंह भोजा खीमा खेता सहितेन पितृव्यसाजनपुण्यार्थं अंचलगच्छे गुरुश्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन वि-मलनाथबिंबं का० प्रतिष्ठितं च ।

(१४७)

सं० १५१० वर्षे वैशाखसुदि ३ प्राग्वाटज्ञातीय

व्य० वीरम भा० झनु सुत राघवेन भ्रातृ हेमा हीरा वीसल भा० मचकू सुत अर्जुन सांगा सहजादि कुटुंबयुतेन पितृश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं कारितं प्र० तपाश्रीरत्नशेखरसूरिभिः, ऊढववासी।

(१४८)

सं० १५०७ वर्षे फागुणवदि ११ गुरौ व्यव० गोला[केन] भा० महगलदेनिमित्तं श्रीकुंथुनाथबिंबं कारापितं ब्रह्माणगच्छे श्रीमणिचंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं।

(१४९)

सं० १३४१ श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० साहडश्रेयोर्थं सुत लापाकेन बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीधरसूरिभिः।

(१५०)

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठवदि २ सोमे श्रीभावडारगच्छे श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० सोना भा० महीदेव्या स्वपुण्पार्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं कारितं प्र० कालिकाचार्यसंताने पूज्य श्रीवीरसूरिभिः।

(१५१)

सं० १५२७ वर्षे माघवदि ५ दिने गुरौ प्राग्वाटज्ञातीय सा०करणा भा० मापूपुत्र सा०बीढाकेन भा०

राजलदे पुत्र सा० पालादिकुटुंबयुतेन श्रीसंभवनाथ-विंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः।

(१५२)

सं० १४७१ माघसुदि ३ श्रीश्रीमालज्ञातौ श्रे० देदा भा० देल्हणदे सुत दूदाकेन पित्रोः श्रे० श्री-विमलनाथबिंबं का०, प्र० पिप्पलगच्छे त्रिभविया श्रीधर्मप्रभसूरिभिः।

(१५३)

सं० १५०१ वर्षे पौषवदि ९ श्रीश्रीमालज्ञातीय से० नयणा सुत कर्णेन पितृव्य तुहणा मना डूंगर वदा मातृव्य पातीनिमित्तं श्रीनेमिनाथबिंबं कारा-पितं प्र० सिद्धांतीश्रीसोमचंद्रसूरिभिः।

(१५४)

सं० १५१९ वर्षे ज्येष्ठवदि १ शुक्रे अहमदाबादीय प्राग्वाट मं० लींबा भा० मधू पुत्र अदा भा० मांजी-नाम्न्या स्वश्रेयसे श्रीअजितनाथबिंबं कारितं प्र० वृद्धतपापक्षे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः।

(१५५)

सं० १५२४ वर्षे चैत्रवदि ५ श्रीमाल श्रे० भावा भा० लालू सुत राजा भा० राजू पुत्र जीवउ लाडण-

रतनासहितैः पित्रोर्निमित्तं स्वश्रेयसे श्रीश्रेयांसनाथ बिंबं का०प्र० धारणपद्रीय भ० श्रीलक्ष्मीदेवसूरिभिः ।

(१५६)

सं० १५०६ वर्षे माघसुदि.... श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० सूरा[केन] भा० रूपादे सुत धर्मानिमित्तं श्राविका सूड्यात्मश्रेयसे श्रीसंभवनाथबिंबं का०, प्र० पिष्प० श्रीधर्मशेखरसूरिपट्टे श्रीविजयदेवसूरिभिः ।

(१५७)

सं० १५१० फागुणसुदि ११ शनौ श्रीश्रीमालज्ञा० व्यव० पूलपाल भा० पाल्हणदे पुत्र हीरा हरियाकेन पुत्र नगड नरपालयुतेन भ्रातृनिमित्तं श्रीअभिनंदनस्वामिबिंबं का० श्रीभावडारगच्छे श्रीकालिकाचार्यसंताने श्रीवीरसूरिपुरन्दरैः ।

(१५८)

सं० १३५९ श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० झांझाकेन पितृथिरपाल्हश्रीमंत श्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्र० श्रीवीरसूरिभिः ।

(१५९)

सं० १४४९ वर्षे वैशाखसुदि ६ शुक्रे श्रीउपकेशज्ञा० पितृकुरसिंह मातृकामलदेः श्रेयसे सुत

वीकाकेन श्रीसुमतिनाथबिंबं कारितं श्रीपार्श्वचन्द्र-सूरीणामुपदेशेन ।

(१६०)

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठवदि ७ ब्रह्माणगच्छे मोरिवावास्तव्य श्रीश्रीमाली व्य० हीरा सुत वपरा भा० लाड़ी सुत मांडण भा० पाल्हूदे सुत समधर धनराज सहितेनात्मश्रेयोर्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीपजूनसूरिभिः ।

(१६१)

सं० १४४२ वर्षे वैशाखवदि १० रवौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० हरपाल भा० हीरादेव्यात्मश्रेयसेजीवित स्वामिश्रीआदिनाथबिंबं का०, प्र० पिप्पलगच्छे श्रीसागरचन्द्रसूरिभिः ।

(१६२)

सं० १५०३ वर्षे मार्गशिरवदि ५ श्रीभावडारगच्छे (श्रीककुदाचार्य सं०) हादा पु० सं० काला भा० कमलादे पुत्र भीमा वेला मालाकेन स्वपुण्यार्थं श्रीनमिनाथ कारापितं प्र० श्रीवीरसूरिभिः ।

(१६३)

सं० १४९३ प्रा० श्रे० माडलसी भा० माणिकदे

सुत ठाकुरसिंहेन भा० पातू सुत वानरादियुतेन श्रीसुमतिनाथबिंबं का०, प्र० तपा श्रीसोमसुंदर-सूरिभिः।

(१६४)

सं० १४८२ वर्षे वैशाखवदि ४ गुरौ श्रीश्रीमाल-ज्ञा० पितृ आपमल मातृ ऊमादेवी पितृव्यरणसिंघ-श्रेयसे सु० देवाकेन श्रीसंभवनाथबिंबं कारितं प्र० पिप्पलगच्छे श्रीसागरभद्रसूरिभिः।

(१६५)

सं० १५२७ वर्षे कार्तिकवदि ५ सोमे श्रीश्री-मालज्ञा० सं० वृद्धशाखायां व्य० कर्माण भा० हमीरदे सुत नाभाकेन स्वपितृमातृ श्रे० श्रीअजित-नाथबिंबं का०, प्र० श्रीविजयसिंहसूरिपट्टे श्रीशांति-सूरिभिः थिरापद्रगच्छे श्रीः।

(१६६)

सं० १५५२ वर्षे फागुणसुदि ३ श्रीश्रीमालज्ञातौ नियूगोत्रे व्य० जीता भा० वानू पुत्र भीमा भा० वरजू कामलदे पुत्र रामारंगाभ्यां श्रीसुमतिनाथबिंबं का०, प्र० कंछोलीपूर्णिमापक्षे भ० श्रीविजयराज-सूरिभिः।

(१६७)

सं० १५३७ वर्षे ज्येष्ठसुदि २ सोमे श्रीप्राग्वाट-ज्ञातौ लघुशाखायां श्रे० हरदास भा० गोली पुत्र राणा पत्नी टबकुनाम्न्या स्वपुण्यार्थं श्रीअजितनाथ-बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागर-सूरिभिः ।

(१६८)

सं० १५३३ वर्षे माघसुदि १३ सोमे श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० ठाकुरसी भा० करमी सुत मेहाजल भा० माल्ही सुत संघारण जगमालसहितेन द्वि० भार्या देकूनि० श्रीसुमतिनाथबिंबं का०, पूर्णि० भ० श्रीकमलप्रभसूरिणा प्रतिष्ठितं झनाकुयो वास्तव्यः ।

(१६९)

सं० १४८४ वर्षे प्राग्वाटज्ञातीय व्य० सायरसुत व्य० गदाकेन स्वभ्रातृपद्माश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारापितं प्र० तपाश्रीसोमसुंदरसूरिभिः ।

(१७०)

सं० १४३६ वर्षे वैशाख वदि ११ प्राग्वाटज्ञातीय व्य० जसवीर भा० वांसलदे पु० मामाकेन निज-पित्रोः श्रेयसे श्रीमहावीरबिंबं कारितं श्रीपासचंद्र-सूरीणामुपदेशेन ।

(१७१)

सं० १५२९ वर्षे माघसुदि १ बुधे श्रीब्रह्माण-गच्छे श्रीमालज्ञातीय श्रे० भावा भा० भावलदे सुत रामाकेन भार्यालाडीनिमित्तं पुत्र बजूरसहितेन स्वपूर्वजश्रेयोर्थं श्रीसंभवनाथबिंबं का०, प्र० श्री-विमलसूरिपट्टे श्रीवृद्धिसागरसूरिभिः ।

(१७२)

सं० १५३२ वर्षे वैशाखसुदि १३ सोमे थारा-पद्रीयगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० ठाकुरसी भा० पाल्हणदे पुत्र ऊदा[केन] भा० अहिवदे पितृ[व्य०] फाफा कालुआ झलीआ निमित्तं श्रीअजितनाथबिंबं का०, प्रतिष्ठितं श्रीशांतिसूरिभिः ।

(१७३)

सं० १२०४ वर्षे वैशाखसुदि २ गुरौ श्रीषंडेरक-गच्छे देल्हा भा० देल्ही सुत रत्नसिंहश्रेयोर्थं कुमरसिंहेनश्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीशांतिसूरिभिः ।

(१७४)

सं० १५१३ वर्षे वै० सु० २ श्रीमूलसंघे सर-स्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यसंतानीय भ० सकल-

(११६)

कीर्त्तिदेव तत्पट्टे श्रीविमलेंद्रकीर्त्तिगुरुणा प्रतिष्ठितं हुंबडज्ञा० श्रे० वनड भा० वानू सुत काला भा० वाल्ही भ्रा० कीका भा० गोमति भ्रा० सिंवा भ्रा० पूना वच्छा श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं नित्यं प्रणमंति।

(१७५)

सं० १५३७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ सोमे श्रीवीरवंशे श्रे० रत्ना भा० रतनू पुत्र श्रे० धन्ना सुश्रावकेण भार्या धन्नी पुत्र पासा पदमा सहितेन पत्नीपुण्यार्थं श्रीअंचलगच्छेश श्रीजयकेशरिसूरीणामुपदेशेन श्रीसुमतिनाथबिंबं कारितं प्र० संघेन श्रावस्तीनगरे।

(१७६)

सं० १४८५ माघ वदि ९ गुरौ श्रीभावडारगच्छे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० धरणा भा० करणादे पुत्र पूनपालेन सुत हीरा हरदेव यशपाल मातृपितृश्रे० श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीविजयसिंहसूरिभिः।

(१७७)

सं० १५९१ वर्षे पौषवदि १० बुधे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० पूना सुत डाहा भा० लाखू सुत मेहा समधर भा० लालीदेव्या मातृपितृनिमित्तमात्म-

(१७७)

श्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं का०, प्र० श्रीब्रह्माण-गच्छे श्रीविमलसूरिभिर्वावड़ीग्रामे ।

(१७८)

सं० १४०४ वर्षे का० व० ९ सोमे श्रीश्रीमाल व्य० नरिया भा० नीनादेश्रेयसे पितृ[व्य]खीमा वइजा श्रेयोर्थं भ्रा० नरसिंहादिसर्वेषां नि० सुत तिलकाकेन श्रीपद्मप्रभपंचतीर्थी कारिता श्रीपूर्णिमा-पक्षे श्रीसूरिभिः प्रतिष्ठिता ।

(१७९)

सं० १३८७ वर्षे वैशाखसुदि २ रवौ ब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० वयरा[केन]स्व श्रेयसे श्रे० कुर-सिंहसहितेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्र० श्री-जज्जगसूरिभिः ।

(१८०)

सं० ११४८ श्रीनागकरणेन आत्मश्रेयोर्थं कारितं ।

(१८१)

सं० १४५२ वैशाखसुदि ५ गुरौ राउ पुत्र महं० राणासुत लालाकेन पितृमातृ तथा पितृव्यवहरा-श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं का०, प्र० श्रीपुन्यतिलक-सूरिणा ।

(१८२)

सं० १४५६ ज्येष्ठसुदि १३ गुरौ प्रा० श्रे० सांगण भार्या सुगुणादे पु० मेघाकेन भ्रातृ गुणनरपाल। झगडा मातृस्वसा कुरीदे तेषां निमित्तं श्रीसंभवनाथ-बिंबं का०, प्र० श्रीरत्नप्रभसूरीणामुपदेशेन।

(१८३)

सं० १४६५ वर्षे वैशाखसुदि ३ गुरौ श्रीश्री-मालज्ञा० व्य० घीरा भा०वील्हणादे सुत श्रे० पर्वतेन श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० नागेन्द्रगच्छे श्रीरत्न-सिंहसूरिभिः।

(१८४)

सं० १४५३ वर्षे वैशाखसुदि ३ गुरौ श्रीश्रीमाल-पितृव्य नडीमल मातृ सुहडादे भ्रा० खीमा नडुआ पंचजन श्रेयसे देपाकेन श्रीआदिनाथपंचतीर्थी कारिता श्रीधनतिलकसूरीणामुपदेशेन प्र०।

(१८५)

सं० १४९६ वर्षे फागुणवदि ३ रवौ श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० फला भा० पोमी भ्रातृजयकुरसीश्रेयोर्थं सुत रहियाकेन श्रीकुंथुनाथबिंबं का०, प्र० पिप्पल-गच्छे भ० प्रीतिरत्नसूरिभिः।

(१८६)

सं० १४८४ वर्षे वैशाखवदि ११ रवौ श्रीश्रीमाल व्य० फूदर भा० हांसलदेव्या पितृमातृश्रेयोर्थं श्री-कुंथुनाथबिंबं कारितं प्र० पिप्पलगच्छे श्रीधर्म-शेखरसूरिभिः ।

(१८७)

संवत् १०४६ चैत्रवदि १ अचलपुरसंघेन कारा-पितं ।

(१८८)

सं० १४८९ वर्षे वैशाखसुदि ३ बुधे श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० हीरा[केन] भा० हीरादे सुत भाखर भा० साणी स्वभ्रातृश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं कारा-पितं ब्रह्माणगच्छे प्रतिष्ठितं श्रीक्षमासूरिभिः ।

(१८९)

सं० १५५२ वर्षे वै०व० ३ शनौ कुंडीशाखायां श्रीश्रीवंशे व्य० गाहिया भा० झाझु सुत करणा भा० तारू सुत पांता भा० रामती पितुः पुण्यार्थं अंचल-गच्छे श्रीसिद्धांतसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीकुंथुनाथ-बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ।

(१९०)

सं० १४९९ वर्षे कार्तिकसुदि १५ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० अर्जुन भा० कश्मीरदे सुत सायर पौत्र धनराजेन पितामहनिमित्तमात्मश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्रति० पिप्पलगच्छत्रिभवीयाभट्टारक श्रीधर्मशेखरसूरिभिः।

(१९१)

सं० १५१५ वर्षे कार्तिकवदि १४ शुक्रे श्रीभावडारगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० मेहाउलेन भा० लाछू पुत्र पूना गांगा सांगा पितृव्य गेला सहितेन स्वपुण्यार्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का०, प्रति० श्रीवीरसूरिपट्टे पूज्यश्रीजिनदेवसूरिभिः।

(१९२)

सं० १३७७ वर्षे चै०व० ८ भृगौ साखुलागोत्रे ठा० कर्मसी भा० चरणश्री पु० सा० झंझणकेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं का०, प्र० श्रीमहेवसूरिभिः।

(१९३)

सं० १३९४ वर्षे वैशाखसुदि ९ बुधे उसवालज्ञातीय ठा० देल्हा भा० सुहडा पुत्र झांझणकेन पूर्वजनिमित्तं श्रीपद्मप्रभबिंबं का०, प्र० श्रीजयप्रभसूरिभिः।

(१९४)

सं० १५४७ वर्षे वैशाखसुदि ३ सोमे प्राग्वाट-ज्ञातीय डीसावास्तव्य व्य० लखमणेन भा० रमकु पुत्र लींबा तेजा जिनदत्त सोमा सूरा युतेन स्वश्रे· योर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं अंचल-गच्छे श्रीश्रीसिद्धांतसागरसूरिभिः। व्य० लखमणेन, भा०रमकु पुत्र लींबा भा० टमकू।

(१९५)

सं० १५१७ वर्षे मार्गसु० १० सोमे श्रीउएसवंशे सा० राणा भा० राणलदे० पु० खरहत्थ सुश्रावकेण भा० माणकदे० पुत्र लखमण सहितेन अंचलगच्छे श्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन पितृश्रेयोर्थं श्रीचंद्र-प्रभस्वामिबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन।

(१९६)

सं० १४९४ श्रावणवदि ९ रवौ श्रीश्रीमाल व्य० समरा भा० जाल्हणदे श्रेयसे सुत भरमाकेन श्री-सुविधिनाथपंचतीर्थी कारा० प्रतिष्ठिता पिप्पलगच्छे त्रिभवीया श्रीधर्मशेखरसूरिभिः।

(१९७)

सं० १५०७ वर्षे माघसुदि १० सोमे श्रीमाल-

ज्ञातीय व्य० पर्वत भा० राजलदे पुत्र सहाद्र मेहा महीपाभिः पितृमातृश्रेयोर्थं श्रीकुंथुनाथबिंबं कारितं, प्र० नागेंद्रगच्छे श्रीपद्मानंदसूरिपट्टे श्रीविनयप्रभ-सूरिभिः।

(१९८)

सं० १४८९ वर्षे वैशाखसुदि १ सोमे श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय सं० साखा भा० भरमादे सुत सोखाकेन भ्रातृवड्डआसुत साजनपुण्यार्थं श्रीशांतिनाथबिंबं का०, प्र० पिप्पल० श्रीसोमचंद्रसूरिभिः।

(१९९)

सं० १३०९ वर्षे फागुणसुदि १३ बुधे सोराण-गोष्ठी सा० हरदेवेन पुत्रार्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबमात्म-श्रेयसे कारितं, प्रतिष्ठितं धर्मघोषगच्छे श्रीअमर-प्रभसूरिशिष्यैः श्रीज्ञानचंद्रसूरिभिः।

(२००)

सं० १२१७ वैशाखवदि १ श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीप्रद्युम्नसूरीश्वरैः प्र० जोगा सुत यिणुचंद्र-श्रेयोर्थं का०।

(२०१)

सं० १४१२ वर्षे ज्येष्ठसुदि १३ गुरौ श्रे० लूण....

पालपुत्र बीजाकेन श्रीअंबिका कारिता प्र० श्री-माणिक्यसूरिभिः।

(२०२)

सं० १४३७ वर्षे वैशाखसुदि ११ सोमे श्रीश्री-मालज्ञा० पितृव्यमातृ कीसलदे श्रेयोर्थं सुत काल-केन श्रीऋषभदेवबिंबं कारितं प्र० पिप्पलनायक श्रीजयतिलकसूरिभिः[1]।

(२०३)

सं० १२६१ सांतू आसल सं० धारण।

(२०४)

सं० १५७२ वर्षे कार्तिकसुदि २ सोमे श्रीआदि-नाथप्रतिमा कारिता।

मोटामन्दिर ऋषभदेवचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

(२०५)

सं० १४८० वर्षे फागुणसुदि १० बुधे श्रीकोरंटक-गच्छे श्रीनन्नाचार्यसंताने उपकेशज्ञातीय श्रे० हेमा भा० भरमी सुत मना भा० तारू पु० आल्हा भा०

---

१ जै० धा० प्र० ले० सं० भा० २ लेखांक ९३१ में जय-तिलकसूरि को धर्मतिलक लिखा है।

आसू पु० हेमराज सांगण भा० भामिनीदेव्या श्रीआदिनाथचतुर्विंशतिबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीकक्कसूरिभिः ।

(२०६)

सं० १४७९ वर्षे चैत्रवदि २ गुरौ श्रीमालज्ञातीय मंत्री वीरू भा० लखमादे सुत वस्ता भा० रामू श्रेयोर्थं सुत देवा, धनाकेन श्रीआदिनाथचतुर्विंशतिः कारापिता थारापद्रगच्छे प्रतिष्ठितं श्रीशांतिसूरिभिः ।

(२०७)

सं० १५८२ वैशाखसुदि तृतीयातिथौ श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० नरवद भा० जीविनी सुत वीजा हरराज, वीजा भा० वइजलदे सुत धरणाकेन पितामही लीलाश्रेयोर्थं श्रीसंभवनाथबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमापक्षे प्रधानशाखीय श्रीकमलप्रभसूरीणामुपदेशात् पत्तनवास्तव्यः ।

(२०८)

सं० १४८३ वर्षे वैशाखसुदि ५ गुरौ श्रीउकेशवंशे सं० जेसा [केन] भार्या चांपलदे सुत वीसल कन्या वउलदे स्वश्रेयसे श्रीसंभवनाथबिंबं का०, षंडेरकगच्छे प्रति० श्रीशांतिसूरिभिः ।

(२०९)

सं० १५०५ वर्षे माघसुदि १० रवौ श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० कर्मसी भा० हांसू पुत्र श्रे० नरपति-सुश्रावकेण भा० नयणादे मुख्यसमस्तकुटुंबसहितेन मातृपितृश्रेयोर्थं अंचलगच्छे गच्छाधिराजश्रीश्रीजय-केशरिसूरीश्वराणामुपदेशेन श्रीसुविधिनाथबिंबं का०, प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन विभुं विजयतां ।

(२१०)

सं० १५०३ वर्षे माघसुदि १३ श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० मालदेव भा० कामलदे सुत व्य० केल्हा भा० हर्षू सुत व्य० मांडण भा० देहीनाम्न्या सुत व्य० वेला गेलादिकुटुंबयुतया श्रीविमलनाथबिंबं स्वश्रेयसे कारितं प्र०, तपागच्छेश्वर श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ।

(२११)

सं० १५५५ वर्षे वै०सु० ३ शनौ बीजापुरवास्तव्य श्रीओसवंशे दो० जेसा भा० जसमादे सुत दो० अमरा भा० देवासिरि सुत दो० कुडाकेन भा० का-मलदे द्वितीया हीरू सुत दो० धना दो० वना भा० सोही धनासुत कान्हा दंगडा प्रमुख कुटुंबयुतेन श्रीधर्मनाथबिंबं कारितं प्र० श्रीसूरिभिः ।

(२१२)

सं० १५१५ वर्षे वैशाखवदि २ गुरौ प्राग्वाट-ज्ञातीय श्रेष्ठिवागा[केन] भा० पोमी पु० वेला भा० लावी पुत्र विरुआयुते-नात्मश्रेयसे श्रीचंद्रप्रभबिंबं का०, प्र० श्रीसिद्धांतीगच्छे भ० श्रीसोमचंद्रसूरिभिः॥

(२१३)

सं० १५३८ वर्षे वैशाखसुदि ५ बुधे श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० धीरा[केन] भा० भाली सुत आसु, मनु, धनु, देवु, पांचु, डूंगर, अदु[युतेन] आत्मश्रेयसे श्री-चंद्रप्रभस्वामीबिंबं कारापितं चैत्रगच्छे भ० श्रीरत्न-देवसूरिपट्टे भ० अमरदेवसूरिप्रतिष्ठितं गोत्र ...... पावास्तव्यः।

(२१४)

सं० १५२५ वर्षे माघव० ६ दिने चांपानेरवासि गुर्जरज्ञा० म० नरसिंग भा० आसूदेव्या सुत म० जिनकाम सुत पद्माकिरण श्रीवच्छ पहिराजादि कुटुंबयुतया निजश्रेयसे श्रीनमिनाथबिंबं का० प्रतिष्ठितं तपाश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः।

(२१५)

सं० १५३३ वर्षे वैशाखसुदि ६ शुक्रे श्रीश्रीमाल-

ज्ञा० श्रे० कर्मसी भा० लाछू० सुत श्रे० भरमाकेन भा० देसलदे सहितेन पितृमातृनिमित्तमात्मश्रेयोर्थं श्रीसुविधिनाथबिंबं का०, प्र० नागेंद्रगच्छे भ० श्री-गुणदेवसूरिभिः थिरापद्रनगरे।

(२१६)

सं० १२४४ फागुणसुदि ३ बुधे आम्रयशसुत आमूकेन मातुः राजिमतीश्रेयोर्थं बिंबं कारितं श्री-मतिप्रभसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीः।

(२१७)

सं० १५४५ वर्षे फा०व० २ भोमे श्रीमालज्ञातीय मं० भीमा भा० नागिनी सुत कान्हा भा० पूतली-देव्या पितृमातृश्रेयोर्थं श्रीनमिनाथबिंबं कारितं पूर्णिमापक्षे श्रीसाधुसुंदरसूरिपट्टे श्री श्री श्रीदेवसुंद-रसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना गांफवास्तव्यः।

(२१८)

सं० १४८१ पौषव० ९ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० विरुआ भा० भरमादे सु० बुहथाकेन मातृ-पितृश्रेयसे श्रीसंभवबिंबं का०, प्र० नागेंद्रगच्छे श्रीपद्मानंदसूरिभिः।

(२१९)

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ९ बुधे श्री श्री मालज्ञातीय व्य० मेहण भा० माल्हणदे पु० मांडणेन पुत्र धीरा सहितेनात्मश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथ बिंबं का०, प्र० बृहद्गच्छे सत्यपुरीय श्रीपार्श्वचंद्रसूरिभिः श्रीः ।

(२२०)

सं० १५१२ वर्षे माघ सुदि २ शुक्रे श्रीउपकेशज्ञातीय परवजगोत्रे व्य० सिवा पुत्र देवाकेन भा० देवलसहितेन मातृसंसारदे पुण्यार्थं श्रीपद्मप्रभबिंबं कारितं श्रीवडगच्छे श्रीसर्वदेवसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीरस्तु ।

(२२१)

सं० १५१० वर्षे माघ सुदि १० बुधे श्रीश्रीमालज्ञातीय पितृ भामट मातृ मीलणदेवि श्रेयोर्थं सुत सरवण काला समधर एतैः श्रीचंद्रप्रभस्वामिबिंबं कारितं पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुरत्नसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना वइणाग्रामे ।

(२२२)

सं० १५६५ ज्येष्ठ वदि २ वा० मुनिमहीमेरु श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं [प्रतिष्ठितं]

(२२३)

सं० १७८५ मार्गशिर सुदि २ श्रीश्रीमालज्ञातीय वोरा जसराजेन पुन्यार्थं श्रीधर्मनाथस्य विंबं कारापितं। प्रतिष्ठितं कडुआमतीगच्छे साहाजी श्रीलाधा थोभणजी।

(२२४)

सं० १४११ ज्येष्ठ व० ९ शनौ श्रीमालज्ञातीय महं सायाकेन स्वगोत्रजा वैरुट्यामूर्त्तिः का०, ब्रह्माणगच्छे श्रीलब्धिसागरसूरिभिः।

(२२५)

सं० १६१२ वर्षे पौषवदि १ गुरौ राजाधिराज श्रीअश्वसेन माता श्रीवामादेवी तत्पुत्र श्रीश्रीपार्श्वनाथस्य विंबं श्रीथारापद्रवास्तव्य लघुशाखायां श्रीमालज्ञातीय महं. तोला महं. भोला कर्मक्षयार्थं कारितं।

(२२६)

श्रीसाधुपूर्णिमापक्षे श्रीसागरचंद्रसूरिपट्टे श्रीसोमचंद्रसूरीणामुपदेशेन प्र० (धातुचतुर्मुखः)

(२२७)

सं० ११५९ सिवा का० पार्श्वनाथविंबं प्र० श्रीजयसेनसूरिभिः।

देशाईसेरीविमलनाथचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

(२२८)

सं० १५०६ वर्षे वैशाखसुदि ८ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय व्यव० मांडण सुत बरदा भा० वाहणदेव्या आत्मश्रेयसे श्रीचंद्रप्रभस्वामिचतुर्विंशतिपट्टबिंबं का०, प्र० पिप्पलगच्छे त्रिभवीया श्रीधर्मशेखरसूरिभिः थारापद्रवास्तव्यः ।

(२२९)

सं० १५१२ वर्षे ज्येष्ठसुदि ५ रवौ श्रीथारापद्रगच्छे श्रीमालज्ञातीय महं० गोगन भा० नूंजी सुत रसाजण भा० सुहवदे सायर भा० नांईदेव्या स्वपितृमातृ आत्मश्रेयोर्थं श्रीआदिनाथचतुर्विंशतिपट्टः का०, प्र० श्रीविजयसिंहसूरिभिर्वडलीवास्तव्यः ।

(२३०)

सं० १४८५ वर्षे माघसुदि १० शनौ श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० सुहडसी भा० साजणदे अपरा भा० सिरिया सु० लालाकेन स्वपित्रोस्तथा भ्रा० खींदा० श्रेयसे श्रीशांतिनाथचतुर्विंशतिपट्टः का०, प्र० पिप्पलगच्छे त्रिभवीया श्रीधर्मशेखरसूरिभिः ।

(२३१)

सं० १५८४ वर्षे माघवदि ११ रवौ श्रीराजाधि-
राज श्रीसुमित्रराजा मातापद्मावती तत्पुत्र श्री श्री
श्री श्री श्रीमुनिव्रतस्वामिबिंबं कारितं सं० कहरदे
सुत वीहड सुत राजाराम कर्मक्षयार्थं श्रेयसे श्रीः।

(२३२)

सं० १६११ वर्षे वैशाखसुदि १० बुधे श्रीआदि-
नाथस्य बिंबं सेवक धूडाहंसराजेन कारितं कर्मक्ष-
यार्थ श्रीथिराद्रवास्तव्य श्रीश्रीमालीय वृद्धशाखायां।

(२३३)

सं० १५६८ वर्षे माघसुदि ५ शुक्रे श्रीब्रह्माण-
गच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० जेसा भा० सलखू सुत
वासाकेन पितृमातृश्रेयोर्थमात्मश्रेयसे श्रीचंद्रप्रभ-
स्वामिबिंबं कारितं प्र० मुनिचंद्रसूरिभिर्विडारुआवा०

(२३४)

सं० १५६९ ज्येष्ठसुदि ५ सोमे श्रीपार्श्वनाथबिंबं
सेवककालेन कारितं।

(२३५)

सं० १५१८ वर्षे फागुणसुदि ९ सोमे उपकेश-

ज्ञातीय सा० नवा भा० नामलदे सुत देवा भा० माउदेव्या आत्मश्रेयोर्थं श्रीसंभवनाथपंचतीर्थी कारापिता भावडारगच्छे प्रतिष्ठितं भ० श्रीभावदेवसूरिभिः।

(२३६)

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठवदि ३ रवौ पटइलसामंत भा० कमी सुत वाछाकेन भा० दीपीदे रत्नादे भ्रा० हीरू सुत ठाकुर प्रमुख कुटुंवयुतेन श्रीविमलनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक श्री श्री श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः।

(२३७)

सं० १४८८ वर्षे कार्तिक सु० २ वुधे अंचलगच्छे श्रीजयकीर्त्तिसूरेरुपदेशेन नागरज्ञातीय परी० धांधा [केन] भा० आल्हणदे सुत हापाश्रेयसे भवतु श्रीअभिनंदनबिंबं कारापितं प्र० श्रीसूरिभिः।

(२३८)

सं० १४९९ कार्तिकवदि २ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० वासरे भा० रामलदे सुत धनराजेन तेजपालभ्रातृश्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पिप्पलगच्छे त्रिभवीया श्रीधर्मशेखरसूरिभिः थिरपद्रे।

(२३९)

सं० १५२० वर्षे वैशाखसुदि ५ बुधे श्रीश्रीवंशे ठ० कान्हा सुत सारंग भा० हरखू पुत्र महीराज सुश्रावकेण भा० कुंअरि भ्राता सिवा सिंहा चउथा पु० जेठा सहितेन पितृमातृश्रेयोर्थं अंचलगच्छे श्री-जयकेशरिसूरीणामुपदेशेन श्रीवासुपूज्यबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं संघेन।

(२४०)

सं० १५२५ वर्षे ज्येष्ठसुदि ८ सोमे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० सलखा भा० प्रीमी सुत व्य० सिंहाकेन भा० लीलू सुत महीराज भोजादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीकुंथुनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीवीरसूरिभिर्वड़रवाडावास्तव्यः।

(२४१)

सं० १५८१ वर्षे माघवदि १० शुक्रे श्रीश्रीमा-लज्ञा० वृद्धशाखायां सीनारवास्तव्य श्रे० लाला भा० लीलादे सुत वत्सा भा० वीझलदेव्या सुत धना हंसा कुटुंबयुतेन श्रीनिगमप्रभावक श्रीआनंदसूरिभिः श्रीशांतिनाथबिंबं प्रतिष्ठितं।

(२४२)

सं० १५२३ वर्षे वैशाखसुदि १३ प्राग्वाटज्ञातीय

व्य० भा० मेहा० लांपु सुत महिमाकेन भा० मरघू सुत लटकण भ्रातृ नरवदादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री-लक्ष्मीसागरसूरिभिर्मूंजिगपुरवास्तव्यः ।

(२४३)

सं० १५०६ माघसुदि ५ रवौ श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञा० व्य० पेथा सुत देसल भा० महि-गलदेव्या आत्मश्रेयसे जीवितस्वामि-श्रीसुमति-नाथबिंबं का०, प्र० श्रीपजूनसूरिभिः ।

(२४४)

सं० १४९३ वर्षे फा० सु० १० शुक्रे श्रीश्रीमा-लज्ञा० श्रे० आल्हणसी भा० लाड़ी तयोः पुत्रः श्रे० भूभवेन मातृपितृश्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का०, प्रति० श्रीसूरिभिः ।

(२४५)

सं० १४२२ ज्येष्ठसुदि ५ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञा-तीय पितृ लाखण मातृलाखणदे पितृव्य सिंहक-श्रेयसे पुत्र पीपाकेन श्रीविमलनाथबिंबं का०, प्रति-ष्ठितं पिप्पलगच्छे श्रीमुनिप्रभसूरिभिः ।

(२४६)

सं० १५६४ वर्षे वैशाखसुदि ३ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० विरुआ भा० सिंगारदे सुत वीरम भा० हीमादे पुत्र वेलाकेन पितृमातृश्रेयोर्थं श्रीवासुपूज्यपंचतीर्थी कारापिता श्रीपूर्णिमापक्षीय श्रीरत्नशेखरसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठिता ।

(२४७)

सं १५८१ वर्षे माघसुदि ५ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय महं० रत्नासुत ..भा० पातमदेव्या कुटुंबीश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतस्वामिपंचतीर्थीबिंबं कारापितं, आगमगच्छे श्रीसोमरत्नसूरिगुरूपदेशेन प्रतिष्ठितं आदिआणवास्तव्यः ।

(२४८)

सं० १५०७ वर्षे वैशाखसुदि ११ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० जयता भा० वामूणादे सुत आल्हणकेन पितृमातृनिमित्तं स्वश्रेयसे श्रीवासुपूज्यबिंबं का०, प्र० पिप्पलगच्छे त्रिभवीया भ० श्रीचंद्रप्रभसूरिभिः ।

(२४९)

सं० १३९२ वैशाखव० ७ शुक्रे श्रे० वयरसिंह

भा० विजयादे....पित्रोः श्रेयोर्थं श्रीपार्श्वप्र० का०, प्र० श्रीदेवेंद्रसूरिपट्टे श्रीविजयचंद्रसूरिभिः श्रीमालज्ञातीयः ।

(२५०)

सं० १६८१ व० बु० नानजीत्केन श्रीशांतिनानाथबिंबं कारितं ।

(२५१)

सं १६२४ फागुणसुदि ४ भौमदिने श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्रति० श्रीसूरिभिः ।

सुनारसेरीपार्श्वनाथचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

(२५२)

सं० १५०८ वर्षे वैशाखवदि ४ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय से० नयणा[केन] भा० टहीकु सुत श्रे० लाखा हेमा दूदा कुटुंबयुतेन पितृमातृश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं सिद्धांतीय श्रीसोमचंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं शुभं कल्याणमस्तु ।

(२५३)

सं० १६१७ वर्षे पोषवदि १ गुरौ राजाधिराज श्रीअश्वसेन राणीवामादेवी तयोः पुत्र श्री श्री श्री-

पार्श्वनाथस्य बिंबं कारितं श्रीथिराद्रवास्तव्य श्रीश्री-
मालज्ञातीय श्रे० कुरा धींगा पुत्राभ्यां।

आमलीसेरी सुपार्श्वचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

(२५४)

सं० १५०८ ज्येष्ठ सु० ७ बुधे श्रीश्रीमालवंशे
सांडलगोत्रे सा० हापा भा० वीरा पु० सा० पोपट
सुश्रावकेण भा० माल्हणदे दोहित्रौ लाखा सलखा
सहितेन श्रीअंचलगच्छेश श्रीजयकेसरिसूरीणामुप-
देशेन पुत्रभलाश्रेयसे श्रीवासुपूज्यबिंबं कारितं
प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन।

(२५५)

सं० १४९९ वर्षे वैशाखवदि ४ गुरौ उपकेशज्ञा०
पितृमाला मातृमोखलदे श्रेयोर्थं सुत कीकाकेन
श्रीनमिनाथबिंबं का०, प्रति० भावडारगच्छे भ०
वीरसूरिभिः पवित्रे खाटणगोत्रे शुभं भूयात्।

(२५६)

सं० १५०८ वर्षे ज्येष्ठसुदि १० सोमे प्रा० ज्ञा०
व्य० मोकलेन भा० दूयड़ी सुत हीरा व्य० सहज
सुत ऊतलसहितेनात्मश्रेयसे श्रीश्रेयांसबिंबं का०,
प्र० श्रीजीरापल्लीगच्छे श्रीउदयचंद्रसूरिभिः।

(२५७)

सं० १६८३ वर्षे वैशाखसित ७ गुरौ राजधन्य-पुरवासितः श्रीश्रीमालज्ञातीय सा० हरदासेन भा० हीरादे युतेन श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्रतिष्ठितं।

(२५८)

सं० १५६७ वर्षे ज्येष्ठसुदि ५ बुधे मूलसंघे सा० हीरा भा० हीरादे।

(२५९)

सं० १२०९ उह्लसूतया दोलिकया चतुर्विंशति-पट्टकोयं कारितः शुभं भवतु।

राशियासेरी अभिनंदनचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

(२६०)

सं० १५५३ वर्षे आषाढसुदि २ शुक्रे प्राग्वाट-ज्ञा० वृद्धशाखायां सं० सेंगा भा० हर्षू सुत सं० अमा[केन] भा० लीलाई पु० खीमा सिंधु लखमण अलवा धनादियुतेन स्वश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतस्वामि-बिंबं का०, पूर्णिमापक्षे भीमपल्लीय भ० श्रीचारित्र-चंद्रसूरिपट्टे भ० मुनिचंद्रसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं श्रीपत्तनवास्तव्यः।

(२६१)

सं० १५१९ माघसुदि ५ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय गांधिक हापा भार्या हमीरदे सुत जागाकेन भा० जमनादे पुत्र वेला ऊगम मादा खेदा एतैः सहितेन पितृमातृभ्रातृमांडणश्रेयोर्थं श्रीधर्मनाथचतुर्विंशति-पट्टं कारितं पूर्णिमापक्षे प्रधानभट्टारक श्रीजयसिंह-सूरिपट्टे श्रीजयप्रभसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं थिराद्रवास्तव्यः श्रीः ।

मोदीसेरीं विमलनाथचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

(२६२)

सं० १५१५ वर्षे फागुणसुदि ४ शनौ श्रीश्री-मालज्ञा० पितृ रतना मातृ रतनादे सुत सा० गागच भा० ललितादे सु० गोबल भा० रूपिणीश्रेयोर्थं भ्रातृसं० डूंगर भा० झांझु सुत गोपासहितेन भोजविजयाभ्यां श्रीनमिनाथमुख्यश्चतुर्विंशतिपट्टः कारितः पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुरत्नसूरिपट्टे श्रीसाधु-सुंदरसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं श्रीसचिनगरे ।

(२६३)

सं० १५१९ वर्षे मार्गसुदि ५ शुक्रे श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० हीमाला भा० हीमादे सुत वनाकेन

भार्या चांपू सुत पर्वत नरवर नाइक नाल्हा जागा लाखा सहितेन स्वश्रेयसे अंचलगच्छेशश्रीजयकेसरिसूरीणामुप० श्रीचंद्रप्रभस्वामिबिंबं का० प्रतिष्ठितं च।

(२६४)

सं० १५२० पौषवदि ५ शुक्रे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे भ० सकलकीर्ति तत्पट्टे भ० विमलेंद्रकीर्तिभिः श्रीआदिनाथबिंबं प्र० जो० कान्हा भा० झबू सु० माणिक भा० चारू सु० हरदासेन का०।

(२६५)

सं. १६६१ वर्षे फागुणवदि २ शुक्रे श्रीश्रीकडुआमति निसमबाई थरादवास्तव्य मुहतादे श्रीसुमतिनाथबिंबं कारितं।

(२६६)

सं० १६६२ वर्षे फागुणवदि २ शुक्रे उदीवंतगृही भा० हरखादे सुत वापाकेन श्रीअभिनंदनबिंबं कारितं।

(२६७)

सं० १५८...वैशाखवदि ५ श्रीप्राग्वाट साह दूदा [केन] भार्या जाणी पुत्र जयवंतसहितेन स्वश्रेयसे

श्रीश्रेयांसनाथबिंबं का०, प्र० पूर्णिमापक्षे भट्टारक श्रीजिनहर्षसूरीणामुपदेशेन वेलांगरी वास्तव्यः श्रीः

सुतारसेरी शांतिनाथचैत्ये धातुमूर्त्तयः—

(२६८)

सं० १४८३ वर्षे ज्येष्ठसुदि ९ भौमे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० महीपाल भा० मीलनदे सुत हरिभ्रम पौत्र चांपा व्य० पाल्हा सिंधु नरवदकेन पितृमातृसुतश्रेयोर्थं श्रीआदिनाथप्रमुखचतुर्विंशतिबिंबं कारापितं प्र० थारापद्रगच्छे श्रीशांतिसूरिभिः।

(२६९)

सं० १५१८ वर्षे फागुणवदि १ सोमे श्रीउकेशज्ञातीय नाहरगोत्रे व्य० कुशलेन भा० कील्हणदे पुत्र तिहुणा महणा पोमा डामर सहितेन पितृपुण्यार्थं आत्मश्रेयसे श्रीसुविधिनाथचतुर्विंशतिपट्टं कारापितं धर्मघोषगच्छे प्रतिष्ठितं श्रीपद्मानंदसूरिभिः।

(२७०)

सं० १५८७ वर्षे वैशाखवदि ७ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठि सांइआ सुत श्रे० सवा[केन] भा० वानू पुत्र लटकण भा० लाखणदे समस्तकुटुंब-

युतेन श्रीशांतिनाथबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री- सूरिभिः काकरवास्तव्यः ।

(२७१)

सं० १६१७ वर्षे ज्येष्ठसुदि ५ सोमे उसवाल- ज्ञातीय व्य० रायमल भार्या श्रीबाई सुत हीरा भा० जीवाई सु० सिंघजीत्केन श्रीशांतिनाथबिंबं कारा- पितं तपागच्छे श्रीविजयदानसूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(२७२)

सं० १५१९ वर्षे मार्गसुदि ६ शनौ श्रीप्राग्वाट- वंशे लघुसंताने मं० अरसी भा० मांई पु० सं० गोपासुश्रावकेण भा० सुलेसिरि पुत्र देवदास सिव- दाससहितेन स्वश्रेयसे अंचलगच्छाधिराज श्रीजय- केशरिसूरीणामुपदेशेन श्रीसंभवनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन रत्नपुरवास्तव्यः ।

(२७३)

सं० १४९४ वर्षे माघसुदि ५ सोमे श्रीश्रीमाल- ज्ञातीय व्य० साहवण भार्या सोनलदे पुत्र संग्राम- सिंहेन पितृव्य छाडाश्रेयसे पूर्णिमापक्षीय श्रीविज- यप्रभसूरीणामुपदेशेन श्रीकुंथुनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्रीसंघेन ।

श्रीजीरावलीतीर्थचैत्यदेवकुलिका-

देवकुलिकासंख्या २

(२७४)

स्वस्तिश्रीसंवत् १४८१ वर्षे वैशाखसुदि ३ बृहत्तपापक्षे भट्टा० श्रीरत्नाकरसूरीणामनुक्रमेण श्रीअभयदेवसूरीणां पट्टे श्रीजयतिलकसूरीश्वरपट्टावतंस भट्टा० श्रीरत्नसिंहसूरीणामुपदेशेन श्रीवीसलनगरवास्तव्य प्राग्वाटान्वयमंडन श्रे० खेतसिंह नंदन श्रे० देहल (देवल) सिंह पुत्र श्रे० खोखा तस्य भार्या सं० पिंगलदेव्यास्तयोः सुताः सं० सादा सं० हादा सं० मादा सं० लाखा सं० सिधाभिधैरेतैः कारिता ।

देवकुलिकासंख्या ३

(२७५)

स्वस्तिश्रीसंवत् १४८१ वैशाखसुदि ३ बृहत्तपापक्षे भट्टा० श्रीरत्नाकरसूरीणामनुक्रमेण भट्टा० श्रीजयतिलकसूरीपट्टावतंस गच्छनायक श्रीरत्नसिंहसूरीणामुपदेशेन वीसलनगरवास्तव्य प्राग्वाटान्वयमंडन श्रे० खेतसिंह नंदन श्रे० देहलसिंह पुत्र

खोखा तस्य भा० पिंगलदेव्यास्तयोः सुताः सं सादा सं० मादा सं० लाखा सं० सिधाभिधैरेतैः स्वश्रेयसेऽत्र तीर्थे श्रीदेवकुलिका त्रयं कारितं शुभं भवतु गुह्यमंडपमुपरिश्रीपार्श्वनाथं प्रणमति।

देवकुलिकासंख्या ४

(२७६)

स्वस्तिश्री सं. १४८१ वर्षे वैशाखसुदि ३ दिने बृहत्तपागच्छे भट्टा० श्रीजयतिलकसूरिपट्टावतंस गच्छनायक भट्टा.श्रीरत्नसिंहसूरीणामुपदेशेन वीसलनगरवास्तव्य प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० खेतसिंहनंदन श्रे० खोखा तस्य भार्या सं० पिंगलदेव्यास्तयोः सुताः सं० सादा सं० हादा सं० मादा सं० लाखा सं० सिधाभिधैरेतैः स्वश्रेयसेऽत्र तीर्थे श्रीदेवकुलिका कारिता शुभं।

देवकुलिकासंख्या ६

(२७७)

संवत् १४८७ वर्षे पौषसुदि २ रविदिने श्रीअंचलगच्छे श्रीमेरुतुंगसूरिपट्टधरगच्छनायक श्रीजयकीर्तिसूरीणामुपदेशेन श्रीपुंगलवासित प्राग्वाटज्ञातीय शा भाणा पुत्र शा० जामद भार्या संयो...

देवकुलिकासंख्या ७

(२७८)

सं० १४८७ वर्षे पौषसुदि २ रविदिने श्रीतपागच्छे श्रीदेवसूरिपट्टोधर श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयसुंदरसूरि श्रीजिनचंद्रसूरेरुपदेशेन श्रीपत्तनवास्तव्य प्राग्वाटज्ञातीय सा० लाला सुत सा० नाथू सा० मेघा सुत रूपचंद भीमाख्वीमाभिः स्वश्रेयोर्थं कारापिता।

देवकुलिकासंख्या ८

(२७९)

सं० १४८३ वर्षे भाद्रववदि ७ कृष्णपक्षे गुरौ दिने तपागच्छनायक श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुवनसुंदरसूरेरुपदेशेन कलवर्गावा० उसवालज्ञातीय सा० धणसीसंताने सा० जयता भार्या तिलकू सुत सं० मोखसी श्रीजीराउलाभुवने देवकुलिका कारिता शुभं भवतु श्रीपार्श्वनाथप्रसादात् श्रीः॥

देवकुलिकासंख्या ९

(२८०)

सं० १४८३ भाद्रवावदि ७ गुरौ कृष्णपक्षे श्री-

तपागच्छनायक श्रीदेवसुंदरसूरिपट्टे श्रीसोमसुंदर-सूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुवनसुंदर-सूरेरुपदेशेन कलवर्ग्गानगरे श्रीओसवालज्ञातीय सा० धणसीसंताने सा० जयता भार्या तिलकू सुत सं० समरसी सं० मोखसी श्रीजीराउलाभुवने देवकु-लिका कारापिता शुभं भवतु श्रीपार्श्वनाथप्रसादात्।

देवकुलिकासंख्या १०

(२८१)

सं० १४८३ वर्षे भाद्रवदि ७ कृष्णपक्षे गुरुदिने श्रीतपागच्छे नायक श्रीदेवसुंदरसूरिपट्टे श्रीसोम-सुंदरसूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुव-नसुंदरसूरेरुपदेशेन श्रीकलवर्ग्गानगरे श्रीउसवाल-ज्ञातीय सा० धणसीसंताने सा० जयता भा० तिलकू पुत्र सं० समरसी सं० मोखसी श्रीजीराउलाभुवने देवकुलिका कारापिता. शुभं भवतु श्रीपार्श्वनाथ-प्रसादात्।

देवकुलिकासंख्या ११

(२८२)

सं० १४८३ वर्षे भाद्रपदकृष्णपक्षे ७ गुरौ तपा-गच्छनायक श्रीदेवसुंदरसूरिपट्टे श्रीसोमसुंदरसूरि

श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुवनसुंदरसूरे-रुपदेशेन श्रीकलवर्गानगरे कोठारी छाहड़सामंत-संताने को० नरपति भा० देमाई पुत्र सं० तुकदे पासदे पूनसी मूला (एतैः) श्रीओसवालज्ञातीय कटारिया श्रीराउलाभुवने श्रीदेवकुलिका कारापिता शुभं भवतु श्रीपार्श्वनाथप्रसादात् ।

कटारियागोत्रवरं मदीयं, ताउंपिता से जननी देमाई ।
श्रीसोमसुंदरगुरुर्गुरुवंद्यदेवा, श्रीछीलंजमेडलामात्रशाले (?) ॥१॥

देवकुलिकासंख्या १२

(२८३)

सं० १४८३ वर्षे भाद्रपद कृष्णपक्षे ७ गुरौ श्री-तपागच्छनायक श्रीदेवसुंदरसूरिपट्टे श्रीसोमसुंदर-सूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुवनसुंदर-सूरेरुपदेशेन श्रीकलवर्गानगरे श्रीउसवालज्ञातीय वरहडियागोत्रे झांझासंताने सा० उदयन बा० छीतू सुत सं० आसपालेन जीराउलाभुवने देवकुलिका कारापिता शुभं भवतु श्रीपार्श्वनाथप्रसादात् ।

देवकुलिकासंख्या १३

(२८४)

सं० १४८३ वर्षे भाद्रवकृष्णपक्षे ७ गुरौ श्री-

---

१ यह शंकास्पद है । २ यह वाक्यविन्यास अशुद्ध है ।

तपागच्छनायक श्रीदेवसुंदरसूरिपट्टे श्रीसोमसुंदर-सूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुवन-सुंदरसूरेरुपदेशेन श्रीकलवर्ग्गानगरे नाहरगोत्रे उस-वालज्ञातीय सा० वीगासंताने सा० उदयसी भा० वामलदे सुत सा० पदमसी श्रीजीराउलाभुवने देव-कुलिका कारापिता शुभं भवतु श्रीपार्श्वनाथप्रसादेन।

देवकुलिकासंख्या १४

(२८५)

सं० १४८३ वर्षे भाद्रपदकृष्णपक्षे ७ गुरौ श्री-तपागच्छनायक श्रीदेवसुंदरसूरिपट्टे श्रीसोमसुंदर-सूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुवन-सुंदरसूरेरुपदेशेन कलवर्ग्गानगरे उसवालज्ञातीय सांवलगोत्रे सा० धणसीसंताने सं० माला भा० सं० पूनाई पुत्र जगसी सं० खोखसी भा० बा० हीरू सुत सं० कमलसिंहेन स्वमाता कस्तूरीश्रेयोर्थं श्रीपार्श्व-नाथप्रसादात् श्रीजीराउलाभुवने देवकुलिका कारापिता ।

देवकुलिकासंख्या १५

(२८६)

सं० १४८३ वर्षे भाद्रवकृष्णपक्षे ७ गुरुदिने श्री-तपागच्छनायक श्रीदेवसुंदरसूरिपट्टे श्रीसोमसुंदर-

सूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुवन-
सुंदरसूरेरुपदेशेन श्रीकलवर्गानगरे उसवालज्ञातीय
मलुसीसंताने सं० रतना भार्या बा० वीरू सुत
सं० आमलसिंहेन स्वपुत्र सं० गुणराज सं० हंस-
राजसहितेन श्रीपार्श्वनाथप्रसादात् श्रीजीराउला-
भुवने देवकुलिका कारापिता शुभं भवतु।

देवकुलिकासंख्या १७

(२८७)

सं० १४७४ वर्षे श्रावणमासे शुक्लपक्षे ५ शनी-
वासरे खरतरपक्षे मं० लूणासंताने मं० दूला हापल
संताने मं० मूला पुत्र भीमा हीरू वाल्हण....मं०
हीराभिः...।

देवकुलिकासंख्या १८

(२८८)

सं० १४८३ वर्षे भाद्रपदकृष्णपक्षे ७ गुरुदिने
श्रीकृष्णर्षिगच्छतपापक्षे श्रीपुण्यप्रभसूरिपट्टे गच्छ-
नायक श्रीजयसिंहसूरेरुपदेशेन छासुकीगोत्रे चंद्र-
पुरीय पद्मसिंह पुत्र चंद्रसिंह पुत्र भाणसिंह पुत्र
पूनसिंह भा० पूनसिरि सा० धणसी सं० वावीबाई
पुत्र सं० धनराजेन उएसवंशीयेन श्रीजीराउलाभुवने
चतुष्किकाशिखरं कारापितं शुभं भवतु श्रीः।

देवकुलिकासंख्या १९

(२८९)

सं० १४८३ वर्षे भाद्रवावदि ७ गुरुदिने श्रीतपागच्छनायक श्रीदेवसुंदरसूरिपट्टे श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुवनसुंदरसूरेरुपदेशेन कलवर्ग्गावास्तव्य सोनीहरगोत्रे उसवालज्ञातीय सं खेतसी पुत्र सं० खीमा सं० नहणसी पुत्र सं० करणसी सं० पासवीर भगिनी, भा० तिलकू प्रभृतिभिः श्रीजीराउलाभुवने चतुष्किकाशिखरं कारापितं शुभं भवतु ।

देवकुलिकासंख्या २०

(२९०)

संवत् १४८३ वर्षे भाद्रवावदि ७ गुरुदिने श्रीधर्मघोषगच्छे श्रीमलयचंद्रसूरिपट्टे श्रीविजयचंद्रसूरेरुपदेशेन नाहरगोत्रे उएसवंशे सा० आल्हा पुत्र आल्हा भार्या मणिवाई पुत्र सं० रत्नसिंह पुत्र सरराज कलवर्ग्गावास्तव्येन श्रीजीराउलाभुवने चतुष्किकाशिखरं कारापितं शुभं भवतु श्रीपार्श्वनाथप्रसादात् ।

देवकुलिकासंख्या २१

(२९१)

सं० १४८३ वर्षे भाद्रवावदि ७ गुरुदिने श्री-कृष्णर्षिगच्छे तपापक्षे श्रीपुण्यप्रभसूरिपट्टे गच्छ-नायक श्रीजयसिंहसूरेरुपदेशेन कलवर्ग्गावास्तव्य गांधीगोत्रे उपकेशवंशे सा० ढाकल पुत्र सं० लोहिग पुत्र सा० आंबा भा० पोमाई पुत्र सा० अजेसी बांधव सं० आसुना श्रीजीराउलाभुवने चतुष्किका-शिखरं कारापितं ।

देवकुलिकासंख्या २२

(२९२अ)

सं० १४२४ वर्षे वैशाखवदि ३ गुरौ कलवर्ग्गा-वास्तव्योपकेशज्ञातीय सा० धवकर्मणेन भा० कर्मा-देवी खीमादेवी सहितेन खीमदेवीश्रेयसे श्रीजीरा-उलीपार्श्वनाथदेवकुलिका कारापिता श्रीवृहद्गच्छेश श्रीदिन्नविजयसूरेरुपदेशेन ।

(२९२ब)

सं० १४८३ वर्षे भाद्रपदवदि ७ गुरौ श्रीमल्ल-धारीगच्छे श्रीमतिसागरसूरिपट्टे श्रीविद्यासागरसूरे-रुपदेशेन कलवर्ग्गावास्तव्य गांधीगोत्रे सा० दहल

पुत्र सा० पोपा पुत्र सं० संसुआ भा० संघविणिराजू पुत्र तुकदे सं० सहदेवाभ्यां उसवालज्ञातीयाभ्यां श्रीजीराउलाभुवने चतुष्किका कारापिता शुभं भवतु।

देवकुलिकासंख्या २३

(२९३)

सं० १४८३ भाद्रवावदि ७ तपागच्छनायक श्रीदेवसुंदरसूरिपट्टे श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीमुनिसुंदर-सूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुवनसुंदरसूरिगुरूपदेशेन कलवर्ग्रानगरे श्रीमालज्ञातीय ठ० डूंगर भा० चंपाइदे पुत्र मोखसी रतनसीभ्यां श्रीजीराउलाभुवने चतुष्कि-काशिखरं कारापितं शुभं भवतु।

देवकुलिकासंख्या २८

(२९४)

सं० १४८३ वर्षे वैशाखवदि १३ गुरौ ओसवंशे डुग्घेडशाखे अंचलगच्छे श्रीजयकीर्तिसूरेरुपदेशेन शाह लखमसी सा० भीमल सा० देवल सा० सारंग सा० झांझा भार्या बाई मेघू सा० पुंजा भजादिभिः देवकुलिका कारापिता।

देवकुलिकासंख्या २९

(२९५अ)

सं० १४८३ वैशाखवदि १३ गुरौ उसवंशे

दुग्घेडशाखे अंचलगच्छे श्रीजयकीर्तिसूरेरुपदेशेन सा० लखमसी सा० भीमल सा० देवल सा० सारंग सुत सा० डोसा भार्या लखमादे सा० चापा सा० डूंगर सा० मोखा देरी करावी सही ।

(२९५ब)

सं० १४८३ प्रथमवैशाखवदि १३ गुरौ श्रीअं-चलगच्छे श्रीमेरुतुंगसूरीणां पट्टोद्धरणश्रीजयकीर्ति-सूरीश्वरगुरूपदेशेन सा० सारंग भा० प्रतापदे पुत्र डोसी भा० लखमादे सा० चांपा सा० डूंगर, सारंग सुत भार्या भीखी भा० कौतिकदे पितृव्य पूंजा देहरी श्रीदेवगुरुप्रसादात्कारापितं ।

देवकुलिकासंख्या ३०

(२९६)

संवत् १४८३ प्रथमवैशाखवदि १३ गुरौ अंचल-गच्छे श्रीमेरुतुंगसूरीणां पट्टोद्धरणजगच्चूडामणि श्रीजयकीर्तिसूरीश्वरसुगुरूपदेशेन पट्टणवास्तव्य ओसवालज्ञातीय मीठडिया सा० संग्राम सुत सा० सलखण सुत सा० तेजा भार्या तेजलदे तयोः पुत्राः सा० डीडा, सा० खीमा, सा० भूरा, सा० काला, सा० गांगा, सा० डीडा सुत, सा० नागराज, काला

सुत सा० पासा, सा० जीवराज, सा० जिन-
दास, सा० तेजा द्वितीय भ्राता नरसिंह भा०
कौतिकदे तयोः पुत्रौ सा० पासदत्त सा० देवदत्ता-
भ्यां श्रीजीरावलापार्श्वनाथस्य चैत्ये देहरीत्रयं
कारापिता श्रीदेवगुरुप्रसादात्प्रवर्धमानभद्रं मांग-
लिकं भूयात्।

देवकुलिकासंख्या ३१

(२९७)

सं० १४८३ वर्षे प्रथमवैशाखवदि १३ गुरौ
श्रीअंचलगच्छे श्रीमेरुतुंगसूरीणां पट्टोद्धरणश्रीजय-
कीर्तिसूरीश्वरसुगुरूपदेशेन पत्तनवास्तव्योसवाल-
ज्ञातीय मीठडिया सा० संग्राम सुत सा० सलखण
सुत सा० तेजा भा० तेजलदे तयोः पुत्राः सा० डीडा
सा० खीमा सा० भूरा सा० काला सा० गांगा, सा०
डीडा सुत सा० नागराज सा० काला सुत सा०
पासा सा० जीवराज सा० जिणदास ला० तेजा
द्वितीयभ्राता सा० नरसिंह भार्या कउतिगदे तयोः
पुत्रौ सा० पासदत्त सा० देवदत्ताभ्यां श्रीजीराउ-
लापार्श्वनाथस्य चैत्ये देहरी ३ कारापिता श्रीदेव-
गुरुप्रसादात्प्रवर्धमानभद्रं मांगलिक भूयात्।

देवकुलिकासंख्या ३२

(२९८)

सं० १४८३ वर्षे प्रथमवैशाखवदि १३ गुरौ श्रीअंचलगच्छे श्रीमेरुतुंगसूरीणां पट्टोद्धरणश्रीजयकीर्तिसूरीश्वरसुगुरूपदेशेन पत्तनवास्तव्योसवालज्ञातीय मीठडिया सा० संग्राम सुत सा० सलखणसुत सा० तेजा भार्या तेजलदे तयोः पुत्राः डीडा सा० खीमा सा० भूरा सा० काला सा० गांगा सा० डीडा सुत सा० नागराज सा० काला सुत सा० पासा सा० जीवराज सा० जिणदास सा० तेजा द्वितीयभ्राता सा० नरसिंह भा० कउतिगदे तयोः पुत्राभ्यां सा० पासदत्त सा० देवदत्ताभ्यां श्रीजीराउलापार्श्वनाथस्य चैत्ये देहरी ३ कारापिता श्रीदेवगुरुप्रसादात्प्रवर्धमानभद्रं मांगलिकं भूयात्। सा० डीडा सुत सा० नागराज भार्या नारंगीदेव्या आत्मश्रेयसे देहरी कारापिता।

देवकुलिकासंख्या ३३

(२९९)

संवत् १४८३ वर्षे श्रीअंचलगच्छे श्रीमेरुतुंगसूरीणां पट्टे गच्छाधीश्वरश्रीजयकीर्तिसूरीश्वरसुगुरु-

पदेशेन मीठडिया सा० नरसिंहभार्या श्रा० रूश्रा-त्मश्रेयसे देहरी करापिता शुभं भवतु।

देवकुलिकासंख्या ३४

(३००)

संवत् १४८३ वर्षे प्र० वैशाखवदि १३ गुरौ श्री-अंचलगच्छे श्रीमेरुतुंगसूरीणां पट्टे श्रीगच्छाधीश्वर-श्रीजयकीर्तिसूरीश्वरसुगुरूपदेशेन मीठडिया सा० तेजा भार्या तेजलदे तयोः सुत सा० डीडा सा० खीमा सा० भूरा सा० काला सा० गांगा सा० डीडा सुत सा० नागराज सा० काला सुत सा० पासा सा० जीवराज सा० जिणदास सा० खीमा भार्या खीमादेव्या आत्मश्रेयोर्थं देहरी कारापिता।

देवकुलिकासंख्या ३५

(३०१)

सं० १४८३ वर्षे प्र० वैशाखवदि १३ गुरौ श्री-अंचलगच्छे श्रीमेरुतुंगसूरीणां गच्छाधीश्वर श्रीजय-कीर्तिसूरीणामुपदेशेन श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रीस्तंभ-तीर्थवास्तव्य परीक्षः अमरा भार्या माऊ तयोः पुत्रः परीक्षः गोपाल प० राउल प० ढोला भा० हिचकु पुत्र सा० पूना भा० ऊंदी प० सोमा प० राऊल

सुत प० भोजा, प० सोमा सुत आशा हचकूभ्या-
मात्मश्रेयसे देहरी कारापिता।

देवकुलिकासंख्या ३८ स्तंभोपरि

(३०२)

सं० १५३४ वैशाखवदि १० सोमे सं० रतना साथी न्याति श्रीमालुगोत्रीयक सं० जीवा पुत्र सं० मांडण, जीवन, जीवदेव, खेता सहित मांडेलगढ़थी यात्रा(र्थं) आया।

देवकुलिकासंख्या ४१

(३०३अ)

संवत् १४२१ वर्षे ज्येष्ठसुदि १० बुधे मूलनक्षत्रे सिद्धिनामयोगे श्रीउपकेशज्ञातीय चीचटगोत्रे वीसटान्वये सा० लखण सुत आजडात्मज शाह गोसल सुत सा० देसल भार्या भोली पुत्राः सा० सहज सा० माहण सा० समर, माहण भार्या भावलदे पुत्र सं० धना सा० कडूआ सा० लिंबा भागिनी बाई सुकतु समस्तसार्थैः साध्वीभावलदेवीभिरात्मश्रेयसे श्री-पार्श्वनाथचैत्ये देवकुलिका का० उपकेशगच्छे ककुदा-चार्यसंताने कक्कसूरीणां पट्टालंकारदेवगुप्तसूरीणामुप-देशेन शुभं भवतु।

(३०३ब)

सं० १४८३ वर्षे वैशाखसुदि ७ तिथौ बृहत्तपागच्छाधिपति श्रीदेवसुंदरसूरिपट्टावतंसं श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुवनसुंदरसूरि श्रीजिनसुंदरसूरिरुपदेशेन श्रीमालज्ञातीय...सुत ठ० सारंग पुत्र सा० गुणराज तत्पुत्र नागराजेन स्वभार्या श्रेयोर्थमग्रेशिखरं कारितं ।

देवकुलिकासंख्या ४२

(३०४अ)

स्वस्तिश्रीजयोभ्युदयश्च—

श्रीप्रतिष्ठनृपनन्दनः, सुसीमाङ्गभवो विभुः ।
पद्मप्रभजिनः पातु, रक्तोत्पलदलद्युतिः ॥

सं० १४२१ वर्षे कार्तिकसुदि ९ रवौ हस्तनक्षत्रे कोडीनारनगरवास्तव्य मोढज्ञातीय आगमिक गच्छभक्तसुश्रावक ठ० जाल्हा, समदेव ठ० बीना ठ० सणसव, जयता सुत सं० अजितेन भार्या हिवादे प्रभृतिकुटुंबकलितेन भवजयाय पद्मप्रभस्वामिबिंबं कारितं । नेहड भार्या अहिवदेव्या श्रीपार्श्वनाथदेवकुलिका कारिता आगमिकगच्छोपदेशेन शुभं भूयात् ।

(३०४ब)

सं० १४८३ वैशाखसुदि ७ भट्टारकश्रीदेवसुंदर-सूरिपट्टे श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजय-चंद्रसूरिपट्टे श्रीभुवनसुंदरसूरि श्रीजिनसुंदरसूरि-धर्मोपदेशेन श्रीमालज्ञातीय विजयसी सुत सा० जगतसिंह पुत्र सा० गुणपति रतनसिंह कालु भार्या गज रंगदेवेन कारिता श्रेयोर्थं।

देवकुलिकासंख्या ४३–४४

(३०५–३०६)

सं० १४८३ वर्षे प्रथम वैशाखवदि ७ रवौ श्री-तपागच्छनायकश्रीदेवसुंदरसूरितत्पट्टालंकारभट्टारक श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि-णामुपदेशेन योगिनीपुरवास्तव्य रूला सुत हंसराज पुत्री हंसादे अंगजरंगदेवेन कारितः शुभं भूयात्।

देवकुलिकासंख्या ४५

(३०७)

सं० १४८३ वर्षे वैशाखसु० १३ तपागच्छाधि-राज श्रीदेवसुंदरसूरि तत्पट्टालंकार श्रीसोमसुंदर-सूरि श्रीजयचंद्रसूरेरुपदेशेन रतननगरीय सं० लख-मण सुत राघव संघवी मंत्री गोसल सुत सोम-

ऋभराज तस्य भार्या रंगादे सुत सोमदेवेन कारितो रंगादेव्याः श्रेयोर्थं।

देवकुलिकासंख्या ४६

(३०८ अ)

सं० १२६३ वर्षे आषाढवदि ८ गुरौ श्रीउपकेशज्ञातीय सं० आंबड पुत्र जगसिंह तत्पुत्र उदय भा० उदयादे पुत्र नेणेन अस्य पार्श्वनाथचैत्ये देवकुलिका कारापिता श्रीधर्मघोषसूरेरुपदेशेन श्रीधनमेलकार्थे श्रीरस्तु।

(३०८ ब)

सं० १४८३ वर्षे भाद्रवावदि ७ गुरौ श्रीतपागच्छनायक श्रीदेवसुंदरसूरिपट्टे श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुवनसुंदरसूरिरूपदेशेन खंभाइत वास्तव्य उसवालज्ञातीय सोनी नरिआ पुत्र सो० पदमसिंह भार्या आल्हणदेव्या श्रीजीराउलाभुवने चतुष्किका शिखरं कारापितं।

देवकुलिकासंख्या ४८

(३०९)

पातु वः पार्श्वनाथोऽयं, निष्कलैः सप्तभिः फणैः।
भयानां नारकानां च, जगद्रक्षति संघकान् ॥१॥

(१६१)

संवत् १४१३ वर्षे फा० सु० १३ स्वातिनक्षत्रे बृहद्‌गच्छीय श्रीदेवचंद्रसूरीणां पट्टे श्रीजिनचंद्र-सूरिपट्टालंकारहारोपम श्री श्रीरामचंद्रसूरिभिरात्म-श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथस्य भुवने श्रीपार्श्वनाथदेवस्य देवकुलिका कारिका।

यावद् भूमोऽस्ति यो मेरुर्यावच्चन्द्रदिवाकरः।
आकाशे तपतो यावन्नन्दिता देवगेहिका ॥ १ ॥

शुभं भवतु सकलसंघस्य जीरापल्लीयगच्छस्यैव ॥छः॥

देवकुलिकासंख्या ४९

(३१०)

पातु वः पार्श्वनाथोऽयं, सकलैः सप्तभिः फणैः।
भयानां नारकानां च, जगद्रक्षति संघकान् ॥ १ ॥

सं० १४११ वर्षे चैत्रवदि ६ बुधे अनुराधा-नक्षत्रे बृहद्गच्छीय श्रीदेवचंद्रसूरीणां पट्टे श्रीजिन-चंद्रसूरीणां तपोवनतपोधनेन तपस्वीकरपरिवृतानां श्रीपार्श्वनाथस्य देवकुलिका जीरापल्लीयैः श्रीराम-चंद्रसूरिभिः कारिता छः।

यावद्भूमोस्ति यो मेरुर्यावच्चंद्रदिवाकरौ।
आकाशे तपतो यावन्नन्दतां देवगेहिका ॥ १ ॥

शुभं भवतु सर्वं जयतु।

देवकुलिकासंख्या ५०

(३११)

शिवललाटभ्रूमोद, श्रीशांतिनाथतां बलम्।
कलानिधिममुं मित्रं, नैव दोषाकरे जने॥ १॥

संवत् १४१२वर्षे आश्विनवदि ४ बुधदिने कृतिकानक्षत्रे उपकेशज्ञातीय व्य० अभयपाल भार्या राजुलदे पुत्र व्य० वीकमल भार्या पूंजी पुत्र डूंगर पाल्हा दोल्हाकेन समस्तकुटुंबसहितेन श्रीपार्श्वनाथचैत्ये स्वकुटुंबश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथस्य देवगेहिका कारापिता श्रीविजयसेनसूरीणां शिष्यश्रीरत्नाकरसूरीणामुपदेशेन शुभं भवतु।

देवकुलिकासंख्या ५१

(३१२)

सं० १४८३ वर्षे भाद्रवावदि ७ गुरौ श्रीतपागच्छनायक श्रीदेवसुंदरसूरिपट्टे श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरि श्रीभुवनसुंदरसूरिरूपदेशेनकलवर्ग्गावास्तव्य उसवालज्ञातीय सा० मांडण सीवी पुत्र देसाकेन श्रीजीराउलाभु० देवकुलिकाशिखरं कारापितं।

देवकुलिकासंख्या ५२

(३१३)

संवत् १४८३ वर्षे भाद्रवावदि ७ गुरौ वीसा भार्या वामादे पुत्र गो० सोनानी हीरा।

(३१४)

सं० १४९२ वर्षे मार्गवदि १४ रविदिने घोघा-वास्तव्य आड भा० बा० अहडदे बेटी झमकुदेव्या शिखरं कारापितं सदाश्रेयोर्थं।

पार्श्वनाथदेवकुलिका के छज्जा में—

(३१५)

वामादेसुत सीहड गोठी देहरी कारापिता।

मुख्यचैत्य के पृष्ठिभाग की देवकुलिका के स्तंभ पर—

(३१६)

संवत् १४८७ अर्हनमः गूंदीकर पीपलगच्छे त्रिभविया श्रीधर्मशेखरसूरिशिष्य वा० देवचंद्रः नित्यं प्रणमति मुद्राकलासहिता अर्हं नमः ताल-ध्वजीय वा० सहजसुंदरः नित्यं प्रणमति। अर्हं नमः नमो जिणाणं।

षट्चतुष्किका के स्तंभ पर–

(३१७)

संवत् १८५१ वर्षे आषाढसुदि १५ दिने श्री-जीरावलामंदिर शिखरजीरो सकलभट्टारकपुरंदर-भट्टारक श्री श्री श्री श्री १०८ श्रीरंगविमलसूरी-श्वरेण जीर्णोद्धार कारापितं, हजार ३०२११) रुपिया खरची लाभ लीधो श्रीजीरावलीय गजधर सोमपुरा के० दला, सिरोही द्रव्यसंचिता सा० रूपा सा० जोयता सा० अणदा सा० वीरम सा० रामजी सा० हंजादे काम करापितं।

लोटानातीर्थचैत्ये कायोत्सर्गस्थ प्रस्तर प्रतिमा–

(३१८)

संवत् ११३० ज्येष्ठ शुक्ल ५ श्रीनिर्वृतिकुले श्री-नंदेन आसपालेन कारितं पार्श्वजिनयुग्मसुत्तमं प्र० श्रीशेखरसूरिभिः।

पादुकोपरि–

(३१९)

सं० १८६९ पोषसुदि १३ गुरौ श्रीऋषभदेव-पादुकाभ्यो नमः, भ० श्रीविजयलक्ष्मीसूरिभिः प्रतिष्ठितं लोटीपुरपत्तने।

मंडपगत सपरिकर प्रस्तर प्रतिमा—

(३२०)

संवत् ११४४ ज्येष्ठवदि ४ श्राद्धव्रती प्राग्वाट-वंशीय व्य० यापुश्रेष्ठी देवभार्या श्रीवर्धमानस्वामि-प्रतिमा कारिता, श्रीमद्देवाचार्येण लोटानक आदि-जिनचैत्ये प्रतिष्ठितं सहदेवेनाहेनगोत्रेण।

धातुपंचत्तीर्थी—

(३२१)

सं० १०११ प्राग्वाट सा० नल पु० सिंहदेव भार्या जामलदेव्या का० श्रीशान्तिनाथः प्रतिष्ठिता उप-केशगच्छे श्रीदेवसूरिभिः।

सेलवाड़ा में धातुचतुर्विंशतिः—

(३२२)

सं १३२८ वर्षे वैशाखवदि ५ गुरौ ब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० भूभव भार्या गूरी सुत सरवण (श्रवण) भार्या टमकू सुत धर्मा, उदा, पितृव्यजूगणेन श्रीधर्मनाथचतुर्विंशतिपट्टं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीविमलसूरिपट्टे भट्टारक श्रीबुद्धिसागर-सूरिभि राणपुरवास्तव्यः। श्रीः श्रीः।

मुछालामहावीरचैत्य के दहिनी भमती की छत में–

(३२३)

संवत् १०३३ सांवलसिंह ।

प्राचीनखंडित पद्मासनोपरि–

(३२४)

सं० १२१४ फाल्गुनसुदि ५ दिने श्रीवंशज्ञातीय श्रीभांडवगोत्रे यशोभद्रसूरिसंतानीय शिष्य मंत्री सौहार कृतः श्रीप्रीतिसूरिभिः प्र० ।

वरमाणचैत्ये कायोत्सर्गस्थ प्रस्तरप्रातिमा–

(३२५)

संवत् १३५१ वर्षे माघवदि १ सोमे प्राग्वाट· ज्ञातीय श्रे० झांझण भार्या राउलपुत्रेण सिंह भा० पदमा, लजाल्रू पुत्र पद्मा भा० मोहनि पुत्र विजय· सिंह पुत्र विजयसिंहसहितेन पार्श्वयुगलं कारितं...।

(३२६)

सं० १३५१ वर्षे श्रीब्रह्माणगच्छे मेता मडाहडिय श्रे० पूनसी भार्या पदमल पुत्र पद्मसिंहेन जिनयुग्मं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीः ।

षटचतुष्किका स्तंभोपरि—

(३२७)

सं० १४८६ वर्षे वैशाखवदि १ बुधे ब्रह्माणीयगच्छे भट्टारक श्रीमत्पुण्यप्रभसूरिपट्टे श्रीभद्रेश्वरसूरिपट्टे श्रीविजसेनसूरिपट्टे श्रीरत्नाकरसूरिपट्टे श्रीहेमविमलसूरिभिः पुण्यार्थे रंगमंडपः कारितः।

पद्मशिलोपरि—

(३२८)

संवत् १२४२ वर्षे चैत्र सुदि १५ ब्रह्माण० श्रीमहावीरबिंबं श्रीअजितदेवस्वामिदेवकुलिकायाः पूनिग पुत्री ब्रह्मदत्ता जिणहा पोल्हा नानकदेवी सहितेन पद्मशिलाका कारिता सूत्र० फूहडेन घटिना।

आरखीचैत्ये धातुमूर्त्ती—

(३२९)

सं० १३७३ वर्षे वैशाख सुदि ११ शुक्रे श्रीकुलसंघे भट्टा० श्रीपद्मानंदीगुरूपदेशेन ठ० झांझाकेन मातृ आंजना पुत्रश्रेयोर्थं श्रीचंद्रप्रभबिंबं प्रतिष्ठापितं।

(३३०)

सं० १४०६ वर्षे फागुणसुदि १० गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० सलखा भार्या सोहगदेव्याः श्रेयोर्थं सुत व्य० धांधाकेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीधनेश्वरसूरिभिः ।

दयाणा चैत्ये कायोत्सर्गस्थ प्रस्तरप्रतिमा–

(३३१)

संवत् १०११ आषाढ सुदि ३ शनिश्चरे सनढ भार्या नयणादेवी पुत्र वसिया भार्या वयजलदेवी पुत्र लाखसिंहेन श्रीपार्श्वयुग्मः कारितः, बृहद्गच्छीय श्रीपरमानंदसूरिशिष्य श्रीयक्षदेवसूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

कासोलीचैत्ये मूलनायक परिकर–

(३३२)

संवत् १३४३ वर्षे कछूलिका श्रीपार्श्वनाथ गोष्ठिक श्रेष्ठि श्रीपाल भार्या सिरियादेवी पुत्र नरदेव श्रे० वोडा भार्या वीरी पुत्र श्रीरांकदेव महं० देवसिंह महं० सलखा पु० गला श्रे० कर्मा भार्या अनुपमदे पु० महं० अजयसिंहेन श्रे० भ्रातृ खीदा मोहन

सहितेन श्रे० जगसिंह पुत्र श्रे० धनसिंह शंभुपाल श्रे० पूनड पुत्र धीरा श्रे० साहड पु० विजयसिंह श्रे० झांझण पु० रामसिंहप्रभृति सहितेन पितृ मातृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथपरिकरहारः कारितः कंछो-लीगच्छीयगुरूणामुपदेशेन श्रीः ।

पिंडवाडाचैत्ये धातुप्रतिमा–

(३३३)

सं० १००1 श्रेयांसनाथः श्रीय० पुंवणकारीयं श्रेयोर्थं ।

भीलडियातीर्थचैत्ये धातुपंचतीर्थी–

(३३४)

सं० १३६७ वर्षे वैशाख सुदि ९ प्राग्वाठे श्रे० तिहुणसिंह भार्या हांसलश्रेयोर्थं पुत्र सोमाकेन श्री-आदिनाथबिंबं का०, प्रतिष्ठितं मडाहडियगच्छीय श्रीचंद्रसिंहसूरिशिष्य श्रीरविकरसूरिभिः ।

(३३५)

सं० १५३५ वर्षे माघ वदि ९ शनौ कुतबपुर-वासी प्राग्वाट व्य० काजा भार्या देवी पुत्र भोला-केन भा० राजू सुत हांसा रतादिकुटुंबयुतेन स्व-

पितृश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंब का०, प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।

पादुकायुगलोपरि–

(३३६–३३७)

संवत् १८३७ वर्षे पौषमासे कृष्णपक्षे त्रयोदशीतिथौ चंद्रवासरे भट्टारक श्री श्री श्री १००८ श्री· हीरविजयसूरीश्वरगुरुभ्यो नमो नमः, श्रीहेतविजगयणिपादुका छे श्रीमहिमाविजय ग० पादुका छे।

भूमिगृहे पंचतीर्थी–

(३३८)

सं० १५०७ वर्षे माघे कांबलिग्रामे श्रे० डूंगर भा० रूपी पुत्र मालाकेन भा० टीबू पुत्र कमाहेमादिकुटुंबयुतेन श्रीसुमतिनाथबिंबं का०, प्र० तपागच्छेश श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीजयचंद्रसूरिशिष्य श्री· श्रीरत्नशेखरसूरिभिः श्रीः ।

(३३९)

संवत् १३३४ वैशाखवदि ५ बुधे श्रीगौतमस्वामिमूर्त्तिः श्रीजिनेश्वरसूरिशिष्य श्रीजिनप्रबोधसूरिभिः प्रतिष्ठिता कारिता च सा० वोहिलसुत

व्य० वइजलेन मूलदेवादि भ्रातृसहितेन च स्वश्रेयोर्थं स्वकुटुंबश्रेयोर्थं च ।

पवासनभित्तिस्तंभोपरि—

(३४०)

श्रीजीराउलजी भूः ड ठं कं ।

सोपानस्तंभोपरि—

(३४१)

सा० जस ववल संघपति ।

भीलडीग्रामगृहचैत्ये प्रस्तरप्रतिमा—

(३४२)

सं० १८९२ वर्षे वैशाखसुदि १३ शुक्रे श्रीभीलडिया महाजनसमस्तेन श्रीनेमिनाथबिंबं कारापितं ।

सं० १८९२ वर्षे वैशाखसुदि १३ शुक्रे श्रीचन्द्रप्रभबिंबं कारापितं श्रीभीलडीयानगरना संघसमस्तेन श्रीईडरनगरे प्रतिष्ठितं श्रीतपागच्छे ।

अंबिका प्रस्तरमूर्त्तिः—

(३४३)

सं० १३४४ वर्षे ज्येष्ठसुदि १० बुधे श्रे० लखमसिंहेन अंबिका(मूर्त्तिः) कारिता ।

अधिष्ठायकमूर्ति प्रस्तरमयी–

(३४४)

सं० १२४४ ज्येष्ठसुदि १० बुधे श्रे० लखमसिंहेन कारिता।

नेसडा(पालनपुर)चैत्ये धातुमूर्त्ती–

(३४५)

सं० १२४४ माघसुदि १० सोमे दीसावाल श्रे० राणा सुत आससेन भ्रातृ प्रेमसेन सा० कलत्र रत्न-देवेन भार्या सिरियादेवीश्रेयोर्थं चतुर्विंशतिजिन-प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्रीप्रसन्नसूरिभिः।

(३४६)

सं० १३६९ फा० व० ५ सोमे श्रीमालज्ञातीय पितृखेता मातृ लाछी श्रेयोर्थं सुत साजनश्रावकेन श्रीमुनिचंद्रसूरीणामुपदेशेन श्रीआदिनाथ (पंच-तीर्थी) बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः।

वात्यम(दियोदर)चैत्ये धातुमूर्त्तिः–

(३४७)

संवत् १४४९ वर्षे वैशाखसुदि ६ शुक्रे अंचल-

गच्छे श्रीमेरुतुंगसूरीणामुपदेशेन शाला ठ० राणा भा० भोली सुत ठ० विक्रमेन स्वपित्रोः श्रेयसे श्रीमहावीर(पंचतीर्थी)बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ।

पादुकोपरि–

(३४८)

सं० १७८२ वर्षे वैशाखशुदि १५ गुरौ पं० श्री-जयविजयजी पं० शुक्लविजयजी पं० श्रीनित्यविजय-जी पं० श्रीहीरविजयजी पं० श्रीजीवविजयजी पादुका कारिता ।

वासणा (पालनपुर) चैत्य धातुमूर्त्तिः–

(३४९)

सं० १२४० माघसुदि १३ दिने लक्ष्मणसी रणसी श्रे० पोणदेवपालेन प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्रीयशोदेवसूरिभिः ।

वामभागे प्रस्तरप्रतिमा–

(३५०)

सं० १९५५ फाल्गुनवदि ५ सांथुवास्तव्य ओ० वृ० शा० केशरीमल कस्तूरचंदेन (चंद्रप्रभ)बिंबं

कारितं भट्टारक श्रीराजेन्द्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं प्र० का० असरूपजीतमल्लेन आहोरनगरे श्रीसुधर्मा-तपा(सौधर्मबृहत्तप) गच्छे।

दक्षिणभागे प्रस्तर प्रतिमा—

(३५१)

सं० १९५५ फा० व० ५ समस्तसंघेन (चंद्रप्रभ) बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीराजेन्द्रसूरिभिः प्र० का० जसरूपजीतमल्लाभ्यां आहोरनगरे।

मूलनायक प्रस्तरप्रतिमा—

(३५२)

सं० १९५५ फा० व० ५ गुरौ प्राग्वाट केरासुत रूपा तल्लाजीत्केन (चंद्रप्रभ) कारितं, प्र० भ० श्रीराजेन्द्रसूरिभिः, प्र० का० जसरूपजीतेन तपा-गच्छे आहोरे।

प्रतिष्ठाप्रशस्ति—

(३५३)

श्रीराजेन्द्रसूरि श्रीधनचन्द्रसूरि श्रीभूपेन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः। संवत् १९९७ वर्षे मासोत्तममासे मारवाडी फागुणकृष्णपक्षे षष्ठि प्रवर्तमाने नन्दातिथौ

कुंभलग्ने स्थिरांशे स्वातिनक्षत्रे सोमवासरे प्रभात-समये श्रीवासनानगरवास्तव्य श्रीवीसाश्रीमाली-वंशीय श्रीसंघेन श्रीचन्द्रप्रभुत्रयबिंबं कारितं प्रति-ष्ठितं (स्थापितं) भट्टारक श्रीवर्तमानाचार्यश्री १००८ श्रीविजययतीन्द्रसूरिआदेशात् मुनिसत्तम श्रीमत्-हर्षविजयेन भीमसिंहराज्ये श्रीसौधर्मबृहत्तपागच्छे शुभं भवतु ।

लुआणा(दियोदर) चैत्ये प्रस्तरमूर्त्ति–

(३५४)

सं० १९५२ फागुण वदि ५ गुरौ प्रतिष्ठितं भ० श्रीराजेन्द्रसूरिभिः, सियाणासमस्तसंघेन विमल-नाथ बिंबं कारितं सुधर्मतपागच्छे ।

(३५५)

सं० १९५५ फागुणवदि ५ सियाणावास्तव्य-संघेन (श्रीमहावीर) बिंबं प्रतिष्ठितं भ० श्रीराजे-न्द्रसूरिभिः, कारितेन जसरूपजीतमलेन सौधर्म-तपागच्छे ।

धातुमय–मूर्त्तयः–

(३५६)

सं० १५११ वर्षे,माघसुदि ९ सोमे श्रीश्रीमाल-

ज्ञातीय व्य० पाल्हा भा० पालणदे सुत वानरेन भा० वीकलदे सुपुत्रसहितेन पितृमातृपैतृव्य० जाल्हा भ्रातृ पीताम्र पूर्वज श्रेयोर्थं श्रीअजितनाथ-चतुर्विंशतिपट्टः का० पूर्णि० श्रीराजतिलकसूरिभिः प्र० जाणदीवास्तव्यः ।

(३५७)

सं० १५२२ वर्षे माघसुदि ९ शनौ श्रीप्राग्वाट-ज्ञातीय श्रेष्ठिविरुआ भार्या आजी सुत सं० मांकड़ भार्या सं० झाली सुत सं० अर्जुनकेन भा० अहिवदे-सहितेन अपरा भार्या रामतिनिमित्तं श्रीमुनिसु-व्रतस्वामिबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीबृहत्तपापक्षे प्रभुभट्टारक श्री श्री श्री श्रीजिनरत्नसूरिभिः सहु-आला वास्तव्यः ।

(३५८)

सं० १५२३ वर्षे वैशाखसुदि ३ प्राग्वाटज्ञा० सं० नापा[केन] भा० लखमादे सुत खोना ठाइय, हांसा जावड भावड तद्भार्या अमरी नाथी कनाई मेघाई आसू तत्पुत्र नाकर झटका रूपा सूरादि-कुटुंबयुतेन श्रीविमलनाथबिंबं का०, प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिर्वीरम-ग्रामवास्तव्यः ।

(३५९)

सं० १५१७ वर्षे फागुणसुदि ३ शुक्रे श्रीश्री-मालज्ञातीय साह नागसी भार्या डाही सुत सा० वानर भार्यया आसीनाम्न्या आत्मश्रेयोर्थं श्री-अजितनाथादिपंचतीर्थीबिंबं श्रीविमलगच्छे श्री-धर्मसागरसूरिभिः प्रतिष्ठितं विधिना अहमदाबादे।

(३६०)

सं० १५०५ वर्षे माघसुदि ५ रवौ श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० वगरसी भा० सामलदे सुत समधरेण पितृश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं पूर्णिमापक्षे श्रीगुण-समुद्रसूरीणामुपदेशेन कारितं प्र० विधिना।

(३६१)

सं० १५३२ वर्षे वैशाखसुदि १० शुक्रे श्रीश्री-वंशे मं० धना भार्या धांधलदे पुत्र मं० पांचा सुश्रावकेण भार्या फकू पुत्र महं० सालिगसहितेन पितुः पुण्यार्थ श्रीअंचलगच्छेश श्रीजयकेसरिसूरीणा-मुपदेशेन श्रीसुविधिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन लोलाडाग्रामे श्रीरस्तु।

(३६२)

सं० १६२४ वर्षे शाके १४८९ प्रवर्तमाने माघ-

मासे सुदिपक्षे १ सोमे ओसवंशज्ञातीय श्रे० धरणाभार्या धरणादे पु० देवचंद भा० सुजाणदे प्रेमलदेव्या स्वकुटुंबश्रेयसे साधुपूर्णिमापक्षे भट्टारक श्री श्री श्री श्रीविद्याचंद्रसूरीणामुपदेशेन श्रीवासुपूज्यनाथस्य बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन।

(३६३)

संवत् १५१३ वर्षे पौष वदि २ शुक्रे महाजनी सुहडसी भार्या सुहडदे सुत भोजाकेन भा० अमरीमातृपितृनिमित्तं आत्मश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं का० श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीकमलसूरिभिः प्रतिष्ठितं।

(३६४)

संवत् १५९० वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे पंचमीदिने वृद्धशाखायां मोढज्ञातीय भणशाली मांगा भार्या सोनाई सुत तुलखाई कारितं श्रीशांतिनाथबिंबमात्मश्रेयोर्थं प्रतिष्ठितं तपागच्छे वृद्धशाखायां श्रीधनरत्नसूरिभिः पत्तननगरे।

(३६५)

सं० १५१० फा० सु० ३ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञा० श्रे० मोकल भा० सोहगदे पु० गोइंदेन मातृपितृश्रेयोर्थं पितृव्य भ्रातृतिहुणा भा० मांगूश्रेयोर्थं च श्री-

कुंथुनाथचतुर्विंशतिपट्टः कारितः प्र० श्रीनागेंद्रगच्छे श्रीगुणसमुद्रसूरिभिः वाराहीवास्तव्यसोरतिया।

(३६६)

सं० १६६५ वर्षे वैशाखसुदि ६ बुधे श्रीराजपुर-पुरे श्रीश्रीमालज्ञातीय सा० वहोला नागा भा० सूनी तत्सुत शिवसी[सिंहेन] भार्या रत्नादे सुत सा० मेघसिंघ भार्या वीरादे प्रमुखकुटुंबयुतेन श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिंबं का०, प्र० तपागच्छे भट्टा० श्रीहीर-विजयसूरि भट्टा० श्रीश्रीविजयसोमसूरिभिः।

(३६७)

संवत् १५८२ वर्षे वैशाखसुदि १० शुक्रे श्रीश्री-मालज्ञातीय व्य० वलूटा भा० मांकु सुत सोमा भा० सुहवदे सुत श्रीपाल भा० सिरियादेव्या स्वपूर्वज-निमित्तमात्मश्रेयसे श्रीनमिनाथबिंबं कारितं प्रति-ष्ठितं श्रीचैत्रगच्छे धारणपद्रीयभट्टारक श्रीविजय-देवसूरिभिर्लूदाग्रामवास्तव्यः श्रीः।

(३६८)

सं० १५१५ वर्षे आषाढसुदि ५ श्रीश्रीमालज्ञा० परी० हांसा भार्या वरजु सुत भोजाकेन भार्या सोनू कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीविमलनाथबिंबं कारितं

पूर्णिमापक्षे श्रीसागरतिलकसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं श्रीः।

मोटीपावड(वावताल्लुका)चैत्ये—

(३६९)

सं० १४७२ ज्येष्ठवदि ११ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय पितृ वुहरा मा० माल्ही पितृमातृनिमित्तं सुत हेमा धूडा धनादियुतैः श्रीशांतिनाथश्चतुर्विंशतिजिनपट्टः करापितं प्र० नागेंद्रगच्छे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः।

जेतडा(थराद)चैत्ये प्रस्तरप्रतिमा—

(३७०)

सं० १८३३ वर्षे माघशुक्ल ७ शुक्रे श्रीपार्श्वनाथजिनबिंबं कारापितं गेलाग्राम समस्तश्रीसंघ श्रीश्रीमालज्ञातीयेन भ० श्रीविजयजिनेंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीतपागच्छे।

(३७१)

सं० १८३३ माघ सु० ७ शुक्रे श्रीचंद्रप्रभजिनबिंबं का० ग्रामगेलासमस्तसंघे श्रीश्रीमालज्ञातीयेन भ० श्रीविजयजिनेन्द्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीतपागच्छे।

धातुपञ्चतीर्थी--

(३७२)

सं० १४२५ वर्षे वैशाखसुदि ११ दिने श्रीब्रह्माण-गच्छे श्रीमालज्ञातीय पितामही रामादेवी पितृनाथा मातृलीलादेवी श्रेयसे ठ० श्रीपालेन श्रीशांतिनाथ-बिंबं कारितं प्र० श्रीबुद्धिसागरसूरिभिः।

(३७३)

सं० १४८८ वर्षे मार्गवदि ५ गुरौ श्रीमाल-ज्ञातीय व्य० आंजण भार्या भोली सुत व्य० आका-केन श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसोम-सुंदरसूरिभिः श्रेयस्करी श्रीः।

(३७४)

सं० १४२५ वर्षे माघसुदि ८ व्य० जयता भार्या हांसीदे पुत्र बाहडेन स्वपितुः पितृव्यश्रेयोर्थं श्री श्रीपद्मप्रभबिंबं कारापितं।



लेखों का अनुवाद और अवलोकन।



थरादनगर और उसका प्राचीन गौरव—

थराद जिसको थिराद्र, थिरापद्र या थिरपुर भी कहते हैं, विक्रम सं० १०१ में वसा है। इस नगर का वसानेवाला थिरपालधरु था, जो चौहाणवंशीय क्षत्री था। वह भिन्नमाल का रहनेवाला था। वह आशापूरी माता का परम भक्त था। ये दो भाई थे। पिता की मृत्यु के पश्चात् दोनों भाईयों में कलह उत्पन्न हुआ। यह आशापूरी माता की मूर्ति गाड़ी में बिठा कर अपने स्वजनों के सहित भिन्नमाल का त्याग कर उत्तर-गुजरात बनासकांठा की ओर चल पड़ा। इसके साथ में महात्मा मोहनदास और वीरवाडीया कुटुम्ब भी था। अभी जिस स्थल पर थरादनगर वसा है, वहाँ आते-आते गाड़ी की नाड़ (नाण) टूट गई। उपरोक्त भूमि को पवित्र समझ कर और नाड़ के टूटने को माता

का संकेत मान कर इन्होंने गाड़ी वहीं रोक दी और आशा-पूरी माता को वहीं प्रतिष्ठित की। नाड़ टूटी, इसलिये माता का नाम भी 'नाणदेवी' पड़ गया, जो अभी तक चला आता है। नाणदेवी का उपरोक्त स्थान थराद से ईशान कोण में अर्ध-मील के अन्तर पर है। जैन जैनेतर सब ही लोग इसको मानते हैं।

प्राचीन लोग शकुन, शुभ लक्षणों और संकेतों में अधिक विश्वास रखते थे। उपरोक्त भूमि पर उन्होंने कुत्तों के पीछे शशकोंको दौड़ते हुए देखा। बस, उन्होंने भूमि को वीरप्रस-विनी समझा और वहीं पर बस गये। ग्राम का नाम थिर-पालधरु के नाम के पीछे 'थिरपुर' रक्खा, जो आज थराद के नाम से विख्यात है।

थराद के उत्तर में मारवाड़, पूर्व में पालनपुर, दक्षिण में सुईग्राम और पश्चिम में वाव है। बढ़ते बढ़ते थराद एक अति विशाल नगर बन गया। धरुवंश के चौहानक्षत्रियों का थराद पर ७६५ वर्ष तक अर्थात् विक्रम सं० १०१ से सं० ८६६ (ईस्वीसन् ७८०) तक राज्य रहा। धरुवंश के राजा, वीरवाड़ी एवं महात्मा मोहनदास के वंशजों के सदा आभारी रहे और ठेठ तक उनका अच्छा सम्मान रक्खा।

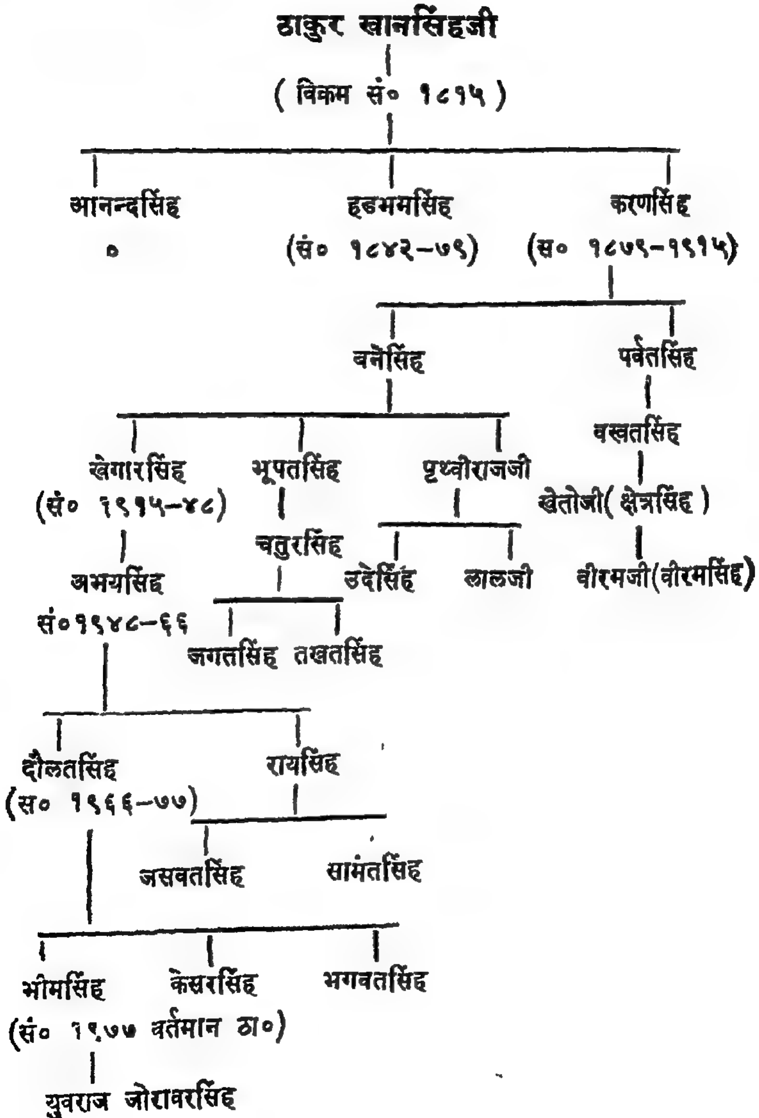
धरुवंश के क्षत्री आज भी थराद के आस-पास के ग्रामों में बसे हुए हैं और जैनधर्मी हैं। वाव के नरेशों का जब राज्यतिलक होता है तब वीरवाड़ीवंश का पुरुष अपने अंगूठे को चीर कर रक्त निकालता है और मोहनदास के वंश का पुरुष उस रक्त से सिंहासनासीन होनेवाले नरेश के ललाट पर तिलक करता है। जैनघर भी इन दोनों के वंशजों के पुरुषों को पुत्र-लग्न के समय एक एक टका प्रदान करते हैं। यह पद्धति उनके पूर्व सम्बन्ध एवं गौरव को प्रकट करती है। धरुवंशियों के दीर्घकालीन शासन में थराद की अच्छी उन्नति हुई। जैन आबादी बढ़ते बढ़ते दो हजार सातसौ घरों तक बढ़ गई। राजा थिरपाल धरु स्वयं जैन था। थराद में जैनियों का सदा अतिशय प्रभाव रहा।

अन्य कुलों एवं यवनों का राज्य—

धरुक्षत्रियों के शासनकाल के पश्चात् थराद में परमारों का राज्य रहा। अन्तिम परमार राजा निस्सन्तान था। यह धर्म से जैन था। उसने नाडोल के राजा को, जो उसका भाणेज था थराद का राज्य देकर स्वयं भागवती दीक्षा ग्रहण करली। थराद के ऊपर नाडोल के चोहानों का राज्य

उनकी छः पीढ़ी पर्यन्त रहा। अन्तिम चौहान राजा पूंजाजी के ऊपर मुसलमानोंने आक्रमण किया और थराद को जीत लिया। इस प्रकार संवत् १२३० से १३०० तक थराद पर यवन अधिकार रहा। मुसलमानों के हाथ में थराद के चले-जाने पर राणा पूंजाजी की विधवा राणी अपने शिशु लड़के को लेकर अपनी माता के घर चली गई। कुंवर जब युवा-वस्था को प्राप्त हुआ तो वीर निकला और थराद के राज्य के लोगों की सहाय पाकर उसने पुनः थरादराज्य पर अपना अधिकार कर लिया। उसने ' वाव ' नामक नवीन-नगर को अपनी राजधानी बनाई, जहाँ पर अभी तक भी उसके वंशज राज्य कर रहे हैं। यवनों के भय से थराद से उसने राजधानी उठा ली। अवसर पाकर नाडोल के चौहा-नोंने थराद पर पुनः अधिकार कर लिया। परन्तु अठारहवीं शताब्दि के उत्तरार्ध में थराद पर राधनपुर के नवाबों का अधिकार हो गया जो विक्रमसं० १८१५ तक रहा। विक्र-मसं० १८१५ में वर्तमान ठाकुरों के पूर्वज खानजीने थराद पर अधिकार किया जो अद्यावधि उनके वंशजों के अधिकार में ही चला आ रहा है। थराद के वर्त्तमान ठाकुर (दरबार) भीमसिंहजी है और उनके ज्येष्ठ पुत्र युवराज जोरावरसिंहजी हैं। यह तो हुआ थराद के ऊपर शासन करनेवाले राजा और उनके शासनकालों का संक्षिप्त परिचय।

वर्तमान ठाकुर का वंशचक्र—



यवन आक्रमण के पूर्व थराद-

थराद की जाहोजलाली और आभूश्रेष्ठी—

धरुवंशीय, परमार और नाडोल के चौहान इस प्रकार तीनों कुलों का थराद पर राज्य विक्रम की तेरहवीं शताब्दि के पूर्वार्द्ध तक रहा। इतनी शताब्दियों तक हिन्दू राज्य रहने के कारण थराद व्यापार, कला, वाणिज्य, व्यवसाय, धन और समृद्धि में गुर्जर और सौराष्ट्र के प्रमुख नगरों में गिना जाने लगा। इस नगर में जैनियों का सदा प्रभुत्व रहा। अनेक धनी मानी कोटीध्वज जैन यहां और इसके ग्रामों में रहते थे। विक्रमसं० ११११ में जब मरुधरप्रदेश के प्रसिद्ध, ऐतिहासिक, समृद्ध नगर भिन्नमाल को जीत कर मुसलमानोंने नष्ट-भ्रष्ट किया, तब वहाँ से ग्यारह कोटीद्रव्य का स्वामी शंखसेठ का वंशज सहसाशाह और श्रीमाली-ज्ञातीय काश्यपगोत्रीय श्रे० जूना का वंशज थरादराज्य के अचवाड़ीग्राम में आकर बसे। इसी प्रकार श्रीमालीज्ञातीय वृद्धशाखीय इक्कीस कोटीद्रव्य के स्वामी सोमासेठ का वंशज तिहुअणसी(त्रिभुवनसिंह) और तीन कोटिद्रव्य का स्वामी श्रीमालीज्ञातीय चंडीसर का वंशज वीरदास खेनप में आकर वसे। इस प्रकार थरादराज्य में विपुल धनशाली श्रीमन्तों का प्रभुत्व बढ़ता ही गया और वह अक्षुण्ण रहा।

थराद में श्रीमालीज्ञातीय श्रेष्ठी संघपति आभू अधिक

गौरवशाली एवं प्रसिद्ध श्रीमन्त हुआ है, वह अपार वैभव-शाली था। जैसा वैभवपति था, वैसा ही वह धर्मानुरागी एवं उदार श्रीमन्त था। उसने अपनी आयु में तीनसौ साठ साधारण स्थितिवाले स्वधर्मी ज्ञाति भाईयों को श्रीमन्त बनाया। तीर्थयात्रा में उसने बारह क्रोड़ स्वर्ण-महोर व्यय की। उसकी तीर्थयात्रा में ७०० जिनमन्दिर थे। उसने तीन क्रोड़ टंक व्यय करके सर्व आगमसूत्रों की एक एक प्रति सुवर्णाक्षरों में और द्वितीय प्रति स्याही से लिखवाई तथा उसने सातो धर्मक्षेत्रों में सात क्रोड़ द्रव्य व्यय किया। थिरापद्रगच्छ की उत्पत्ति थरादनगर में हुई। थिरापद्रगच्छीय वादिवेताल श्रीशान्तिसूरि विक्रमसं० ११८५ में विद्यमान थे। इस गच्छ का जन्म थराद की उन्नति का परिणाम है।

थराद के उन्नति काल में वहाँ पर एक अति विशाल जैनमन्दिर बना था, जिसके १४४४ स्तम्भ थे। दुःख है कि आज वह नामशेष रह गया है। उस जगह आज केवल मृत्तिकामय जमीन है। यह मुसलमान बंधुओं का कार्य है। आज भी उस जगह पर दो फीट लम्बी ईंटें निकलती हैं तथा समय समय पर अपूर्व कारीगरी के अनेक खंडित प्रस्तरखण्ड निकलते रहते हैं। महाराजा गुर्जरसम्राट् कुमारपालने भी थराद में एक विशाल चतुर्मुख जिनालय बनवाया था। एक प्रतिमा पर प्रसिद्ध, हेमचन्द्राचार्य का नामोल्लेख भी है। परन्तु तेरहवी शताब्दि के पूर्वार्द्ध में

थराद पर यवनों का घातक आक्रमण हुआ और इस आक्रमण से थराद की जाहोजलाली को बड़ा धक्का लगा। १४४४ स्तम्भों का मन्दिर तथा कुमारपाल का बनवाया मन्दिर तोड डाला गया। थराद का व्यापार, वाणिज्य भी नष्ट हो गया। धीरे धीरे थराद की स्थिति सुधरी, परन्तु वह पूर्व की शोभा फिर नहीं आ पाई। सं० १२३० में थराद पर यवनों का आक्रमण हुआ था और सं० १३०० तक थराद यवनों के अधिकार में रहा। चौदहवीं शताब्दि के प्रारंभ में पुनः इस पर नाडोल के क्षत्रियों का और बाद पर जैसा ऊपर कहा जा चुका है राणा पूंजा के पुत्रने अपना राज्य पुनः स्थापित किया। इस प्रकार थरादराज्य के दो विभाग हो गये, परन्तु यवनराज्य तो समाप्त हो गया। चौदहवीं शताब्दि से थराद यवनों के आक्रमण से बचा और उसकी शोभा एवं समृद्धि तो घटी, परन्तु आबादी पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ पाया। क्योंकि यवनराज्य केवल सत्तर (७०) वर्ष पर्यन्त ही रहा, अधिक नहीं रह सका।

इस शिलासंग्रह में २७३ शिलालेख तो केवल थराद के ही हैं। ये लेख थराद के जिनालयों में विराजित धातुमय चौवीशियों, पंचतीर्थियों और छोटी बड़ी प्रतिमाओं के हैं। इनमें जूना से जूना लेख ग्यारहवीं शताब्दि का है। शताब्दि वार लेखों की संख्या इस प्रकार है।

कि थराद में जैन-वस्ती घट अवश्य गई थी, परन्तु इतनी अवश्य रही कि जहाँ प्रसिद्ध प्रसिद्ध गच्छों का निर्वाह प्रायः हो सकता था। लेखों में सब से अधिक लेख पिप्पलगच्छ के हैं, फिर पूर्णिमा, ब्रह्माण और तपागच्छों के अन्य गच्छों के लेखों से अधिक हैं। परन्तु यह तो स्पष्ट हैं कि थराद में लगभग वीश गच्छों के अनुयायियों के या उनके अनुरागियों के घर रहे हैं। जहाँ एक साथ १०-१५ गच्छों के घर मिलते हों, वह नगर उस काल में अवश्य समृद्ध और उन्नत ही माना जायगा। शताब्दिवार लेखों में अधिक लेख पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दि के हैं। जिसमें सोलहवीं शताब्दि के तो १६० लेख हैं। ये लेख विविध गच्छों के भिन्न भिन्न आचार्यों के एवं श्रावकों के नामों से संगर्भित हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि थराद एक बार पुनः पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दियों में समृद्ध, वैभवशाली और धर्मकृत्य, व्यापार-वाणिज्य में आगे बढ़ गया था। लेखों में ७० लेख श्रीमालीज्ञाति के हैं। अतः यह भी सिद्ध है कि थराद में श्रीमालीज्ञाति के घर अधिक संख्या में थे। केवल लेखों की संख्या पर ही गच्छ, समृद्धि और ज्ञाति का लेखन किया गया हो, सो बात नहीं है। विभिन्न संवत्, विभिन्न श्रावक और भिन्न भिन्न नाम के आचार्यों पर अधिक जोर रख कर ऐसा लिखा गया है।

विक्रमसं० १८६९ में थरादराज्य में भयंकर दुष्काल

पड़ा और अनेक कुल थराद छोड़ कर अन्यत्र चले गये। अहमदाबाद, पालनपुर, राधनपुर, डीसा, थानेरा, थांगधरा, चडोतरा, वीसनगर, वीरमगाम, और काठीयावाड़ नगरों में तथा दक्षिण में पूना आदि नगरों में ऐसे अनेक कुल हैं जो 'थरादरा' कहलाते हैं। इन कुलों में से अनेक लोग जुहार करने के लिये थराद में नाणदेवी और झमकाल देवी के दर्शनों को प्रतिवर्ष आते हैं। इस समय थराद में श्वेताम्बर जैनों के ६०० घर आबाद हैं और ये श्रीमाल जैन कहाते और सभी त्रिस्तुतिक आमनाय वाले हैं।

सन् १९४८ में इन पंक्तियों के लेखक को आचार्य-देव श्रीमद्विजययतीद्रसूरीश्वरजी महाराज के दर्शनार्थ थराद जाने का अवसर प्राप्त हुआ था। मैंने थरादनगर को दूर दूर तक उसके बाहर घूम कर देखा अनेक ढेर और खण्डे-हर देखे। कलापूर्ण प्रस्तर-खण्ड देखे। अधिक आकर्षित करनेवाली एक मस्जिद देखी, जो राजप्रासाद के सिंहद्वार के बांई ओर है। उसमें जैनमन्दिरों के खण्डित पत्थर लगे हुए देखे। आंगन में एक खंड जड़ा हुआ था, जो खुला कह रहा था कि मैं मन्दिर की देहली के बाहर का पत्थर हूँ। काल के अनेक उत्पात सहन करके भी थराद आज भी सुखी, समृद्ध और गौरवशाली है।

श्रीवीरचैत्य में वासुपूज्यमन्दिर की धातु पंचतीर्थियाँ

(१)

सं० १५०५ माघ शु० ९ शनिश्चरवार के दिन धंधुका निवासी श्रीमालज्ञातीय व्यव० पर्वत भार्या खीमलदेवी पुत्री मांजुबाईने अपने कल्याणार्थ आगमगच्छीय श्री हेमरत्नसूरिगुरु के उपदेश से श्रीसुविधिनाथ का पंचतीर्थी बिंब प्रतिष्ठित करवाया।

(२)

सं० १५१५ ज्येष्ठ शु० ९ शुक्रवार के दिन गुर्जरवाड़ा निवासी श्रीमालज्ञातीय व्यव० जेसा भार्या जानूदे पुत्र मूलचंदने पूर्णिमागच्छीय श्रीसाधुरत्नसूरि के उपदेश से श्रीसुविधिनाथ का पंचतीर्थी बिम्ब करवा कर उसकी प्रतिष्ठा करवाई।

(३)

सं० १५१३ पौषकृ० ५ रविवार को श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठि-महाजन धना, सारंग, गेला, धर्मा, राजा, दूदा, नारद आदि कुटुम्बियोंने चैत्रगच्छीय श्रीलक्ष्मीदेवसूरि के द्वारा पूर्वज सांगा के निमित्त श्रीअजितनाथ प्रतिमा(पंचतीर्थी) प्रतिष्ठित करवाई।

(४)

सं० १५०१ पौषकृ० ६ श्रीश्रीमालज्ञातीय मंत्रीसन्ताने पिता श्रे० जेसिंग(जयसिंह), माता पत्रापदी, स्वभार्या राजूबाईने माता-पिता, पुत्र के श्रेयोर्थं सिद्धान्तगच्छीय श्रीसोमचन्द्रसूरि के द्वारा श्रीकुन्थुनाथजी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया। घर में सर्वत्र सौभाग्य हो।

(५)

सं० १५२८ वैशाख शु० ३ शनिवार के दिन भोअलीग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० वापा भार्या रतनूदेवी के पुत्र वनवीरने पिप्पलगच्छीय त्रिभवीया भट्टा० श्रीधर्मसागरसूरि के द्वारा श्रीविमलनाथ प्रभु का पंचतीर्थी बिम्ब स्वभार्या शाणीदेवी, माता, पिता और पितृजनों के श्रेयार्थ प्रतिष्ठित करवाया।

(६)

सं० १४२१ वैशाखशु० ५ शनिवार के दिन पुत्र हेलाकने नागेन्द्रगच्छीय श्रीगुणाकरसूरि के द्वारा अपने पिता जयन्त, माता जयतलदेवी और पितृव्य कर्मण (कर्मराज) के श्रेय के लिये श्रीपार्श्वनाथ प्रभुका पंचतीर्थी बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(७)

सं० १४३३ वैशाखशु० ९ शनिवार के दिन कोरण्टक-

गच्छीय श्रीनन्नाचार्यानुयायी ओसवालज्ञातीय भंडपुत्र-शाखीय(भणशाली) श्रे० महिमदेव भा० मंदोदरी के पुत्र नरश्रेष्ठीने स्वमाता पिता के श्रेयके लिये श्री शान्तिनाथप्रभु का पंचतीर्थी बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीभावदेव-सूरिने की।

(८)

सं० १५१९ मार्गसिर गुरुवार के दिन श्रीमालज्ञातीय लघुशाखीय व्य० जेसा (जसराज) भार्या हरखू (हर्षबाई) के पुत्र व्य० राजाने स्वभार्या भवकूबाई सहित अपने कल्याणार्थ पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुरत्नसूरि के उपदेश से श्रीपार्श्वनाथ का पंचतीर्थी बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(९)

सं० १५१२ मार्गसिर शुक्ला पूर्णिमा सोमवार के दिन भावडारगच्छीय श्रीमालज्ञातीय व्य० पद्मराज, भा० पाल्हणदेवी पुत्र माला(मालराज) भा० माल्हणदेवी पुत्र रत्नराज, पर्वत, संघा, मोकल, देवा, जाणा (ज्ञानराज) सहित व्य० मालाक(मालराज)ने अपने पितामह के भ्राता व्य० धड़सिंह के कल्याणार्थ श्रीसुमतिनाथ का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीकालकाचार्यसन्तानीय पूज्य श्रीवीरसूरि के द्वारा हुई।

(१०)

सं० १५८३ ज्येष्ठ शु० ११ शुक्रवार के दिन उएस (उपकेशगच्छीय) श्रीककुदाचार्यसन्तानीय उपकेशज्ञातीय श्रेष्ठिगोत्रीय (सेठिया) शाह महताजू पुत्र सलखण भार्या पुंजारदेवी पुत्र हरिराजने भा० हेमादेवी पुत्र भीमराज सहित श्रीशांतिनाथ का पंचतीर्थी बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीयक्षदेवसूरि द्वारा हुई।

(११)

सं० १५३६ श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० नाथा भा० धर्मिणी-बाई पुत्र रलामण भा० गूरीबाई. शिवदत्तने स्वभार्या कुअरि-बाई आदि परिजनों के सहित श्रीआदिनाथ का बिम्ब अपने भ्राता रलामण के कल्याणार्थ पूर्णिमापक्षीय श्रीपुण्य-रत्नसूरि के उपदेश से करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा विधिपूर्वक काकरग्राम में हुई।

(१२)

सं० १५२८ वैशाखशु० ३ शनिवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० उदिरा (उदयन) भा० फटूबाई पुत्र मोटाक (मोटमल)ने अपने पिता माता एवं पितामह वापा और अपने कल्याण के लिए श्रीशांतिनाथप्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय त्रिभविया भट्टारक श्रीधर्म-सागरसूरिके द्वारा भोयलीग्राम में हुई।

इस बिम्ब की प्रतिष्ठा होने की तिथि वही है जो लेखाङ्क ५ में है। दोनों लेखों में आचार्य, संवत् और ग्राम भोयली ही है। अतः वणवीर और उदिरा सहोदर हैं।

(१३)

सं० १४१७ वैशाखशु० २ रविवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० लीम्बा, भा० नामलदेवी पुत्र सहजाने भा० सहजलदेवी पिता लींबा के कल्याणार्थ श्रीवासुपूज्यस्वामी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीउदयानन्दसूरिके पट्टाधीश श्रीगुणदेवसूरि के द्वारा हुई।

(१४)

सं० १४९५ आषाढशु० ९ रविवार के दिन ब्रह्माण-गच्छीय श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० गोरा भा० देल्हणदेवी के पुत्र भारमल भा० पोमादेवी के पुत्र डूंगर और भाखरने पितृजनों के श्रेयार्थ श्रीधर्मनाथजी का बिम्ब करवाया, जो श्रीमद् जज्जगसूरि के पट्टाधीश पज्जुन्नसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित हुआ।

(१५)

सं० १४२९ माघकृ० ५ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० अभयसिंह भा० आल्हणदेवीने पितृ कमा-(कर्मचन्द्र) के कल्याणार्थ श्रीमूलनायक पार्श्वनाथप्रभु का श्रेयस्कर बिम्ब श्रीनरप्रभसूरि के उपदेश से करवाया।

(१६)

सं० १५०१ पौषकृ० ९ शनिवार के दिन अचलगच्छेश्वर श्रीजयकीर्त्तिसूरि के उपदेश से शा० काल्हू भार्या कमलादेवी पुत्र हरिषेनने स्वस्त्री माल्हणदेवी के कल्याणार्थ श्रीअजितनाथ का बिम्ब करवाया और वह श्रीसंघ द्वारा प्रतिष्ठित हुआ।

(१७)

सं० १५१३ पौषकृ० ५ रविवार के दिन वावीग्राम निवासीश्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० तिहुणा(त्रिभुवन) भा० कर्मादेवी के पुत्र डाहाने भा० धारणदी और मेचू पुत्र भाखर सहित माता पिता के कल्याणार्थ श्री अजितनाथ का बिम्ब करवाया, जो चित्रगच्छीय भ० श्रीलक्ष्मीदेवसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित हुआ।

(१८)

सं० १५११ माघशु० ५ सोमवार (गुरुवार) के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० वानर के पुत्र जोधराज की स्त्री रत्नूबाईने अपने पति के आत्मकल्याण के लिये जीवितस्वामि श्रीकुन्थुनाथ का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीराजतिलकसूरि के उपदेश से श्रीसूरि द्वारा हुई।

---

१ लेखाङ्क ९४, १२१, ३५६ को देखते हुए सोमवार के स्थान पर गुरुवार ही चाहिये।

(१९)

सं० १५०९ माघशु० ५ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० सोना(सोनमल) ने स्वभार्या राजीबाई, भ्राता वदा (वृद्धिचन्द्र), भा० पूरीबाई के निमित्त श्री-सुमतिनाथ का बिम्ब करवाया, जो सिद्धान्तगच्छीय श्री-सोमचन्द्रसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित हुआ।

(२०)

सं० १३४९ ज्येष्ठशु० २ भावडारगच्छीय शा० सोमा (सोमचन्द्र) भा० सोमश्री के पुत्र छाडा, नागा, गजधरने स्वमातृ के कल्याणार्थ श्रीपार्श्वनाथ का बिम्ब करवाया, जो श्रीविजयसिंहसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित हुआ।

(२१)

सं० १४३२ फाल्गुनशु० २ शुक्रवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय व्य० बागमल भार्या विजयश्री के कल्याणार्थ पुत्र विजवकर्णने श्रीनरप्रभसूरि के उपदेश से श्रीवासुपूज्य-स्वामी का बिम्ब करवाया।

(२२)

सं० १५०९ माघशु० १०. शनिवार के दिन थिरापद्र निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय पितामह हापा पितामही हांसल-देवी पुत्र चूंडा भा० चांपलदे सुत देवाने भा० लूणादे सहित

पिता माता, पितृजन चांपा, हेमा, भ्रातृ वीजा और अन्य सर्व पूर्वजों के कल्याणार्थ श्रीशीतलनाथ चतुर्विंशतिपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीसोमचन्द्रसूरि के पट्टाधीश श्री उदयदेवसूरि के द्वारा हुई।

सेठों की सेरी के श्रीवीरचैत्य की चौवीशी तथा पंचतीर्थियां—

(२३)

सं० १४८३ ज्येष्ठकृ० ८ रविवार के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० सिम्बा भा० लखमादे पुत्र सलखा भा० प्रेमलदे पुत्र गोला, लीम्बा, सिंहने अपने माता पिता के कल्याणार्थ श्री नेमिनाथप्रभु का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा ब्रह्माणगच्छीय श्रीवीरसूरि के पट्टाधीश श्रीमणिचन्द्रसूरिने की।

(२४)

सं० १५०५ चैत्रकृ० १३ रविवार के दिन राथरनिवासी श्रीब्रह्माणगच्छीय श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० वाघण पुत्र मेघा (मेघराज) भार्या प्रीमलदेवी पुत्र खीमा, गोसल, देसल, गोसल की पुत्री सिंगारदे पुत्र नडुआ, कर्मसिंहने अपने पितृजनों के श्रेयार्थ श्रीविमलनाथ चतुर्विंशतिपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीपज्जुन(प्रद्युम्न)सूरिने की।

(२५)

सं० १५२५ फाल्गुनशु० ७ शनिवार के दिन तड़वाड़ा-

निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय शाहु रामा श्रे० कुंभा, भा० काश्मीरश्री पुत्र लापाकने भा० फलीबाई, पुत्र धना, भा० झाबलीबाई, पांची बाई, पुत्र मेहराज आदि कुटुम्ब सहित अपने कल्याणार्थ श्रीशान्तिनाथ चतुर्विंशतिपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा ब्रह्माणगच्छीय श्रीवीरसूरिने की।

(२६)

सं० १५२८ चैत्रकृ० १० गुरुवार के दिन श्रीश्रीवंशीय मंत्री सांगा भा० टीबूबाई पुत्र मं० सुश्रावक रत्नाने भा० धारिणीदेवी पुत्र वीरा, हीरा, नीना, वावा सहित पितृव्य मंत्री सहसा के श्रेयार्थ अंचलगच्छीय गुरु श्रीजयकेशरसूरि के उपदेश से श्रीसुविधिनाथ प्रभु का बिम्ब करवाया और प्रतिष्ठा श्रीसंघने करवाई।

(२७)

सं० १६१७ ज्येष्ठ शु० ५ काकरग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० नवा भा० धनीबाई पुत्र श्रे० धरणा भा० प्रेमी पुत्र जेसा रत्नाने श्रीविमलनाथप्रभु का बिम्ब नागेन्द्रगच्छीय भट्टा० श्रीधरसंघसूरि के पट्टाधीश भट्टा० श्रीज्ञानसागरसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(२८)

सं० १५१३ माघकृ० ७ बुधवार के दिन प्राग्वाटज्ञातीय लघुसन्तानीय परीक्षक बाला (बालचन्द्र) भा० डाही-

बाई पुत्र मोजा(भोजराज) ने भा० लाछीबाई, पुत्र नाथा, सज्जन सहित पिता माता के कल्याणार्थ श्रीशान्तिनाथ का बिम्ब करवाया, जो पूर्णिमागच्छीय श्रीमाणियाभट्टा० श्रीजय-शेखरसूरि के उपदेश से लायताग्राम में प्रतिष्ठित हुआ।

(२९)

सं० १५८० वैशाख शु० १३ शुक्रवार के दिन श्री-श्रीमालज्ञातीय मं० हीरा भा० राखीबाई पुत्र महं० हेमा भा० हमीरदे पुत्र मं० तेजाने भा० नीतिबाई, पुत्र डूंगर, भूंगर, माणा सहित अपने कल्याणार्थ श्रीसुपार्श्वनाथ का बिम्ब पूर्णिमागच्छीय श्रीपुण्यरत्नसूरि के पट्टाधीश श्रीसुमतिरत्न-सूरि के उपदेश से विधिपूर्वक प्रतिष्ठित करवाया।

(३०)

सं० १५१७ वैशाखशु० ३ कालुआ निवासी प्राग्वाट-ज्ञातीय व्य० कूंपा भा० रूडीबाई पुत्र देवसी(देवसिंह) भा० वाल्हीबाई पुत्र देपाल(देवपाल)ने भांडा(भंडपाल) आदि कुटुम्ब सहित अपने कल्याणार्थ श्रीविमलनाथ का बिम्ब करवाया, जो तपागच्छीय श्रीरत्नशेखरसूरि के पट्टधर श्रीलक्ष्मीसागरसूरि द्वारा प्रतिष्ठित हुआ।

(३१)

सं० १५६३ फाल्गुन शु० ८ शनिवार के दिन थिरा-

पद्रनगर निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय आजु(अर्जुन) सखा व्य० मेघा पुत्र आशा भा० अमरीबाईने अपने कल्याणार्थ जीवितस्वामि--श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का बिम्ब करवाया, जो श्रीपूर्णिमापक्षीय भ० श्रीसुमतिनाथप्रभसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित हुआ ।

(३२)

सं० १५१६ संघवी गेलाने (पूर्णिमापक्षीय) श्रीगुणधीरसूरि के उपदेश से श्रीगौतमस्वामी का बिम्ब सपरिकर करवाया ।

(३३)

सं० १६५१ फाल्गुनकृ० १० शनिवार के दिन थिरापद्र निवासीने श्रीमुनिसुव्रतस्वामी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

(३४)

सं० १२९१ माघ शु० ५ गुरुवार के दिन पिप्पलगच्छानुयायी व्य० वीरा(वीरचन्द्र) पुत्र झांझणने तथा पुत्र नेनक, नेढक, ब्रह्मा, केथुने तथा आम्रदेवने श्रीऋषभदेव के मन्दिर में दो कायोत्सर्गस्थ जिन--बिम्ब करवाये । इस चैत्य का जीर्णोद्धार वला अभयकुमार आदि कुटुम्ब समुदायने करवाया। प्रतिष्ठाकार्य श्रीसर्वदेवसूरि के द्वारा हुआ ।

लेख में दो कायोत्सर्गस्थ प्रतिमा होने का उल्लेख है, परन्तु वर्तमान में यह एक ही प्रतिमा विद्यमान है जो

भव्य, अति चमत्कार पूर्ण और श्वेतवर्ण ६८ इंची बड़ी प्रस्तर प्रतिमा है। इस समय यह वीरप्रभु के मंदिर में उनके दहिने भाग में स्थापित है। वीरप्रभु की विशाल प्रतिमा के लिये एक त्रिशिखरी मन्दिर थरादसंघ की ओर से बन रहा रहा है, उसीमें वीरप्रभु के साथ यह प्रतिमा स्थापित होगी।

आदिनाथचैत्य में चौवीशी-पंचतिर्थियाँ—

(३५)

सं० १५१९ माघकृ० २ शनिवार के दिन कोहर-निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० लापा भा० लाछादेवी पुत्र वास्ता, हाला, भा० हमीरदेवी पुत्र वेला, गेला ने वेला की स्त्री वयजलदेवी सहित पिता, भ्रातृगण और पूर्वजों के श्रेयार्थ श्रीशीतलनाथ चतुर्विंशतिपट्ट करवाया, जो पिप्पलगच्छीय श्रीमुनिसुन्दरसूरि के पट्टधर श्रीअमरचन्द्रसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित हुआ।

(३६)

सं० १५१५ वैशाखकृ० २ गुरुवार के दिन सत्यपुर (सांचोर) निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय परीक्षक खेता भा० खेतलदेवी पुत्र ईश्वर भा० राजलदेवी पुत्र मोकल भा० महिगलदेवीने पुत्र वऊला सहित अपने पितृजनों के कल्याणार्थ जीवितस्वामि श्रीआदिनाथ चतुर्विंशतिपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीचन्द्रप्रभसूरि द्वारा हुई।

(३७)

सं० १५२८ पौषकृ० ३ सोमवार के दिन काकरग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय भंडारी भोला भा० वाह्लीबाईने अपने कल्याणार्थ जीवितस्वामि श्रीविमलनाथ का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा चैत्रगच्छीय धारणपद्री भ० श्री-ज्ञानदेवसूरिने की।

(३८)

सं. १५३४ ज्येष्ठशु० १० के दिन प्राग्वाटज्ञातीय व्य० गोपाल भा० लाखीबाई पुत्र व्य० लाखा (लक्ष्मण) भा० कीमीबाईने प्रमुख परिजनों के सहित अपने कल्याणार्थ श्री-शान्तिनाथ का बिम्ब करवाया, जिसको तपागच्छीय श्री-सोमसुन्दरसूरि, मुनिसुन्दरसूरि श्रीरत्नशेखरसूरि के पट्टधर श्रीलक्ष्मीसागरसूरिने प्रतिष्ठित किया।

(३९)

सं० १५३३ वैशाखशु० ६ शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० कर्मसिंह भा० लाछूबाई पुत्र श्रे० मामाकने अपनी भार्या देवलीबाई के सहित माता पिता और आत्म-श्रेयार्थ श्री सुविधिनाथ का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा थरादनगर में नागेन्द्रगच्छीय भट्टा० श्रीगुणदेवसूरिने की।

(४०)

सं० १५२२ पौषकृ० १ गुरुवार के दिन उपकेशज्ञातीय

श्रेष्ठिगोत्रीय महाजन मोखा पुत्र म० वनराजने भा० साल्हा-देवीने म० खीदा के पुण्यार्थ श्रीशीतलनाथ का बिम्ब भराया, जिसकी प्रतिष्ठा पारकरनगर में उपकेशगच्छीय श्रीककुदा-चार्यसन्तानीय श्री ककसूरिने की।

(४१)

सं० १७५७ माघशु० ५ के दिन थिरापद्रनिवासी श्री-श्रीमालज्ञातीय वृद्धशाखा में वोहरा (बहुथरा) देवराजने भा० मानीबाई, पुत्र वो० वासा, सांकला पुत्र भोजराजादि सहित स्वश्रेयार्थ श्रीसंभवनाथ का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय भट्टा० श्रीविजयप्रभसूरि के पट्टाधीश संविज्ञपाक्षीय भट्टा० श्रीज्ञानविमलसूरिने की।

(४२)

सं० १५१० माघशु० ४ रविवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० भोला भा० भावलदेवी के पुत्र लूणसिंहने भ्राता हीमला के पुण्यार्थ तथा अपने परिजनों के श्रेयार्थ श्री-शान्तिनाथपंचतीर्थी करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय त्रिभवियागच्छनायक श्रीधर्मशेखरसूरिने थिरपद्र(थराद) नगर में की।

(४३)

सं० १५०६ वैशाखशु० ८ रविवार के दिन थारापद्रनगर

निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्यव० भोला पुत्र सं० लूणसिंह: भा० लूणादेवीने निज श्रेयार्थ जीवितस्वामि श्रीश्रेयांसनाथ का पंचतीर्थी बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पल-गच्छीय त्रिभवीयागच्छनायक भट्टा० श्रीधर्मशेखरसूरिने की।

(४४)

सं० १५१७ माघशु० १० बुधवार के दिन ब्रह्माण-गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्यव० शार्दूलमल पुत्र मारमलने अपनी भार्या कर्पूरदेवी, पुत्र डाहा, वेला, और माता पिता के कल्याणार्थ श्रीअजितनाथ का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा महंडका ग्राम में श्रीपज्जूनसूरि (प्रद्युम्नसूरि) ने की।

(४५)

सं० १५०८ वैशाखकृ० ४ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० नयनराजने भा० टही कुबाई, पुत्र लक्ष्मण, हेमराज, दूदराज आदि परिवार सहित पितृव्य कुतुहण भा० हासूबाई के श्रेयार्थ श्रीशीतलनाथ का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा सिद्धान्तगच्छीय श्रीसोमचन्द्रसूरिने की।

(४६)

सं० १५०६ वैशाखशु० ८ रविवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० वरसिंह भा० तिलूश्रीने निजश्रेयार्थ जीवित-

स्वामि श्रीश्रेयांसनाथ का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय त्रिभवीया श्रीधर्मशेखरसूरिने की।

(४७)

सं० १६१८ माघशु० १३ प्राग्वाट सोनीगोत्रीय सामा की पुत्री सोनीदेवीने श्रीआदिनाथ प्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय श्रीविजयदानसूरिने की।

(४८)

सं० १५१० आषाढ़कृ० १ शुक्रवार के दिन उपकेश-वंश में भणशालीगोत्रीय महाजन माला भा० माल्हवदेवी के पुत्र कावा श्रावकने अपने बन्धुगण गुणिया, डूंगर, पुत्र मादा, वदा, राजा प्रमुख परिवार सहित श्रीशान्तिनाथ का बिम्ब स्वपुण्यार्थ करवाया, जो खरतरगच्छीय श्रीविजय-राजसूरि के पट्टधर श्रीजिनभद्रसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित हुआ।

(४९)

सं० १५२८ वैशाखशु० ५ गुरुवार के दिन प्राग्वाट-ज्ञातीय संघवी काला भा० माल्हणदेवी पुत्र सं० रत्ना भा० लाम्बूबाई सं० भीमाक(भीमराज)ने भा० देवमति परिवार सहित स्वकल्याणार्थ बृहत्तपापक्षीय श्रीज्ञानसागरसूरि के द्वारा श्रीसुविधिनाथ का बिम्ब भराया।

(५०)

सं० १४९९ कार्त्तिकशु० १५ गुरुवार के दिन

श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० खीदा भा० काउवाई पुत्र धीराने अपने कल्याणार्थ श्रीशीतलनाथ का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय त्रिभवीया भ० श्रीधर्मशेखरसूरिने थिरापद्रपुर में की।

(५१)

सं० १२६३ वैशाखशु० ६ गुरुवार के दिन शा० टीला पुत्र शा० लूणाने माता पिता के श्रेयार्थ श्रीपार्श्वनाथ की प्रतिमा करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीदेवसूरि के शिष्य श्री-व्रयरसेनसूरिने की।

(५२)

सं० १५३४ वैशाखकृ० १० रवि१वार (सोमवार) के दिन प्राग्वाटज्ञातीय व्यव० शैलराज भा० तेजूबाई पुत्र अजा(अजयराज) भा० वमीबाई पुत्र नरपालने पितृव्य व्य० वाछा(वत्सराज) डाहा, पांचा आदि परिजनों सहित श्रीश्रेयांसनाथ का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा डीसा-नगर में श्रीसूरिने की।

(५३)

सं० १६१५ चैत्रकृ० ५ गुरुवार के दिन श्रीश्रीमाल-

---

१ लेखाङ्क ३०२ में सोमवार लिखा है।

ज्ञातीय महाजनी सोमराज भा० झमकलदेवी, द्वितीया भा० मृगादेवी के पुत्र वाछाने माता, पिता, पितृजनों के श्रेयार्थ श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमागच्छीय श्रीवीरप्रभसूरि के पट्टधर श्रीकमलप्रभसूरिने सविधि की ।

(५४)

सं० १४९७ वैशाखकृ० ६ शुक्रवार के दिन बडली-नगर निवासी डीसावालज्ञातीय श्रे० कउझा भा० माकू के पुत्र समधरने भा० लाछी(लक्ष्मी) के सहित अपने पिता के कल्याणार्थ श्रीसुपार्श्वनाथ का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय क्षीमाणिया श्रीजयशेखरसूरि के उप-देश से हुई ।

(५५)

सं० १३४७ वैशाखकृ० ५ शुक्रवार के दिन श्रीमन्मं-डलने गुरु के उपदेश से...साधुप्रभसिंहमुनि के द्वारा प्रतिमा (प्रतिष्ठित) करवाई ।

(५६)

सं० १५१५ माघशु० १ शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय पिता देपाल, माता घापुबाई के श्रेयार्थ उसके पुत्र खीमा और खेताने श्रीनमिनाथ का बिम्ब करवाया, जिसकी

ष्ठा पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुरत्नसूरि के उपदेश से हडिया-
.र के श्रीसंघने की।

(५७)

सं० १३६९ वैशाखकृ० ८ के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय
.रीक्षक भंडराज के श्रेयार्थ उसके पुत्र पाताने श्रीचतुर्विंशति-
तीर्थंकरों का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा नागेन्द्रगच्छीय
श्रीभुवनानन्दसूरि के शिष्य श्रीपद्मचन्द्रसूरिने की।

(५८)

सं० १४८८ ज्येष्ठशु० ३ सोमवार के दिन श्रीमालज्ञातीय
माहणसिंह जयन्तसिंह भा० जयतलदेवी पुत्र वीरधवल हरि-
धवल विक्रमने एकमत होकर मातापिता और स्वकल्याणार्थ
श्रीविमलनाथ चतुर्विंशति जिनपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा
त्रिभविया पिप्पलाचार्य श्रीधर्मशेखरसूरिने की।

(५९)

सं० १५१७ पौषकृ० ५ (गुरुवार) के दिन श्रीश्री-
मालज्ञातीय व्यव० माहण पुत्र व्य० सूरा भा० सुहवदेवी
पुत्र व्य० सदा, राणाने अपने कल्याणार्थ श्रीशान्तिनाथ
चतुर्विंशतिजिनपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय
त्रिभविया भ० श्रीधर्मशेखरसागरसूरिने धरादनगर निवासी
सर्व पूर्व पुरुषों की शान्ति बढ़ाने के लिये की।

(६०)

सं० १४८२ वैशाखकृ० ४ गुरुवार के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय व्यव० ऊदिर भा० हांसलदेवी पुत्र भोला भा० मावलदेवी पुत्र नेमा, लूणाने माता पिता तथा भ्राता हेमला के कल्याणार्थ श्रीअजितनाथ चतुर्विंशति जिनपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय त्रिभविया श्रीधर्मप्रभसूरि के पट्टधर श्रीधर्मशेखरसूरिने की।

(६१)

सं० १५१६ पौषकृ० ५ गुरुवार के दिन थरादनिवासी थिरापद्रगच्छानुयायी श्रीश्रीमाल ज्ञातीय व्य० सूरा भा० श्रीदेवी पुत्र वीसलने भा० नीनादेवी, पुत्र धीरा, काला, कुटुम्ब सहित अपनी माता और पिता के कल्याणार्थ श्री श्रेयांसनाथ चतुर्विंशतिपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्री विजयसिंहसूरिने की।

(६२)

सं० १४५३ वैशाखशु० २ सोमवार के दिन ओसवालवंशीय महं० माहण भा० आल्हणदेवी पुत्र लूणा, वाछा, वैरमल, केल्हा आदि भ्राताजनोंने अपने माता भ्राता सर्व जनोंके अर्थ श्रीचतुर्विंशतिजिनपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा जीराउलीपुरीगच्छीय श्रीवीरचन्द्रसूरि के पट्टधर श्रीशालिभद्रसूरिने की।

(६३)

सं० १५३५ पौषकृ० १२ रविवार के दिन उपकेश-वंशीय श्रे० हीरा भा० हीरादेवी पुत्र सुश्रावक पासु (पारस-मल) ने अपनी भार्या पूर्णिमादेवी पुत्र क्षेमराज भूतराज और देवराज सहित अपने श्रेयार्थ अंचलगच्छीय श्रीजय-केशरसूरि के उपदेश से श्रीसंभवनाथ का बिम्ब करवाया, प्रतिष्ठा वागूडीग्राम में श्रीसंघने करवाई ।

(६४)

सं० १५०७ माघशु० १३ शुक्रवार के दिन वीरवंशीय सं० लीम्बा भा० मोटीबाई पुत्र सं० सुश्रावक नारदने स्व-भार्या जयरुदेवी सहित अंचलगच्छीय श्रीजयकेशरसूरि के उपदेश से श्रीधर्मनाथ का बिम्ब पिता के श्रेयार्थ करवाया और श्रीसंघने प्रतिष्ठित करवाया ।

(६५)

सं० १५०१ पौषकृ० ६ बुधवार के दिन वराहीगोत्रीय श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० महिपाल पुत्रव्य० सिंह भा० सुहव-देवी पुत्र नाथा, राहुल, धरणने अपनी माता के कल्याणार्थ श्रीश्रेयांसनाथ का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा थारा-पद्रीयगच्छीय श्रीसर्वदेवसूरि के पट्टधर श्रीविजयसिंहसूरिने की।

(६६)

सं० १४७९ माघशु० ४ काकवंशीय वोहराशाखीय

शा० राणिगसिंह पुत्र गंगासिंह भा० महंघलदेवी पुत्र सांवल-सिंहने पुत्र वत्सा, तेजा सहित स्वभार्या क्षेत्रदेवी और वह्लालदेवी के श्रेयार्थ श्रीशान्तिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसको खरतरगच्छीय श्रीजिनभद्रसूरिने प्रतिष्ठित किया।

(६७)

सं० १५११ माघशु० ५ श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० सांडा पुत्र अदऊ भा० गेलीबाई पुत्र हरराजने भा० बाऊबाई सहित अपने पिता के श्रेयार्थ श्रीआदिनाथ का बिम्ब करवाया, जिसको चैत्रगच्छीय धारणपद्रीय श्रीलक्ष्मीदेवसूरिने प्रतिष्ठित किया।

(६८)

सं० १५५३ वैशाखशु० १३ सोमवार के दिन नागी-नगर निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० मना भा० डाहीबाई पुत्र रहिआने स्वभार्या रंगीबाई सहित अपने पिता, माता और पितृजनों के एवं भ्राता के निमित्त तथा अपने श्रेयार्थ श्रीसुमतिनाथजी का बिम्ब करवाया जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पल-गच्छीय श्रीपद्मानन्दसूरिने की।

(६९)

सं० १५०५ वैशाखशु० ३ शुक्रवार के दिन ब्रह्माण-गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० मेघाने पुत्र गोसल

मा० मृंगारदेवी पुत्र कर्मसिंह सहित पितृ देसलदेव, मातृ महंगदेवी के श्रेयार्थ श्रीनमिनाथ का बिम्ब करवाया, जिसको श्रीपज्जूनसूरिने प्रतिष्ठित किया।

मेघा के पिता देसलदेव थे और महंगदेवी माता थी। प्रथा की दृष्टि से पितृमातृ का उल्लेख मेघा के पूर्व होना चाहिये था।

(७०)

सं० १४८५ माघशु० १० शनिवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय सं० ठाकुरसिंह भा० झनकूदेवी पुत्र सं० काला (कल्याणसिंह) ने माता पिता के श्रेयार्थ श्रीपद्मप्रभस्वामी का बिम्ब करवाया, जिसकी विधिपूर्वक प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय श्रीविद्याशेखरसूरि के उपदेश से हुई।

(७१)

सं० १५१७ माघकृ० ८ बुधवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० वीरा भा० शानीबाई पुत्र जोगाने भा० मानू-बाई पुत्र महीराज कुटुम्ब सहित अपने श्रेयार्थ श्रीनमिनाथ का बिम्ब पूर्णिमापक्षीय श्रीगुणसमुद्रसूरि के पट्टधर श्रीपुण्य-रत्नसूरि के उपदेश से दोलावाड़ा ग्राम में सविधि प्रतिष्ठित करवाया।

(७२)

सं० १५३५ माघशु० ३ रविवार के दिन उपकेशवंश

में रायथला सेठिया गोत्रीय भरणा पुत्र वेलराजने भा० त्रिमलादेवी पुत्र खेमा, वेला, गजा आदि के श्रेयार्थ श्रीनमिनाथप्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा खरतरगच्छीय श्रीजिनचन्द्रसूरिने की।

(७३)

सं० १४९३ फाल्गुनशु० १ उपकेशवंशीय नवलक्षाशाखा में शा० पाल्हा पुत्र शा० पीचा, फमणा श्रावकोंने श्रीआदिनाथप्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा खरतरगच्छीय श्रीजिनचन्द्रसूरिने की।

(७४)

सं० १५९८ चैत्रशु० ५ बुधवार के दिन कावेयरिग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० प्रपितामह पेथा प्रपितामही प्रथमादेवी पितामह नीम्बराज पितामही कर्मादेवी पिता मेघराज मातृ आशादेवी के पुत्र पारखराज, लल्लूने अपने पूर्वज तथा माता पिता के श्रेयार्थ श्रीशीतलनाथचतुर्विंशतिजिनपट्ट करवाया, जिसको पिप्पलगच्छीय श्रीसमरचन्द्रसूरि के पट्टधर श्रीशुभचन्द्रसूरिने प्रतिष्ठित किया।

(७५)

सं० १४७१ श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० केरहुआ भा० मंजूबाई पुत्र बालचंद्रने अपने भ्राता लालचंद के श्रेयार्थ

चतुर्विंशतिजिनपट्ट करवाया, जिसकी सविधि प्रतिष्ठा ागमगच्छीय श्रीअमरसिंहसूरि के उपदेश से हुई ।

(७६)

सं० XX६५ माघशु० १२ शुक्रवार के दिन भाद्रीपुर नेवासी प्राग्वाटज्ञातीय व्य० पूनमचन्द्रने अपने पिता जसराज के श्रेयार्थ श्रीशान्तिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीश्रीसूरिने की ।

(७७)

सं० १५०६ माघशु० १० शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० चूणा भा० वापलदेवी पुत्र देवराजने माता पिता के श्रेयार्थ श्रीजीवितस्वामि श्रीशीतलनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीसोमचन्द्रसूरि के पट्टधर श्री उदयदेवसूरिने पड़घलियाग्राम में की ।

(७८)

सं० १४९९ कार्त्तिकशु० ५ गुरुवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय व्य० मंडन भा० महणदेवी पुत्र बवा, वरड़ाने अपने भ्राता कर्मसिंह, राघवसिंह के श्रेयार्थ श्रीचन्द्रप्रभ-स्वामी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय त्रिभविया भ० श्रीधर्मशेखरसूरिने की ।

(७९)

सं० १५२७ ज्येष्ठशु० १० बुधवार के दिन श्रीश्रीमाल

ज्ञातीय श्रे० संदा (चन्द्रराज) श्रे० सूरदेवने पुत्र देव, पोपट आदि परिजनों सहित भार्या वागूबाई के श्रेयार्थ श्रीकुन्थुनाथस्वामी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय श्रीपुण्यरत्नसूरि के उपदेश से विधिपूर्वक हुई ।

(८०)

सं० १५८१ माघकृ० १० शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय वृद्धशाखा में मं० लाला ने भा० लीलादेवी पुत्र आशराज भा० उमादेवी पुत्र लाखा, हीरा, आदि परिवार सहित निगमप्रभावक श्रीआनन्दसागरसूरि के द्वारा श्रीशान्तिनाथजी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

(८१)

सं० १५१० कार्त्तिककृ० ४ रविवार के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० लूणसिंह भा० लूणादेवी पुत्र संग्रामसिंह ने भा० वाल्हीदेवी के श्रेयार्थ श्रीशान्तिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा थिरापद्र में पिप्पलगच्छीय त्रिभविया श्रीक्षेमशेखरसूरिने की ।

(८२)

सं० १५२९ ज्येष्ठकृ० १ शुक्रवार के दिन विराणपुर निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० धना भा० धांधलदेवी पुत्र प्रेमराजने भा० आशादेवी पुत्र चांपा सहित माता पिता के

श्रेयार्थ श्रीपद्मप्रभपंचतीर्थी करवाई जो श्रीआगमगच्छीय श्रीअमररत्नसूरि के उपदेश से प्रतिष्ठित हुई।

(८३)

सं० १५१६ आषाढशु० १ शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० कान्हा भा० कमलादेवी के पुत्र गुहिगराज, सूरदेवने मातापिता व आत्मश्रेयार्थ श्रीनमिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीसोमचन्द्रसूरि के पट्टधर श्रीउदयदेवसूरिने की।

(८४)

सं० १५१७ चैत्रपूर्णिमा के दिन श्रीमालज्ञातीय क्षेडरियागोत्र में सं० कानू (कन्हैयालाल) पुत्र रणवीर श्रावकने भा० हर्षादेवी के सुपुण्यार्थ श्रीशान्तिनाथप्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा खरतरगच्छीय जिनभद्रसूरि के पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरिने की।

(८५)

सं० १२२० ज्येष्ठशु० ९ रविवार के दिन श्रियाहडने श्रीपार्श्वनाथ की प्रतिमा करवाई जिसकी प्रतिष्ठा प्रभुश्रीहेमचन्द्रसूरिने की।

(८६)

सं० १५११ माघशु० ५ गुरुवार के दिन श्रीश्रीमाल-

ज्ञातीय व्य० सायर भा० संसारदेवी पुत्र व्य० कुरसिंह भा० नयनादेवी के पुत्र जयसिंहने श्रीधर्मनाथप्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय त्रिभवीया श्रीधर्म-शेखरसूरि के पट्टधर श्रीधर्मसुन्दरसूरिने की।

(८७)

सं० १५२५ ज्येष्ठ शु० ५ सोमवार के दिन वड्रवाड़ा-ग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० गोलराज भा० गुरु देवी पुत्र हेमराजने भा० हीरादेवी माधु (माध्वी) पुत्र विजयराजसिंह परिजनों के सहित अपने कल्याणार्थ श्री अजितनाथप्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्री ब्रह्माणगच्छीय श्रीवीरसूरिने की।

(८८)

सं० १५१० फाल्गुनशु० ११ शनिवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय व्य० पुण्यपाल भा० पाल्हण देवी के पुत्र हीराचन्द्र, हरिश्चन्द्रने पूर्वजों के श्रेयार्थ श्रीआदिनाथप्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीभावडारगच्छीय श्रीकालिकाचार्यसन्तानीय श्रीवीरसूरि के उपदेश से हुई।

(८९)

सं० १५६१ माघकृ० ५ शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० देवड(देवराज) भा० पातीबाई पुत्र क्षेमराज

भा० वरजुबाई के पुत्र माजूने अपने पिता माता व आत्म-कल्याणार्थ श्रीनमिनाथप्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय त्रिभविया भट्टा० श्रीधर्मसागरसूरि के पट्टधर भ० श्रीधर्मप्रभसूरिने की।

(९०)

सं० १५३० कार्तिकशु० १२ सोमवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय व्यव० लीम्बराज भा० लाछूबाई पुत्र धर्मसिंह भा० धांधलदेवीने भ्राता वीना के व आत्मश्रेयार्थ श्रीशीतल-नाथजी का बिम्ब कराया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीमुनिसिंहसूरि के पट्टधर श्रीअमरचन्द्रसूरिने की।

(९१)

सं० १५०१ फाल्गुनशु० ५ गुरुवार के दिन ब्रह्माण-गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० तेजपाल भा० मूलाबाई पुत्र लाखाने भा० ललिताबाई, पुत्री रत्नू, पिता-माता के श्रेयार्थ श्रीवासुपूज्यस्वामी का बिम्ब श्रीपज्जूनसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(९२)

सं० १५२४ मार्गशिरकृ० २ के दिन प्राग्वाटज्ञातीय व्य० तेजपाल भा० श्रीदेवी पुत्र व्य० पोपमल भा० पांतीदेवी पुत्र व्रजांगदेव, देवपालने प्रमुख परिजनों सहित अपने

श्रेयार्थ श्रीसुविधिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छेश्वर श्रीरत्नशेखरसूरि के पट्टधर श्रीलक्ष्मीसागर-सूरिने की।

(९३)

सं० १५१७ पौषकृ० ५ गुरुवार के दिन राडबड़ग्राम निवासी श्रीमालज्ञातीय श्रे० वीरमदेव भा० विल्हणदेवी के पुत्र राहुल, भीमदेव भा० धीरजदेवी पुत्र हापाने अपने पिता माता के श्रेयार्थ श्रीसुविधिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पुर्णिमापक्षीय श्रीमुनिसिंहसूरिने की।

(९४)

सं० १५११ माघशु० ५ गुरुवार के दिन श्रीश्रीमाल ज्ञातीय व्यव० कर्मसिंह भा० मरीबाई पुत्र महिपालने पिता माता व आत्मश्रेयार्थ श्रीसुमतिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय श्रीराजतिलकसूरिने स्थिरापद्र (थराद) पुर में की।

(९५)

सं० १५३६ फाल्गुनशु० ३ सोमवार के दिन साणी-ग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० लूणसिंह भा० वमकु-बाई पुत्र भोजराजने भा० अमकुबाई, पुत्र रहियादि परिजनों सहित अपने माता पिता के श्रेयार्थ श्रीश्रेयांसनाथजी का

बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमागच्छीय श्रीगुणधीर-सूरि के उपदेश से हुई।

(९६)

सं० १५०१ पौषकृ० ६ शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० वगसा भार्या जेसलदेवी के पुत्र घड़सिंहने अपने पिता, माता, भ्राता के श्रेयार्थ जीवितस्वामि श्रीसुमति-नाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा नागेन्द्रगच्छीय श्रीपद्मानन्दसूरि के पट्टधर श्रीविनयप्रभसूरि के द्वारा हुई।

(९७)

सं० १५०५ वैशाखशु० २ बुधवार के दिन लढाऊ-गोत्रीय सं० नगराज भा० लाठीबाई पुत्र सं० धनराजने भा० सुवर्णदेवी पुत्र सं० कालू प्रमुख परिजनों के साथ अपने श्रेयार्थ श्रीसुविधिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीखरतरगच्छीय गुरुश्रीजिनभद्रसूरिने की।

(९८)

सं० १४९३ वैशाखशु० ५ बुधवार के दिन फलौदिया-गोत्रीय शा० छाहू भा० छाजूबाई पुत्र सात्ताने अपने पुण्यार्थ श्रीसुमतिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा धर्म-घोषगच्छीय भट्टा० श्रीपद्मशेखरसूरि के पट्टधर भ० श्रीविजय-चन्द्रसूरिने की।

(९९)

सं० १४३५ माघकृ० १२ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय सं० खेड़सिंह सुत सं० हादाने श्रीशान्तिनाथजी का बिम्ब करवाया, जीसकी प्रतिष्ठा श्रीवीरसिंहसूरि के पट्टधर श्रीवीरचन्द्रसूरिने की।

(१००)

सं० १५१० पौषकृ० ५ गुरुवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्यव० सूरदेव भा० सुहवदेवी पुत्र रूदा राणाकने अपने माता पिता के कल्याणार्थ श्रीशान्तिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय त्रिभविया श्रीधर्म-सागरसूरिने की।

(१०१)

सं० १५७२ वैशाखकृ० ४ रविवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय व्य० भूवर पुत्र व्य० पोपटने भा० प्रेमलदेवी, भ्राता गोपाल के पुत्र हादासहित अपने श्रेयार्थ श्रीसुविधि-नाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय प्रधानशाखा में श्रीभुवनप्रभसूरिने की।

(१०२)

सं० १४३४ वैशाखकृ० बुधवार के दिन श्रीमालज्ञातीय व्य० जाठिल भा० क्षेमलदेवी श्रे० मालराजने श्रीशान्ति-

नाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छाचार्य श्री मुनिप्रभसूरिने की।

(१०३)

सं० १४६२ वैशाखशु० ५ शुक्रवार के दिन प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० प्रलेपनदेव भा० साथलदेवी के पुत्र भापलदेवने श्रीआदिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा भडाहड़ाग्राम में श्रीहरिभद्रसूरिने की।

(१०४)

सं० १५०६ वैशाखशु० ६ सोमवार के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० लाखा भार्या पातलीबाई के पुत्र कीकाने अपने कल्याणार्थ श्रीनमिनाथजीका बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीजिनमाणिक्यसूरिने की।

(१०५)

सं० १४३० माघकृ० ८ सोमवार के दिन ओसवालज्ञातीय व्य० आशधर भा० रामलदेवी के पुत्र सादराजने पितृजनों के श्रेयार्थ श्रीआदिनाथप्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलाचार्य श्रीधर्मदेवसूरिसन्तानीय श्री प्रीतिसूरिने की।

(१०६)

सं० १३०९ माघकृ० २ के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० नरसिंह भा० नयनादेवी, क्षेमराज साहमल पुत्र कर्णदेवने श्रीशान्तिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा चैत्र-गच्छीय श्रीहरिश्चन्द्रसूरिने की ।

(१०७)

सं० १३९९ फाल्गुनशु० १३ सोमवार के दिन वयड़डी ग्राम के संघने प्रतिष्ठा करवाई । ....

(१०८)

सं० १७०८ मार्गशिरशु० २ रविवार के दिन शा० यक्षराजने तथा कडुआमतगच्छानुयायी माणजी लाधाजीने श्री पार्श्वनाथजी का बिम्ब प्रतिष्ठित किया।

(१०९)

सं० १६८३ ज्येष्ठशु० ३ के दिन कडुआमतानुयायी थराद के ठाकुर रत्नपाल भा० ठकुराणी रमादेवीने श्री सुमतिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा शाहजी तेजपालने की ।

(११०)

सं० १६६२ फाल्गुनशु० २ बुधवार के दिन थराद-

नगर निवासी व्य० हारमलने पिताश्री साजनसिंह के पुण्यार्थ श्री वासुपूज्यस्वामी का बिम्ब करवाया।

(१११)

सं० १३६४ वैशाखशु० १३ के दिन श्रे० छाड़राज पुत्र क्षेमराज भा० जयतुदेवी पुत्र केल्हण भा० लूणीबाई पुत्र हरपाल भा० कर्पूरदेवी पुत्र रत्नसिंहने भा० गौरादेवी सहित काका देवल, पुण्यपाल, पिता पितृव्य नरपाल के श्रेयार्थ श्रीआदिनाथ प्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्री महेन्द्रसूरि के पट्टधर श्रीअभयदेवसूरिने की।

(११२)

सं० १४३६ वैशाखकृ० ११ सोमवार के दिन श्रीमाल-ज्ञातीय व्य० वीचा, भा० हमीरदेवी के पुत्र भूदेवने अपने माता पिता के कल्याणार्थ श्रीपार्श्वनाथप्रभु का बिम्ब कर-वाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीविजयप्रभसूरि के पट्टधर श्रीउदयानन्दसूरिने की।

(११३)

सं० १४७९ माघकृ० ७ सोमवार के दिन भावडार-गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातिय व्य० भमराज के पुत्र सरवण-(श्रवण)ने पुत्र पर्वत के श्रेयार्थ श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का बिम्ब श्रीविजयसिंहसूरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(११४)

सं० १६१७ पौषकृ० १ गुरुवार के दिन राजाधिराज श्रीअश्वसेन, राणी श्रीवामादेवी के पुत्र श्रीश्री ५ श्रीपार्श्वनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा थिरापद्र निवासी लघुशाखा में श्रीमालज्ञातीय श्रे० वीजा पूना मूलाने अपने कर्मों के क्षयार्थ करवाई।

(११५)

सं० १६१७ पौषकृ० १ गुरुवार के दिन राजा श्रीकुम्भराणा राज्ञिश्रीप्रभावतीदेवी के पुत्र श्रीश्रीमल्लिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा थिरापद्रनगरनिवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय महं० घड़सिंह, रंगराज, उदयवंत, धनपाल संघवीने अपने कर्मों के क्षयार्थ करवाई।

(११६)

सं० १५७८ माघकृ० शुक्रवार के महाराजाधिराज श्रीदृढरथ महाराज्ञि श्रीनन्दादेवी के पुत्र श्रीश्रीश्रीश्री श्रीशीतलनाथजी का बिम्ब करवाया।

(११७)

सं० १६१३ वैशाख शु० १० गुरुवार के दिन राजाधिराज महाराज श्रीनाभिनरेश्वर राज्ञिश्रीमरुदेवी के पुत्र

श्रीश्रीश्री श्रीआदिनाथप्रभु का बिम्ब थिरापद्रनिवासी श्री-श्रीमालज्ञातीय नीतूबाईने अपने कर्मों के क्षयार्थ करवाया।

(११८)

सं० १५११ ज्येष्ठकृ० ९ रविवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय मं० सोना (सुवर्णराज) भा० खेतलदेवी पुत्र गाढराज भा० भोलीबाई पुत्र कालूचन्द्र भा० कामलदेवी, भ्राता धर्मा, नरिया ने पिता माता के श्रेयार्थ श्रीनमिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय भट्टा० श्रीउदय-देवसूरिने वालहर ग्राम में की।

(११९)

सं० १५०६ चैत्रकृ० ५ गुरुवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय मं० जयसिंह भा० वापुदेवी के पुत्र वनराजने पितृ सारंग, भ्राता कर्मण(कर्मसिंह) के श्रेयार्थ श्रीशान्तिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी सविधि प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय श्रीवीरप्रभसूरि के उपदेश से निउरवाड़ा ग्रामे में हुई।

(१२०)

सं० १५३६ माघकृ० सोमवार के दिन उपकेशवंशीय शा० राणा, भा० रयणाबाई के पुत्र खरहत्थ श्रावकने स्वभार्या माणिकबाई पुत्र लक्ष्मण, केशवण, कीर्त्ति, पौत्र मदराज, सूरराज माणिकराज सहित पुत्र रावण के श्रेयार्थ

श्रीअंचलगच्छीय श्रीजयकेशरसूरि के उपदेश से श्रीसंभव-नाथप्रभु का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(१२१)

सं० १५११ माघशु० ५ गुरुवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्यव० कर्मसिंह भा० मदीबाई पुत्र वाघा (व्याघ्र-सिंह) ने अपने पिता माता के श्रेयार्थ श्रीअजितनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीपू० भट्टा० राजतिलक-सूरि के उपदेश से श्रीसूरिने थिरापद्रनगर में की।

(१२२)

सं० १५६० वैशाखशु० २ बुधवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय व्य० सारंगदेव भा० रंगीबाई के पुत्र लक्ष्मणने स्वभार्या पाल्हूबाई पुत्र रहिया, देवपाल सहित अपने पिता के और अपने श्रेयार्थ श्रीशान्तिनाथप्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा नागेन्द्रगच्छीय भ० श्रीसोमरत्नसूरि के पट्ट-धर भट्टा० श्री हेमसिंहसूरिने की।

(१२३)

सं० १५२१ ज्येष्ठशु० ९ सोमवार के दिन पूंजपुरनिवासी उपकेशज्ञाति में नाहरगोत्रीय कुशलराज भा० केल्हणदेवी के पुत्र माहणराजने अपने पितृव्य के तथा अपने श्रेयार्थ श्री-धर्मघोषगच्छीय श्रीपद्मानन्दसूरि के द्वारा श्रीसुमतिनाथ प्रभु का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(१२४)

सं० १५३२ ज्येष्ठशु० १३ बुधवार के दिन उपकेश-ज्ञातीय व्यव० कीका भा० सरस्वती पुत्र खेता भा० रंगी-बाई पुत्र रूपचन्द्रने भ्राता देवराज के तथा अपने श्रेयार्थ श्रीनमिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा सत्यपुर में भावडारगच्छीय श्रीभावदेवसूरिने की।

(१२५)

सं० १५६० वैशाखशु० ३ के दिन सं० खेता भा० हांसलदेवी के पुत्र सं० खेटा के भ्राता सं० अर्जुनदेवने स्व-भार्या अधिकादेवी, पुत्र सं० भांडन, भ्रातृज सं० डूंगर, वना, जेसा आदि परिजनों के सहित वृद्धपितृव्य सं० मेहराज के श्रेयार्थ श्रीवासुपूज्यस्वामी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय श्रीसोमसुन्दरसूरि के पट्टधर श्रीकमल-सूरिने की।

(१२६)

सं० १५४३ ज्येष्ठशु० ११ के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० समधर भा० जीवनीदेवी के पुत्र व्य० धर्मसिंहने स्वभा० मणिकदेवी पुत्र महिराज, वरजा आदि सहित अपने श्रेयार्थ श्रीशीतलनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीश्री-सूरिने तथा पूज्य श्रीसौभाग्यरत्नसूरिने की।

(१२७)

सं० १५.... माघकृ० २ गुरुवार के दिन सहूआला ग्राम निवासी प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० घांगा भा० पंगादेवी के पुत्र पर्वतने स्वभार्या मटकूदेवी पुत्र कर्मण आदि कुटुम्बी जन सहित श्रीविमलनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा वृद्धतपागच्छीय भ० श्रीजिनसुन्दरसूरिने की।

(१२८)

सं० १५२३ वैशाखशु० १३ के दिन प्राग्वाटज्ञातीय व्य० मुंजराज भा० जसूदेवी के पुत्र हापाकने स्वभा० रत्नादेवी पुत्र जावड़, जीवराज, जागा आदि कुटुम्बीजन सहित अपने श्रेयार्थ श्रीअभिनन्दनप्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छनायक श्रीलक्ष्मीसागरसूरिने मूजिगपुरमें की।

(१२९)

सं० १५२६ पौषकृ० २ गुरुवार के दिन कह्नीआणाग्राम निवासी ब्रह्माणगच्छीय श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० रामा भा० रत्नदेवी के पुत्र वरदेवने स्वभा० वील्हणदेवी पुत्र मांजर, भाखर सहित अपने माता पिता के श्रेयार्थ श्री सुमतिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्री बुद्धिसागरसूरिने की।

(१३०)

सं० १५१७ वैशाखशु० १२ मंगलवार के दिन वालु-कड़ ग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० हलराज भा० हेलीवाई के पुत्र शिवसिंहने अपने पिता, माता तथा पूर्वजों के श्रेयार्थ श्रीश्रेयांसनाथ पंचतीर्थी करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय भट्टा० श्रीगुणरत्नसूरिने की।

(१३१)

सं० १५४८ वैशाखकृ० १० रविवार के दिन पत्तन निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय सिद्धशाखा में शा० लक्ष्मणसिंह भा० मांजूदेवी पुत्र मदा (मदनसिंह) भा० मांकूदेवी पुत्र तेजसिंहने अपनी भा० मल्हादेवी सहित पिता, माता, भ्राता एवं अपने श्रेयार्थ श्रीशीतलनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीरत्नदेवसूरि के पट्टधर श्री पद्मानन्दसूरि के द्वारा हुई।

(१३२)

सं० १४९९ कार्त्तिकशु० १५ गुरुवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय व्यव० सूरा भा० सुहवदेवी के पुत्र पता (प्रताप-मल) और रुद्रदेवने अपने कल्याणार्थ श्रीसंभवनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय त्रिभविया श्रीधर्मशेखरसूरिने थारापद्र नगर में की।

(१३३)

सं० १५१३ माघशु० ३ शुक्रवार के दिन वराउद्रग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय मं० सूरा भा० नाड़ीबाई के पुत्र हापराजने स्वभा० कालीदेवी, पुत्र समधर, सहसा, वरदेव, वीरा, पंचायन, महीराज सहित अपने पिता माता के श्रेयार्थ श्रीआदिनाथप्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा ब्रह्माण-गच्छीय श्रीमणिचन्द्रसूरिने की।

(१३४)

सं० १५२७ पौषकृ० ४ गुरुवार के दिन श्रीश्रीमाल ज्ञातीय सिद्धशाखा में व्यव० दूदा भा० माणिकदेवी के पुत्र राणाने अपने भ्राता के सहित अपने श्रेयार्थ श्रीसुमतिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्री विजयदेवसूरि के शिष्य शालिभद्रसूरिने की।

(१३५)

सं० १५३४ पौषकृ० १० के दिन संखारु ग्राम निवासी श्रे० भांजा भा० माल्हणदेवी पुत्र भावड़ भा० तूंबीबाईने अपने श्रेयार्थ श्रीआदिनाथप्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा महा० श्रीलक्ष्मीसागरसूरिने की।

(१३६)

सं० १४५० माघकृ० ९ सोमवार के दिन श्रीमाल-

ज्ञातीय धाँधलियागोत्र में ठकुर हरिराज पुत्र ठ० हापराज ठ० जयपाल के श्रेयार्थ ठ० हेमराजने श्रीअजितनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा खरतरगच्छीय भ० श्री-जिनवल्लभसूरिने की।

(१३७)

सं० १५३७ वैशाखशु० १० सोमवार के दिन श्रीवीर-वंशीय श्रे० मोखा (मोक्षराज) भा० रामतीबाई के पुत्र सुश्रावक देवराजने पुत्र नारद पूना सहित अपने श्रेयार्थ श्रीअंचलगच्छीय श्रीजयकेशरसूरि के उपदेश से श्रीअनन्त-नाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पत्तननगर में श्रीसंघने करवाई।

(१३८)

सं० १५२७ माघकृ० ७ रविवार के दिन उपकेश-ज्ञातीय व्य० मांडन भा० कर्णुबाई पुत्र मोका भा० अदी-बाई द्वितीया भा० समूबाई के पुत्र आल्हणने भ्राता पांचा सहित अपने श्रेयार्थ श्रीसंभवनाथजी का विम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा जीरापल्लीय श्रीउदयचन्द्रसूरि के पट्टधर भट्टा० श्रीसागरचन्द्रसूरिने की।

(१३९)

सं० १५०५ वैशाखकृ० ९ शुक्रवार के दिन थिरापद्र-

नगर निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय महाजनी साल्हा भा० फरकुदेवी पुत्र क्षेमराज भा० खेतलदेवीने पुत्र राजा सहित अपने कल्याणार्थ जीवितस्वामि श्रीनमिनाथजी का बिम्ब श्रीपू० भट्टा० श्रीवीरप्रभसूरि के सदुपदेश से प्रतिष्ठित करवाया।

(१४०)

सं० १५१६ आषाढ...रविवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० वत्सा भा० बीझलदेवी के पुत्र शिवराजने अपने पिता, माता के श्रेयार्थ श्रीअजितनाथजी का बिम्ब पूर्णिमापक्षीय श्रीगुणसमुद्रसूरि के पट्टधर श्रीगुणधीरसूरि के उपदेश से तडेडाग्राम में सविधि प्रतिष्ठित करवाया।

(१४१)

सं० १५१६ माघकृ० ९ सोमवार के दिन प्राग्वाट-ज्ञातीय व्य० खोखा भा० कील्हणदेवी पुत्र देवराजने भा० सुलहश्री, पुत्र भरमा आदि सहित अपने आत्मकल्याणार्थ श्रीशीतलनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमा-पक्षीय श्रीदेवचन्द्रसूरि के उपदेश से हुई।

(१४२)

सं० १५०५ वैशाखशु० २ शुक्रवार के दिन थिरापद्र-नगर निवासी थिरापद्रगच्छीय श्रीश्रीमालज्ञातीय ठ० धीर-जमल भ्रातृ नरसिंह, धीरजमल भा० धांधलदेवी के पुत्र

इलाराज, अर्जुन और गोलराजने अपने पिता माता के श्रेयार्थ श्रीआदिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीविजयसिंहसूरिने की।

(१४३)

सं० १५२० चैत्रकृ० ५ बुधवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० शालिगने स्वभार्या गेरीबाई सहित पिता काल्ह-राज, माता रूपमति और अपने श्रेयार्थ श्रीकुन्थुनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय त्रिभविया श्रीधर्मशेखरसूरि के पट्टधर श्रीधर्मसूरिने की।

(१४४)

सं० १५१५ वैशाखशु० १२ रविवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्यव० मेहा भा० खेतलदेवी के पुत्र जयसिंहने स्व-भार्या जयमादेवी के सहित माता, पिता और अपने श्रेयार्थ श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय भट्टा० श्रीविजयदेवसूरि के उपदेश से श्री शालिभद्रसूरिने मजोहग्राम में की।

(१४५)

सं० १५२४ वैशाखशु० ३ सोमवार के दिन सिद्ध-सन्तानीय श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० लक्ष्मणसिंह भा० मंजूदेवी के पुत्र गणियाने भा० विजयदेवी, पुत्र आशधर सहित

पिता, माता के श्रेयार्थ श्रीश्रेयांसनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीउदयदेवसूरि के पट्टधर श्री रत्नदेवसूरिने पत्तननगर में की।

(१४६)

सं० १५२९ फाल्गुनशु० २ शुक्रवार के दिन उपकेशवंशीय बहुहराशाख में शा० दुरगा भा० लीलादेवी के पुत्र सुश्रावक विक्रमदेवने स्वभा० पल्हादेवी, पुत्र व्याघ्रसिंह, भोजराज, क्षेमराज, क्षेत्रराज सहित पितृव्य साजन के श्रेयार्थ अंचलगच्छीय गुरुश्रीजयकेशरसूरि के उपदेश से श्रीविमलनाथप्रभु का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(१४७)

सं० १५१० वैशाखशु० ३ के दिन ऊढवग्राम निवासी प्राग्वाटज्ञातीय व्यव० वीरमदेव भा० झनूबाई के पुत्र राघवदेवने भ्रातृ हेमा, हीरा, वीसल भा० मचकूबाई के पुत्र अर्जुन, सांगा, सहजा, आदि कुटुम्बीजनों के सहित पिता के श्रेयार्थ श्रीसुमतिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय श्रीरत्नशेखरसूरिने की।

(१४८)

सं० १५०७ फाल्गुनकृ० ११ गुरुवार के दिन व्यव० गोलराजने भा० महगलदेवी के श्रेयार्थ श्रीकुन्थुनाथजी का

बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा ब्रह्माणगच्छीय श्रीमणि-चन्द्रसूरिने की ।

(१४९)

सं० १३४१ ब्रह्माणगच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० साहड के श्रेयार्थ उसके पुत्र लापराजने श्रीवरसूरि के द्वारा बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

(१५०)

सं० १५०३ ज्येष्ठकृ० ३ सोमवार के दिन भावडार-गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० सोनराज भा० मही-देवीने अपने पुण्यार्थ श्रीवासुपूज्यस्वामी का बिम्ब कर-वाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीकालिकाचार्यसन्तानीय पूज्य श्री वीरसूरिने की।

(१५१)

सं० १५२७ माघकृ० ५ गुरुवार के दिन प्राग्वाट-ज्ञातीय शा० करणा भा० मापुदेवी के पुत्र वीढाने स्वभा० राजुलदेवी, पुत्र शा० पालराज आदि कुटुम्बीजन सहित श्रीसंभवनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा तपा-गच्छीय श्रीलक्ष्मीसागरसूरिने की ।

(१५२)

सं० १४७१ माघशु० ३ के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय

श्रीदेदा भा० देल्हणदेवी के पुत्र दूदराजने अपने पिता माता के श्रेयार्थ श्रीविमलनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय त्रिभविया श्रीधर्मप्रभसूरिने की।

(१५३)

सं० १५०१ पौषकृ० श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० नयनराज के पुत्र कर्णराजने पितृव्य तुहणा, मना, डूंगर, वदा (और) माता पाती के श्रेयार्थ श्रीनेमिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा सिद्धान्ती श्रीसोमचन्द्रसूरिने की।

(१५४)

सं० १५१५ ज्येष्ठकृ० १ शुक्रवार के दिन अहमदाबाद-निवासी प्राग्वाटज्ञातीय मं० लींबराज भा० मंथूबाई के पुत्र अदराज भा० भांजीबाईने अपने श्रेयार्थ श्रीअजितनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा बृहत्तपापक्षीय श्रीरत्न-सिंहसूरिने की।

(१५५)

सं० १५२४ चैत्रकृ० ५ के दिन श्रीमालज्ञातीय श्रे० भावराज भा० लालूदेवी पुत्र राजाने भा० राजू, पुत्र जीव-राज, लाडराज, रत्नराज सहित पिता माता और स्वश्रेयार्थ श्रीश्रेयांसनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा धारण-पद्रीय भट्टा० श्रीलक्ष्मीदेवसूरिने की।

(१५६)

सं० १५०६ माघशु०...... के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० सूराने भा० रूपाबाई, पुत्र धर्मराज के श्रेयार्थ, श्राविका सूड़ी तथा अपने श्रेयार्थ श्रीसंभवनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीधर्मशेखरसूरि के पट्टधर श्रीविजयदेवसूरिने की ।

(१५७)

सं० १५१० फाल्गुन...११ शनिवार के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय व्यव० पुण्यपाल भा० पाल्णदेवी पुत्र हीरा, हरियाने पुत्र नगराज नरपाल सहित अपने भ्राता (हीरा) के श्रेयार्थ श्रीअभिनन्दनप्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा भावडारगच्छीय श्रीकालिकाचार्यसन्तानीय श्री वीरसूरिने की ।

(१५८)

सं० १३५९ ब्रह्माणगच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० झांझणने पिता थिरपालश्रीमन्त के श्रेयार्थ श्रीशान्तिनाथजी का बिम्ब श्रीवीरसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

(१५९)

सं० १४४९ वैशाखशु० ६ शुक्रवार के दिन उपकेशज्ञातीय श्रे० वीका(विक्रम)ने पिता कुरसिंह माता कामल-

देवी के श्रेयार्थ श्रीसुमतिनाथजी का बिम्ब श्रीपार्श्वचन्द्रसूरि के उपदेश से करवाया।

(१६०)

सं० १५०३ ज्येष्ठकृ० ७ के दिन ब्रह्माणगच्छानुयायी मोरिग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० शा० हीरा पुत्र वयराज भा० लाडीबाई पुत्र मण्डनने भा० पालूबाई पुत्र शा० समधर, धनराज सहित अपने श्रेयार्थ श्रीवासुपूज्यस्वामी का बिम्ब श्रीपज्जूनसूरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(१६१)

सं० १४४२ वैशाशकृ० १० रविवार के दिन श्रीमालज्ञातीय श्रे० हरपाल भा० हीरादेवीने अपने श्रेयार्थ जीवितस्वामि—श्रीआदिनाथजी का बिम्ब पिप्पलगच्छीय श्रीसागरचन्द्रसूरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(१६२)

सं० १५०३ मार्गशिरकृ० ५ भावडारगच्छानुयायी.... सं० हादा पुत्र सं० काला भा० कमलाबाई के पुत्र भीमा, वेला, मालाने अपने श्रेयार्थ श्रीवीरसूरि द्वारा श्रीनमिनाथजी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(१६३)

सं० १४९३ में प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० माऊलसिंह भा०

माणिकदेवी के पुत्र ठाकुरसिंहने भार्या पातूदेवी, पुत्र वानर-राज आदि सहित श्रीसोमसुन्दरसूरि द्वारा श्रीसुमतिनाथ-स्वामी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(१६४)

सं० १४८२ वैशाखकृ० ४ के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० देवराजने पिता आपमल, माता ऊमादेवी, पितृव्यरण-सिंह के श्रेयार्थ पिप्पलगच्छीय श्रीसागरभद्रसूरि द्वारा श्री संभवनाथजी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(१६५)

सं० १५२७ कार्तिककृ० ५ सोमवार के दिन थिरापद्र-गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय वृद्धशाखीय व्य० कर्माण भा० हमीरदेवी के पुत्र नामराजने अपने पिता माता के श्रेयार्थ श्रीअजितनाथप्रभु का बिम्ब श्रीविजयसिंहसूरि के पट्टधर श्रीशान्तिनाथसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(१६६)

सं० १५५२ फाल्गुनशु० २ के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय नियूगोत्रीय व्य० जीता भा० वानूदेवी पुत्र भीमराज भा० नरजूदेवी द्वि० भार्या कामलदेवी के पुत्र रामचन्द्र, रंग-राजने कंछोली पूर्णिमापक्षीय भट्टा० श्रीविजयराजसूरि के द्वारा श्रीसुमतिनाथजी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(१६७)

सं० १५२७ ज्येष्ठशु० २ सोमवार के दिन प्राग्वाट-ज्ञातीय लघुशाखीय श्रे० हरदास भा० गोलीबाई पुत्र राणा भा० दवकूबाईने अपने श्रेयार्थ श्रीअजितनाथजी का बिम्ब तपागच्छीय श्रीलक्ष्मीसागरसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(१६८)

सं० १५२३ माघशु० १३ सोमवार के दिन झनाकुयो ग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० ठाकुरसिंह भा० कर्मा-देवी पुत्र मेहाजलने भा० माल्हणदेवी, पुत्र संधारणदेव, जगमाल सहित द्वि० भा० देवकुमारी या द्राक्षादेवी के श्रेयार्थ श्रीसुमतिनाथजी का बिम्ब पूर्णिमापक्षीय भट्टा० श्री-कमलप्रभसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(१६९)

सं० १४८४ में प्राग्वाटज्ञातीय व्य० सायर के पुत्र व्य० गदाराजने अपने भ्राता पद्मराज के श्रेयार्थ श्रीशान्ति-नाथजी का बिम्ब तपागच्छीय श्रीसोमसुन्दरसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(१७०)

सं० १४२६ वैशाखकृ० ११ के दिन प्राग्वाटज्ञातीय व्य० जसवीर भा० वांसलदेवी के पुत्र मामाने अपने पिता-

माता के श्रेयार्थ श्रीमहावीरप्रभु का बिम्ब श्रीपार्श्वचन्द्रसूरि के उपदेश से प्रतिष्ठित करवाया।

(१७१)

सं० १५२९ माघशु० १ बुधवार के दिन ब्रह्माणगच्छानुयायी श्रीमालज्ञातीय श्रे० मावराज भा० मावलदेवी के पुत्र रामाशाहने स्वभार्या लाडीदेवी के श्रेयार्थ पुत्र वरजू सहित निज पूर्वजों के श्रेयार्थ श्रीसंभवनाथजी का बिम्ब श्रीविमलसूरि के पट्टधर श्रीवृद्धिसागरसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(१७२)

सं० १५३२ वैशाखशु० १३ सोमवार के दिन थारापद्रगच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० ठाकुरसिंह भा० पाल्हणदेवी के पुत्र उदयसिंहने भा० अहिवदेवी, पितृव्य फांफराज, काल्हराज, झालिया के श्रेयार्थ श्रीशान्तिसूरि के द्वारा श्रीअजितनाथजी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(१७३)

सं० १२०४ वैशाखशु० ३ गुरुवार के दिन षंडेरकगच्छानुयायी देल्हा भा० देल्हीबाई के पुत्र रत्नसिंह के श्रेयार्थ कुंवरसिंहने श्रीपार्श्वनाथजी का बिम्ब श्रीशान्तिसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(१७४)

सं० १५१३ वैशाख शु० ३ के दिन मूलसंघ में सर-

स्वतीगच्छीय कुन्दकुन्दाचार्यसन्तानीय भट्टा० श्रीसकल-कीर्ति के पट्टधर विमलेन्द्रकीर्तिगुरु के द्वारा हूम्बडज्ञातीय श्रे० वनड़ भा० बानूदेवी, पुत्र काला भा० बाल्हीदेवी, भ्राता कीका भा० गोमतिदेवी, भ्राता शिवसिंह, भ्राता पूनमचन्द्र, वत्सराजने श्रीश्रेयांसनाथजी का बिम्ब करवाया। (यह मूर्त्ति दिगंबरसम्प्रदाय की है)

(१७५)

सं० १५३७ ज्येष्ठ शु० २ सोमवार के दिन वीरवंशीय श्रे० रत्ना भा० रत्नूदेवी पुत्र श्रे० धनराज सुश्रावकने भा० धन्नीबाई पुत्र पार्श्वदेव पद्मराज सहित अपनी भार्या के श्रेयार्थ अंचलगच्छीय श्रीजयकेशरसूरि के उपदेश से श्री-सुमतिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसको श्रावस्तीनगर में श्री संघने प्रतिष्ठित किया।

(१७६)

सं० १४८५ माघ कृ० ९ गुरुवार के दिन भावडार-गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्यव० धरणदेव भा० कर्णदेवी के पुत्र पुण्यपालने पुत्र हीरा, हरदेव, यशपाल तथा माता पिता के श्रेयार्थ श्रीविजयसिंहसूरि के द्वारा श्री-संभवनाथजी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(१७७)

सं० १५९१ पौषकृ० १० बुधवार के दिन श्रीश्रीमाल-

ज्ञातीय श्रे० पूनमचन्द्र पुत्र डाहाचन्द्र भा० लाखूबाई पुत्र मेहा, समधर भा० लालीबाईने माता पिता के तथा अपने हितार्थ ब्रह्माणगच्छीय श्रीविमलसूरि के द्वारा वावड़ी ग्राम में श्रीसुमतिनाथजी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(१७८)

सं० १४०४ कात्तिककृ० ९ सोमवार के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० नरदेव भा० नीनादेवी तथा पितृव्य क्षेमराज, विजयराज के श्रेयार्थ तथा भ्राता नरसिंह आदि सर्व के हितार्थ (नरदेव) के पुत्र तिलकाने पूर्णिमापक्षीय श्रीसूरि के द्वारा श्रीपद्मप्रभपंचतीर्थी प्रतिष्ठित करवाई।

(१७९)

सं० १३८७ वैशाखशु० २ रविवार के दिन ब्रह्माणगच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० वयराजने अपने श्रेयर्थ श्रे० कुरसिंह सहित श्रीपार्श्वनाथजी का बिम्ब श्रीजगसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(१८०)

सं० ११४८ श्रीनागरदेवने अपने श्रेयार्थ करवाया।

(१८१)

सं० १४५२ वैशाखशु० ५ गुरुवार के दिन श्रे० राउ पुत्र महं० राणा के पुत्र लालचन्द्रने अपने माता, पिता,

श्रेयार्थ अंचलगच्छीय श्रीसिद्धान्तसागरसूरि के उपदेश से श्रीकुन्थुनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसको संघने प्रतिष्ठित करवाया ।

(१९०)

सं० १४९९ कार्तिकशु० पूर्णिमा गुरुवार के दिन श्री-श्रीमालज्ञातीय व्य० अर्जुनदेव भा० काश्मीरदेवी पुत्र सायर पौत्र धनराजने अपने पितामह के तथा अपने श्रेयार्थ श्रीशा-न्तिनाथजी का बिम्ब पिप्पलगच्छीय त्रिभविया भ० श्रीधर्म-शेखरसूरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

(१९१)

सं० १५१५ कार्त्तिकक्रु० १४ शुक्रवार के दिन भावडार-गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० मेहाजलने भा० लाछू-बाई, पुत्र पूना, गंगा, सांगा, और पितृव्य गेला सहित अपने श्रेयार्थ श्रीशीतलनाथजी का बिम्ब श्रीवीरसूरि के पट्टधर श्री-जिनदेवसूरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

(१९२)

सं० १३७७ चैत्रक्रु० ८ भृगुवार के दिन साखुला-गोत्रीय शा० कर्मसिंह भा० चरणश्री के पुत्र शा० झांझणने श्रीदेवसूरि के द्वारा श्रीपार्श्वनाथजी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

(१९३)

सं० १३१४ वैशाखशु० ९ बुधवार के दिन ओसवाल-ज्ञातीय ठाकुर श्रीदेल्हा भा० सुहड़ादेवी के पुत्र शा० झांझण-देवने अपने पूर्वजों के श्रेयार्थ श्रीजयवल्लभसूरि द्वारा श्रीपद्म-प्रभस्वामि का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(१९४)

सं० १५४७ वैशाखशु० ३ सोमवार के दिन प्राग्वाट-ज्ञातीय डीसाग्रामनिवासी व्य० लक्ष्मणने स्वभार्या रमकू-देवी, पुत्र लींबराज भा० टमकूदेवी, तेजराज, जिनदत्त, सोमराज, सूरदेव आदि सहित अपने कल्याणार्थ श्रीशान्ति-नाथजी का बिम्ब अंचलगच्छीय श्रीसिद्धान्तसागरसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(१९५)

सं० १५१७ मार्गसिरशु० १० सोमवार के दिन उएस-वंशीय शा० राणा भा० राणलदेवि के पुत्र सुश्रावक खरह-त्थने स्वभार्या माणिकदेवी तथा पुत्र लक्ष्मण सहित अंचल-गच्छीय श्री जयकेशरसूरि के उपदेश से श्री चन्द्रप्रभस्वामी का बिम्ब अपने पिता के श्रेयार्थ करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीसंघने करवाई।

(१९६)

सं० १४९४ श्रावणकृ० ९ रविवार के दिन श्रीश्रीमाल--

ज्ञातीय व्य० समरदेव भा० जाल्हणदेवी के श्रेयार्थ पुत्र अमराजने पिप्पलगच्छीय त्रिभविया श्रीधर्मशेखरसूरि के द्वारा श्रीसुविधिनाथ पंचतीर्थी प्रतिष्ठित करवाई।

(१९७)

सं० १५०६ माघशु० १० सोमवार के दिन श्रीमाल-ज्ञातीय व्य० पर्वत भा० राजुदेवी पुत्र सहाद्रदेव, मेहराज, महीपालने अपने पिता माता के श्रेयार्थ नागेन्द्रगच्छीय श्री पद्मानन्दसूरि दे पट्टधर श्रीविनयप्रभसूरि के द्वारा श्रीकुन्थु-नाथजी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(१९८)

सं० १४८९ वैशाखशु० १ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय सं० शाखराज भा० अमादेवी के पुत्र शोखराजने अपने भ्राता वड्डआ के पुत्र साजन के श्रेयार्थ पिप्पलगच्छीय श्री सोमचन्द्रसूरि के द्वारा श्रीशान्तिनाथजी का बिम्ब प्रति-ष्ठित करवाया।

(१९९)

सं० १३०९ फाल्गुनशु० १३ बुधवार के दिन सोराणा-गोष्ठिक शा० हरदेवने अपने पुत्रों तथा अपने श्रेयार्थ श्री-पार्श्वनाथ प्रभु का बिम्ब धर्मघोषगच्छीय श्रीअमरप्रभसूरि के शिष्य श्रीज्ञानचन्द्रसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(२००)

सं० १२१७ वैशाखकृ० १ के दिन ब्रह्माणगच्छीय श्री-प्रद्युम्नसूरि के द्वारा व्य० जोगराज के पुत्र विणुचन्द्र के श्रेयार्थ (बिम्ब) प्रतिष्ठित करवाया।

(२०१)

सं० १४१२ ज्येष्ठशु० १३ गुरुवार के दिन श्रे० लूण-सिंह....पाल के पुत्र विजयराजने अपने कल्याणार्थ श्री-अम्बिकाजी का बिम्ब श्रीमाणिक्यसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(२०२)

सं० १४३७ वैशाखशु० ११ सोमवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय कालदेवने पितृव्य तथा माता किसलदेवी के श्रेयार्थ पिप्पलगच्छनायक श्रीजेयतिलकसूरि के द्वारा श्री-ऋषभदेवजी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(२०३)

सं० १२६१ में शान्तू आसल सं० धारणने (बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।)

---

१ बुद्धिसागरजी के जैनधातुप्रतिमालेखसंग्रह के द्वितीय-भाग के लेखाङ्क ९३१ में जयतिलक को धर्मतिलक भी लिखा है।

(२०४)

सं० १५७२ कार्त्तिकशु० २ सोमवार के दिन श्री-आदिनाथजी का विम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

भोजकों की सेरी के आदिनाथचैत्य में धातुमूर्त्तियां—

(२०५)

सं० १४८० फाल्गुनशु० १० बुधवार के दिन कोरंट-गच्छीय श्रीनन्नाचार्यसन्तानीय उपकेशज्ञातीय श्रे० हेमराज भा० मरमीबाई पुत्र मनराज भा० तारू पुत्र आल्हा भा० आशूदेवी के पुत्र हेमराज, सांगण भा० भामिनीने श्रीआदि-नाथचतुर्विंशतिजिनपट्ट श्रीककसूरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(२०६)

सं० १४७९ चैत्रकृ० २ गुरुवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय मंत्री वीरदेव भा० लखमादेवी के पुत्र वत्सराज भा० रामादेवी के श्रेयार्थ वीरदेव के पुत्र देवराज, धनराज ने श्री आदिनाथचतुर्विंशतिपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा थारा-पद्रगच्छीय श्री शान्तिसूरिने की।

(२०७)

सं० १५८२ वैशाखशु० २ के दिन पत्तननगर निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० नरवद भा० जीविनी पुत्र विजय-राज, हरराज, विजयराज भा० वयजलदेवी के पुत्र धरण-

राजने अपनी पितामही लीलादेवी के श्रेयार्थ श्रीसंभवनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय प्रधान-शाखीय श्रीकमलप्रभसूरि के उपदेश से हुई (लीलादेवी नरवद की द्वि० भार्या होगी)

(२०८)

सं० १४८३ वैशाखशु० ५ गुरुवार के दिन उपकेश-वंशीय सं० जसराजने भा० चांपलदेवी, पुत्र वीसल, कन्या वडलीबाई के सहित स्वश्रेयार्थ श्रीसंभवनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पंडेरकगच्छीय श्रीशान्तिसूरिने की।

(२०९)

सं० १५०५ माघशु० १० रविवार दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय श्रे० कर्मसिंह भा० हांसूदेवी पुत्र श्रे० नरपति सुश्रावकने स्वभार्या नयनादेवी, प्रमुख परिजनों के सहित माता पिता के श्रेयार्थ अंचलगच्छाधिराज श्रीश्रीजयकेशरसूरि के उपदेश से श्रीसुविधिनाथजी का बिम्ब करवाया, श्रीसंघने उसकी प्रतिष्ठा की।

(२१०)

सं० १५०३ माघशु० १३ के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० मालदेव भा० कामलदेवी पुत्र व्य० केल्हा भा० हर्षू-देवी पुत्र व्य० मंडन भा० देहीबाईने पुत्र व्य० वेलराज,

गेलराज आदि परिजनों के सहित श्रीविमलनाथजी का बिम्ब अपने कल्याणार्थ करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय श्रीरत्नशेखरसूरिने की।

(२११)

सं० १५१५ वैशाखशु० ३ शनिवार के दिन बीजापुर निवासी ओसवालज्ञातीय दोशी जसराज भा० जसमाबाई पुत्र दो० अमरचन्द्र भा० देवश्री के पुत्र दो० कुडमलने स्वभा० कामलदेवी, द्वि० भा० हींरूदेवी पुत्र दो० घनराज, दो० बनराज भा० सोही, घनराज पुत्र कान्हा दंगड़ प्रमुख परिजनों के सहित श्रीधर्मनाथजी का बिम्ब श्रीसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(२१२)

सं० १५१५ वैशाखकृ० २ गुरुवार के दिन प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० वागमलने भा० पोमी पुत्र वेलराज भा० लांबी, पुत्र वीरदेव सहित अपने श्रेयार्थ श्रीचन्द्रप्रभप्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा सिद्धान्तगच्छीय भ० श्रीसोमचन्द्रसूरिने की।

(२१३)

सं० १५३८ वैशाखशु० ५ बुधवार के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० धीराने भा० मलीबाई पुत्र आशराज, मनुदेव, घनुदेव देवराज डूंगरजी, अदुराज सहित अपने श्रेयार्थ श्री·

चन्द्रप्रभस्वामी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा चैत्र-गच्छीय भ० श्रीरत्नदेवसूरि के पट्टधर भट्टा० श्रीअमर-देवसूरिने की ।

(२१४)

सं० १५२५ माघकृ० ६ दिन चांपानेरनिवासी गुर्जर-ज्ञातीय महाजन नरसिंहने स्वभा० आशूबाई, पुत्र जिनकाम, पुत्र पद्मकिरण, श्रीवत्सराज, पहिराज आदि स्वपरिजनों सहित अपने श्रेयार्थ श्रीनमिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय श्रीलक्ष्मीसागरसूरिने की ।

(२१५)

सं० १५२२ वैशाखशु० ६ शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमाल ज्ञातीय श्रे० कर्मसिंह भा० लाछूबाई पुत्र श्रे० अमरराजने भा० देसलबाई सहित अपने पिता-माता के तथा स्वश्रेयार्थ श्रीसुविधिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा नागेन्द्रगच्छीय भ० श्रीगुणदेवसूरिने थिरापद्रनगर में की ।

(२१६)

सं० १२४४ फाल्गुनशु० ३ बुधवार के दिन आम्रयक्ष पुत्र आमूने अपनी माता राजिमति के श्रेयार्थ प्रभुबिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीमतिप्रभसूरिने की ।

(२१७)

सं० १५४५ फाल्गुन कृ० २ सोमवार के दिन गांफ-ग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय मं० भीमराज भा० नागिनी पुत्र कन्हैया भा० पुतलीबाईने अपने माता पिता के श्रेयार्थ श्रीनमिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी सविधि प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुसुन्दरसूरि के पट्टधर श्री श्री श्रीदेव-सुन्दरसूरि के उपदेश से हुई।

(२१८)

सं० १४८१ पौषकृ० ८ शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० विरूआ भा० अमरदेवी के पुत्र बृहद्रथने अपने माता पिता के श्रेयार्थ श्रीसंभवनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा नागेन्द्रगच्छीय श्रीपद्मानन्दसूरिने की।

(२१९)

सं० १५०३ ज्येष्ठशु० ९ बुधवार के दिन व्य० सेहण भा० माल्हणदेवी के पुत्र मंडनने अपने पुत्र धीरजराज के सहित अपने श्रेयार्थ श्रीसुमतिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा बृहदगच्छीय सत्यपुरीय भट्टा० श्रीपार्श्व-चन्द्रसूरिने की।

(२२०)

सं० १५१३ माघशु० ३ शुक्रवार के दिन उपकेश-

ज्ञातीय पर्वंजगोत्रीय व्य० शिव के पुत्र देवराजने अपनी भा० देवली के सहित माता संसारबाई के श्रेयार्थ श्रीपद्म-प्रभस्वामी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा बड़गच्छीय श्रीसर्वदेवसूरिने की।

(२२१)

सं० १५१० माघशु० १० बुधवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० श्रवण, काल्हू तथा समधने पिता भामट, माता मीनलबाई के श्रेयार्थ श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुरत्नसूरि के उपदेश से सविधि वयणाग्राम में हुई।

(२२२)

सं० १५६५ ज्येष्ठकृ० २ के दिन मुनिमहिमेरुने श्रीपार्श्वनाथजी का बिम्ब प्रतिष्ठित किया।

(२२३)

सं० १७८५ मार्गशिरशु० ५ के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय वोरा जसराजने स्वश्रेयार्थ श्रीधर्मनाथप्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा कडुआमतानुयायी शाहाजी लाधाजी थोभनजीने करवाई।

(२२४)

सं० १४११ ज्येष्ठकृ० ९ शनिवार के दिन श्रीश्रीमाल-

ज्ञातीय महं० सायाराजने अपनी गोत्रजा वैरुट्यादेवी की मूर्त्ति करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा ब्रह्माणगच्छीय श्रीलब्धि-सागरसूरिने की।

(२२५)

सं० १६१२ पौषकृ० १ गुरुवार के दिन राजाधिराज श्रीअश्वसेन माता श्रीवामादेवी के पुत्र श्रीश्रीपार्श्वनाथप्रभु का बिम्ब थरादनिवासी लघुशाखा में श्रीमालज्ञातीय महं० तोल-राज महं भोलराजने कर्मों का नाश होने के लिये करवाया।

(२२६)

सं० साधुपूर्णिमापक्षीय श्रीसागरचन्द्रसूरि के पट्टधर श्रीसोमचन्द्रसूरि के उपदेश से (धातुमय चतुर्मुख बिम्ब) प्रतिष्ठित करवाया।

(२२७)

सं० ११५९ में शिवराजने श्रीपार्श्वनाथजी का बिम्ब श्रीविजयसेनसूरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

देशाई की सेरी के विमलनाथचैत्य की धातुमूर्त्तियाँ

(२२८)

सं० १५०६ वैशाखशु० ८ रविवार के दिन थारापद्र-निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० मंडन के पुत्र वृद्धिचन्द्र भा० वाहनदेवीने अपने आत्मकल्याणार्थ श्रीचन्द्रप्रभस्वामी-

चतुर्विंशतिजिनपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय त्रिभवित्रिया श्रीधर्मशेखरसूरिने की।

(२२९)

सं० १५१२ ज्येष्ठशु० ५ रविवार के दिन वड्ली-ग्रामनिवासी थारापद्रगच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय महं० गोगन भा० नूंजीवाई पुत्र रसाजन भा० सुहवदेवी, सायर भा० नांईबाईने अपने पिता माता के श्रेयार्थ श्रीआदिनाथ-चतुर्विंशति जिनपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीविजय-सिंहसूरिने की।

(२३०)

सं० १४८५ माघशु० १० शनिवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० सुहड़सिंह भा० साजनदेवी द्वि० भा० श्रीदेवी पुत्र लालचन्द्रने अपने माता, पिता, भ्राता खींदा के श्रेयार्थ श्रीशान्तिनाथचतुर्विंशतिजिनपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय त्रिभवित्रिया श्रीधर्मशेखरसूरिने की।

(२३१)

सं० १५८४ माघकृ० ११ रविवार के दिन राजाधि-राज श्रीसुमित्रराजा माता पद्मावती देवी के पुत्र श्री श्री श्री श्री श्रीमुनिसुव्रतस्वामी का विम्ब सं० कहरदेवी के पुत्र वीहड़देव के पुत्र राजारामने कर्मों के क्षय के लिये करवाया।

(२३२)

सं० १६११ वैशाखशु० १० बुधवार के दिन थिराद्र-नगर निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय वृहच्छाखा में सेवक घुड़-मल हंसराजने स्वकर्मक्षयार्थ श्रीआदिनाथजी का बिम्ब करवाया।

(२३३)

सं० १५६८ माघशु० ५ शुक्रवार के दिन विडारुआ ग्राम निवासी ब्रह्माणगच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० जसराज भा० सलखणाबाई के पुत्र वासराजने अपने तथा माता, पिता के श्रेयार्थ श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का बिम्ब मुनिचन्द्रसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(२३४)

सं० १५६९ ज्येष्ठशु० ५ सोमवार के दिन श्रे० सेवक कालराजने श्रीपार्श्वनाथजी का बिम्ब (प्रतिष्ठित) करवाया।

(२३५)

सं० १५१८ फाल्गुनशु० ९ सोमवार के दिन उपकेश-ज्ञातीय शाह नवलमल भा० नामलबाई के पुत्र देवराज भा० भावदेवीने अपने श्रेयार्थ श्रीसंभवनाथपंचतीर्थी करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा भावडारगच्छीय भ० श्रीभावदेवसूरिने की।

(२३६)

सं० १५३२ ज्येष्ठकृ० ३ रविवार के दिन पटेल शा०

सामन्तराज भा० कर्मादेवी के पुत्र वत्सराजने स्वभा० द्वीपदेवी, रत्नदेवी, भ्राता हीराके पुत्र ठाकुरदेव प्रमुख कुटुम्बी जनों के सहित श्रीविमलनाथ प्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छनायक श्रीलक्ष्मीसागरसूरिने की।

(२३७)

सं० १४८८ कार्तिकशु० २ बुधवार के दिन अंचलगच्छीय श्रीजयकीर्त्तिसूरि के उपदेश से नागरज्ञातीय परीक्षकगोत्रीय व्य० धंधराजने भा० आल्हणदेवी, पुत्र हापराज के श्रेयार्थ श्रीअभिनन्दनस्वामी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीसूरिने की।

(२३८)

सं० १४९९ कार्तिकक्र० २ रविवार के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० वासरदेव भा० रामलदेवी (के पुत्र) धनराजने भ्राता तेजपाल के श्रेयार्थ पिप्पलगच्छीय त्रिभविया श्रीधर्मशेखरसूरि के द्वारा श्रीशीतलनाथजी का बिम्ब थिरापद्रनगर में प्रतिष्ठित करवाया।

(२३९)

सं० १५२० वैशाखशु० ५ बुधवार के दिन श्रीश्रीवंशीय ठ० कन्हैयालाल पुत्र सारंगदेव भा० हरखादेवी के पुत्र महिराज सुश्रावकने स्वभा० कुंवरदेवी, भ्राता शिवराज,

सिंहराज, चतुर्थराज तथा पुत्र जेठमल के सहित माता पिता के श्रेयार्थ अंचलगच्छीय श्रीजयकेशरसूरि के उपदेश से श्रीवासुपूज्यस्वामी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीसंघने करवाई ।

(२४०)

सं० १५२५ ज्येष्ठशु० ५ सोमवार के दिन वयरवाड़ा ग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० सलक्षण भा० प्रेमी के पुत्र व्य० सिंहराजने स्व भा० लीलादेवी (लाड़कुमारी) पुत्र महिराज भोजराज आदि कुटुम्बी जनों के सहित परम कल्याण के लिये श्रीकुन्थुनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा ब्रह्माणगच्छीय श्रीवीरसूरिने की ।

(२४१)

सं० १५८१ माघकृ० १० शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय वृद्धशाखा में सीनारग्राम निवासी श्रे० लालचन्द्र भा० लीलादेवी पुत्र वत्सराज भा० वीझलदेवीने पुत्र धनराज, हंसराज कुटुम्बीजनों के सहित श्रीशान्तिनाथजी का बिम्ब निगमप्रभावक श्रीआनन्दसूरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया ।

(२४२)

सं० १५२३ वैशाखशु० १३ के दिन सुजिगपुर निवासी प्राग्वाटज्ञातीय व्य० मेहराज भा० लांपूबाई के पुत्र महिम-

राजने स्वभा० मरघू पुत्र लटकनदेव, भ्राता नरवद आदि कुटुम्बीजनों के सहित अपने श्रेयार्थ श्रीवासुपूज्यस्वामी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय श्रीलक्ष्मी-सागरसूरि के द्वारा हुई।

(२४३)

सं० १५०६ माघशु० ५ रविवार के दिन ब्रह्माण-गच्छानुयायी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० पेथड़ पुत्र देसल भा० महिगलबाईने अपने श्रेयार्थ जीवितस्वामि श्रीसुमतिनाथजी का बिम्ब श्रीपज्जूनसूरि द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(२४४)

सं० १४९२ फाल्गुनशु० १० शुक्रवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय श्रे० आल्हणसिंह भा० लाडीबाई के पुत्र श्रे० भूभवराजने अपने माता पिता के श्रेयार्थ श्रीसूरि के द्वारा श्रीशीतलनाथप्रभु का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(२४५)

सं० १४२२ ज्येष्ठशु० ५ शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० पीपाने पिता लक्ष्मण, माता लक्ष्मणी, पितृव्य सिंहराज के श्रेयार्थ श्रीविमलनाथ प्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पिप्पलगच्छीय श्रीमुनिप्रभसूरिने की।

(२४६)

सं० १५६४ वैशाखशु० ३ गुरुवार के दिन श्रीश्रीमाल-

(२६६)

ज्ञातीय व्य० वीरदेव भा० शृंगारदेवी के पुत्र वीरमदेव भा० हेमदेवी के पुत्र वेलराजने पिता माता के श्रेयार्थ श्रीवासुपूज्यस्वामी की पंचतीर्थी करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय श्रीरत्नशेखरसूरि के उपदेश से हुई।

(२४७)

सं० १५८१ माघशु० ५ गुरुवार के दिन आदियाणपुरनिवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय महं० रत्नराज पुत्र....भा० प्रीतमदेवीने अपने कुटुम्बीजनों के श्रेयार्थ श्रीमुनिसुव्रतस्वामी की पंचतीर्थी आगमगच्छीय श्रीसोमरत्नसूरि के उपदेश से प्रतिष्ठित करवाई।

(२४८)

सं० १५०७ वैशाखशु० ११ सोमवार के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० जयंतराज भा० वामूणदेवी के पुत्र आल्हणदेवने अपने पिता माता के तथा अपने श्रेयार्थ पिप्पलगच्छीय त्रिभविया भट्टा० श्रीचन्द्रप्रभसूरि के द्वारा श्रीवासुपूज्यस्वामी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(२४९)

सं० १३९२ वैशाख कृ० ७ शुक्रवार के दिन श्रीमालज्ञातीय श्रे० वयरणसिंह भा० विजयादेवी....पिता माता के श्रेयार्थ श्रीपार्श्वनाथ प्रभु का बिम्ब श्रीदेवेन्द्रसूरि के पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(२५०)

सं० १६८१ व्यव० नानदेवने श्रीशान्तिनाथप्रभु का बिम्ब (प्रतिष्ठित) करवाया ।

(२५१)

सं० १६२४ फाल्गुनशु० ४ मंगलवार के दिन श्री-सूरिने श्रीसुमतिनाथजी का बिम्ब प्रतिष्ठित किया ।

सुनारों की सेरी के पार्श्वनाथचैत्य में धातुमूर्त्तियाँ—

(२५२)

सं० १५०८ वैशाखकृ० ४ सोमवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय श्रे० नयनराजने भा० टहिकुबाई, पुत्र श्रे० लक्ष्मणदेव, हेमराज और दूदा कुटुम्बसहित पिता माता के श्रेयार्थ श्रीशान्तिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा सिद्धान्तीय श्रीसोमचन्द्रसूरि के द्वारा हुई ।

(२५३)

सं० १६१७ पौषकृ० १ गुरुवार के दिन राजाधिराज श्रीअश्वसेन राज्ञि श्रीवामादेवी के पुत्र श्री श्री श्रीपार्श्वनाथ-प्रभु का बिम्ब थिरापद्र निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० कुरा धींगा के पुत्रोंने कर्मों के क्षय के लिये(प्रतिष्ठित) करवाया।

आमली सेरी के सुपार्श्वचैत्य में धातुमूर्त्तियाँ–

(२५४)

सं० १५०८ ज्येष्ठशु० ७ बुधवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय सांडलगोत्रीय शाह हापराज़ भा० वीराबाई के पुत्र शा० पोपट सुश्रावकने भा० माल्हणदेवी, दोहित्र लक्ष्मणदेव, सलक्षण के सहित पुत्र मला के श्रेयार्थ अंचलगच्छीय श्रीजयकेशरसूरि के उपदेश से श्रीवासुपूज्यस्वामी का बिम्ब करवाया, और उसकी प्रतिष्ठा श्रीसंघने करवाई।

(२५५)

सं० १४९९ वैशाखकृ० ४ गुरुवार के दिन उपकेश-ज्ञातीय कीकाने पिता भालराज, माता मोखलबाई के श्रेयार्थ श्री नमिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा भावडारगच्छीय भट्टा० वीरसूरिने की।

(२५६)

सं० १५०८ ज्येष्ठशु० १० सोमवार के दिन प्राग्वाट-ज्ञातीय व्य० मोकलदेवने भा० दूयडदेवी, पुत्र हीराचन्द्र, व्य० सहजराज पुत्र ऊतल के सहित अपने श्रेयार्थ श्रीश्रेयांस-नाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा जीरापल्ली-गच्छीय श्रीउदयचन्द्रसूरिने की।

(२५७)

सं० १६८३ वैशाखशु० ७ गुरुवार के दिन राजधन्यपुर (राधनपुर) निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय शा० हरदासने भा० हीरादे सहित श्रीशीतलनाथजी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ....(यहाँ आचार्य का नाम होना चाहिये)

(२५८)

सं० १५६७ ज्येष्ठशु० ५ बुधवार के दिन मूलसंघीय शा० हीरादेवीने (पंचतीर्थी करवाई)

(२५९)

सं० १२०९ उद्दूल की पुत्री दोलिकाने (दौलतदेवी) यह चतुर्विंशतिजिनपट्ट करवाया।

राशिया की सेरी के अभिनन्दन चैत्य में धातुमूर्त्तियाँ–

(२६०)

सं० १५५३ आषाढशु० २ शुक्रवार के दिन पत्तन-निवासी प्राग्वाटज्ञातीय वृद्धशाखा में सं० सेंगा भा० हरखू पुत्र सं० अमा (अमृतराज) ने भा० लीलादेवी पुत्र क्षेमा, सिन्धु, लखमण, अलवा, धना सहित अपने कल्याणार्थ श्रीमुनिसुव्रतस्वामी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा

(२६०)

पूर्णिमापक्षीय भीमपल्लीय भट्टा० श्रीचारित्रचन्द्रसूरि के पट्टधर भ० श्रीमुनिचन्द्रसूरि के उपदेश से हुई।

(२६१)

सं० १५१९ माघशु० ५ सोमवार के दिन थिरापद्र-नगर निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय गांधिक हापराज भा० हमीरदेवी के पुत्र जागराजने स्वभा० यमुनादेवी पुत्र वेला, ऊगम, मादा खेता के सहित पिता, माता, भ्राता मंडन के श्रेयार्थ श्रीधर्मनाथचतुर्विंशति जिनपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय प्रधान भट्टा० श्रीजयसिंहसूरि के पट्ट-धर श्रीजयप्रभसूरि के उपदेश से हुई।

मोदियों की सेरी के विमलनाथचैत्य में धातुमूर्त्तियाँ—

(२६२)

सं० १५१५ फाल्गुनशु० ४ शनिवार के दिन श्रीश्री-मालज्ञातीय रत्नपाल भा० रत्नादेवी के पुत्र शाह नागचने भा० ललितादेवी, पुत्र गोवल भा० रूपिणी के श्रेयार्थ, भ्राता सं० डूंगरने भा० झांझदेवी पुत्र गोपा सहित भोजा, विजयराजने श्रीनमिनाथमुख्य चतुर्विंशतिजिनपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुरत्नसूरि के पट्टधर श्रीसाधुसुन्दरसूरि के उपदेश से सचिनगर में हुई। (प्रतीत

ा होता है कि भोज और विजयराज अविवाहित थे। ारोंने मिलकर पट्ट प्र० करवाया।)

(२६३)

सं० १५१९ मार्गशिरशु० ५ शुक्रवार के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० हिमाला भा० हिमादेवी के पुत्र वनराजने अपने श्रेयार्थ भा० चांपू, पुत्र पर्वत, नरवर, नायक, नलराज, जुगराज, लक्षराज सहित श्रीचन्द्रप्रभस्वामी का बिम्ब अंचलगच्छीय श्रीजयकेशरसूरि के उपदेश से प्रतिष्ठित करवाया।

(२६४)

सं० १५२० पौषक० ५ शुक्रवार के दिन श्रीमूलसंघीय व्य० कृष्णराज भा० झबुबाई पुत्र माणक भा० वारुबाई के पुत्र हरिदासने सरस्वतीगच्छीय भट्टा० सकलकीर्त्ति के पट्टधर भट्टा० श्रीविमलेन्द्रकीर्त्ति के द्वारा श्रीआदिनाथ का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया। (दिगम्बरमतीय)

(२६५)

सं० १६११ फाल्गुनक० २ शुक्रवार के दिन कडुआमतानुयायिनी निसहुबाईने और थिरापद्रनिवासी सुहत्ताबाईने श्रीसुमतिनाथजी का बिम्ब (प्रतिष्ठित) करवाया।

(२६६)

सं० १६६१ फाल्गुनक० २ शुक्रवार के दिन गृहीउद

वंत भा० हृषाबाई के पुत्र वापराजने श्रीअभिनन्दनस्वामी का बिम्ब (प्रतिष्ठित) करवाया ।

(२६७)

सं० १५८.... वैशाखकृ० ५ के दिन वेलागरीग्राम निवासी प्राग्वाटज्ञातीय शाह दूदराजने भा० जाणीबाई पुत्र जयवंतराज सहित अपने कल्याणार्थ श्रीश्रेयांसनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा पूर्णिमापक्षीय भट्टा० श्री-जिनहर्षसूरि के उपदेश से हुई ।

सुतारों की सेरी के शांतिनाथचैत्य में धातुमूर्त्तियाँ

(२६८)

सं० १४८२ ज्येष्ठशु० ९ मंगलवार के दिन श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय व्य० महिपाल भा० मीनलबाई पुत्र हरिभ्रम, पौत्र चांपा, पाल्हा, सिन्धु, नरवदने पिता, माता, भ्राता, तथा पुत्रों के श्रेयार्थ श्रीआदिनाथमुख्यचतुर्विंशतिबिम्बपट्ट कराया, जिसकी प्रतिष्ठा थारपद्रगच्छीय श्रीशान्तिसूरिने की ।

(२६९)

सं० १५१८ फाल्गुनकृ० १ सोमवार के दिन उपकेश-ज्ञातीय नाहरगोत्रीय व्य० कुशलचन्द्रने भा० कील्हणबाई पुत्र त्रिहुणा, महणा, पेमा, अंमर सहित अपने पिता व स्व-श्रेयार्थ श्रीसुविधिनाथचतुर्विंशतिजिनपट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीधर्मघोषगच्छीय श्रीपद्मानन्दसूरिने की ।

(२७०)

सं० १५८७ वैशाखकृ० ७ सोमवार के दिन काकर-ग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० साइआ पुत्र श्रे० सवाने भा० चानूबाई पुत्र लटकण भा० लाखणदेवी समस्त कुटुम्बी जनों के सहित श्रीशान्तिनाथप्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीसूरिने की।

(२७१)

सं० १६१७ ज्येष्ठशु० ५ सोमवार के दिन ओसवाल-ज्ञातीय व्य० रायमल भा० श्रीबाई पुत्र हीरा भा० जीवा-बाई पुत्र सिंहराजने श्रीशान्तिनाथजी का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय श्रीविजयदानसूरिने की।

(२७२)

सं० १५१९ मार्गशिरशु० ६ शनिवार के दिन रत्नपुर-वासी प्राग्वाटज्ञातीय लघुशाखा में मं० अरिसिंह भा० बाई-देवी पुत्र सं० गोपासुश्रावकने भा० सुलहश्री पुत्र देवदास, शिवदास, सहित अपने श्रेयार्थ अंचलगच्छाधिराज श्रीजय-केशरसूरि के उपदेश से श्रीसंभवनाथजी का बिम्ब करवाया, श्रीसंघने उसकी प्रतिष्ठा करवाई।

(२७३)

सं० १४९४ माघशु० ५ सोमवार के दिन श्रीश्रीमाल-

ज्ञातीय व्य० साहवण भा० सोनहलदेवी के पुत्र संग्रामसिंहने पितृव्य छाड़ा के श्रेयार्थ पूर्णिमापक्षीय श्रीजयप्रभसूरि के उपदेश से श्रीकुन्थुनाथस्वामी का बिम्ब करवाया और श्रीसंघने उसकी प्रतिष्ठा करवाई।

श्री जीरापल्ली(जीराउला)तीर्थ—

जीरावला पार्श्वनाथ नाम से यह तीर्थ प्रसिद्ध है। इस पुस्तकगत लेखों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह तीर्थ पन्द्रहवीं शताब्दि में अधिक प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ है; जिसका प्रारम्भ तेरहवीं शताब्दि का अन्त या चौदहवीं शताब्दि में हुआ होना चाहिये। इस बावन जिनालयवाले सौधशिखरी मन्दिर की मूलनायक प्रतिमा भगवान् पार्श्वनाथ की है। पहली, पांचवीं, सोलहवीं, चौवीसवीं, पच्चीशवीं, छब्बीशवीं और सत्तावीशवीं देवकुलिका ऐसी हैं कि जिन में से कुछ पर तो लेख हैं ही नहीं और कुछ पर के लेख अतिजीर्ण और अस्पष्ट हैं। इनके अतिरिक्त अन्य सर्व देवकुलिकाओं के शिलालेख इस में संग्रहित किये गये हैं। देवकुलिका नम्बर छियालीश, उगुणपचास, पचास और अट्ठावने के शिलालेख क्रमशः संवत् १२६३, सं० १४११, सं० १४१२ और सं० १४१३ के हैं। छियालीशवीं देवकुलिका का लेख सर्व से प्राचीन है। इनमें से द्वितीय और चतुर्थ में श्रीदेवचन्द्रसूरि के पट्टधर श्रीजिन-

सूरि के पट्टधर श्री रामचन्द्रसूरि का नाम है और तृतीय के लेख में श्रीविजयसेनसूरि के शिष्य श्रीरत्नाकरसूरि का नाम है।

सतरहवीं, अडतालीशवीं और बियालीशवीं देवकुलिकाओं के लेखों में किसी भी आचार्य या साधु का नाम नहीं है, परन्तु देवकुलिकाओं के अतिरिक्त एक लेख के सर्व ही लेख पन्द्रहवीं शताब्दि के ही हैं। अन्तिम लेख सं० १४९२ का है। इस तीर्थ की प्रसिद्धि करवाने का अधिक श्रेय तपागच्छ के महान् आचार्य श्रीदेवसुन्दरसूरि के शिष्य श्रीसोमसुन्दरसूरि की शिष्य परम्परा में श्री जयचन्द्रसूरि श्री भुवनचन्द्रसूरि और श्री जिनचन्द्रसूरि को है।

देवकुलिका नम्बर आठ, नौ, दश, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह, पन्द्रह, उन्नीश, तेवीश और इकावन के शिलालेखों में श्रीसोमसुन्दरसूरि के चतुर्थ पट्टधर श्रीभुवनचन्द्रसूरि का नाम है। देवकुलिका नम्बर अठारह के लेख में कृष्णर्षिगच्छ के श्रीजयसिंहसूरि का, देवकुलिका नम्बर बीस के लेख में धर्मघोषगच्छ के श्रीविजयचन्द्रसूरि का और देवकुलिका नं० बावीस के द्वितीय लेख में मल्लधारीगच्छ के श्रीविद्यासागरसूरि का नाम है। ये सर्व लेख सं० १४८३ भाद्रपदकृष्णा सप्तमी गुरुवार के हैं। इन लेखों से प्रगट होता है कि सं० १४८३ में जीरापल्लीतीर्थ में उक्त चारों

आचार्यों का एक साथ चतुर्मास था और इन आचार्यों के दर्शनार्थ अनेक समीपवर्ती ग्राम नगरों से व्यक्ति और संघ आये थे। कलवर्ग्रा नगर का संघ अधिक उल्लेखनीय है। इस संघ के व्यक्तियों द्वारा विनिर्मित उक्त देवकुलिकाओं में श्रीभुवनचन्द्रसूरि का नाम है; जिस से प्रगट होता है कि कलवर्ग्रा में अधिकतर जैन तपागच्छ के अनुयायी थे। इस समय तक जीरापल्ली एक प्रसिद्ध स्थान बन गया था और उसकी समृद्धि इतनी बढ़ गई थी कि उक्त चारों महान् आचार्यों के चतुर्मास का भार एक साथ वहन करने की उस में क्षमता थी।

पन्द्रहवीं, सोलहवीं, सतरहवीं और उन्नीशवीं शताब्दि के पूर्वार्ध का कोई लेख नहीं है। अन्तिम लेख बावनवीं देवकुलिका के षट्चतुष्किका के स्तम्भ पर उत्कीर्णित सं० १८५१ आश्विन पूर्णिमा का है, जब कि श्रीरंग-विमलसूरिजी द्वारा इस तीर्थ का जीर्णोद्धार करवाया गया था और ३०११) रुपये इस शुभ कार्य में व्यय हुए थे। एक से एकतालीश तक के शिलालेख इसी तीर्थ के हैं, जिनका हिन्दी अनुवाद नीचे दिया गया है। लेखों में जो तिथियों और दिवसों की अजीब अनमेलता है, भरसक सुलझाने का प्रयत्न करने पर भी कहीं कहीं पूरी असफलता रही है। एक उदाहरण नीचे देखिये—

निर्माण दिवस	देवकु०	लेखाङ्क	आचार्य
सं० १४८३ वै० कृ० १३ गुरुवार	२८	२१	जयकीर्त्तिसूरि
,, ,, ,,	२९	२३अ-ब	,,
सं० १४८३ प्र० वै० कृ० १३ गुरुवार	३०,३४	२३,२७	,,
,, ,, ,,	३५	२८	,,
,, प्र० वै० कृ० ७ रविवार	४३,४४	३२,३३	जयचन्द्रसूरि
,, भाद्र० कृ० २ गुरुवार	५१	४०	भुवनसुन्दरसूरि
,, भाद्र० कृ० ७ शुक्रवार	५२(अ)	४१	,,

देवकुलिका नं० २८, २९ के शिलालेख संवत् १४८३ वैशाखकृष्णा त्रयोदशी गुरुवार के हैं और देवकुलिका नं० ३०, ३४ के शिलालेखों में वैशाख के पीछे 'प्रथम' शब्द जुड़ा है, परन्तु तिथि, वार और आचार्य का नाम देखते हुए ये सर्व लेख एक ही दिन और एक ही मास के हैं। हो सकता है दोनों प्रथम लेख वैशाख के हो अथवा द्वितीय के। कभी कभी संभवतः तिथियों की ऐसी भी घटती बढ़ती हो सकती है कि दो महिनों की कुछ तिथियाँ और वार एक ही आ पड़ते हैं। परन्तु अन्तर तो यहाँ आ पड़ता है कि प्र० वैशाख कृष्णा त्रयोदशी को दिन गुरुवार था जो प्र० वै०कृ० सप्तमी को रविवार कैसे पड़ सकता था। इसी प्रकार भाद्रपदकृष्णा द्वितीया को और सप्तमी को क्रमशः गुरुवार और शुक्रवार कैसे पड़ सकते हैं ? जब कि लेखाङ्क ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १६, २० के

अनुसार भाद्रपदकृष्णा सप्तमी को गुरुवार था। दो दो तिथियों के टूटने पर ही ऐसा संभाव्य है, सो प्रायः संभव नहीं, अति कठिन है।

(२७४ से २७६)

देवकुलिका नं० २, ३, ४.

स्वस्ति श्री सं० १४८१ वैशाखशु० ३ के दिन बृहत्तपापक्ष भट्टा० श्रीरत्नाकरसूरि के अनुक्रम से हुए श्री-अभयसिंहसूरि के पट्टारूढ़ श्रीजयतिलकसूरीश्वर के पाट को अलंकृत करनेवाले भट्टारक श्रीरत्नसिंहसूरि के उपदेश से वीसलनगरनिवासी प्राग्वाटवंश को सुशोभित करनेवाले श्रे० खेतसिंह का पुत्र श्रे० देहलसिंह का पुत्र श्रे० खोखा भा० पिंगलदेवी उसके पुत्र सं० सादा, सं० हादा, सं० मादा, सं० लाखा, सं० सिधा द्वारा इस तीर्थ के चैत्य में तीन देव-कुलिकायें अपने कल्याणार्थ बनवाई।

पूर्णचन्द्र नाहर एम. ए. बी. एल.ने अपने 'लेखसंग्रह' प्रथम भाग के लेखाङ्क ९७७ को जो लेख उद्धृत किया है, इससे बहुत अधिक मिलता है। उन्होंने पिंगलदेवी के स्थान पर पिनलदेवी, सं० मूदा सं० मादा० के स्थान पर और देहल, हादा न लिख कर स्पष्ट देवल और दादा लिखा है और सं० लाखा का नाम ही नहीं है जो विचा-रणीय है।

(२७७)

देवकुलिका नं० ६.

सं० १४८७ पौषशु० २ रविवार के दिन अंचलगच्छ के श्रीमेरुतुङ्गसूरि के पट्टधर गच्छनायक श्रीजयकीर्त्तिसूरि के उपदेश से पुंगलनिवासी प्राग्वाटज्ञाति के शा० भाणा पुत्र शा० जामद (झामट) की पत्नी सं०............

(२७८)

देवकुलिका नं० ७.

सं० १४८७ पौषशु० २ रविवार के दिन तपागच्छीय श्रीदेवसुन्दरसूरि के पट्टधर श्रीसोमसुन्दरसूरि श्रीमुनिसुन्दर-सूरि श्रीजयचन्द्रसूरि श्रीभुवनसुन्दरसूरि श्रीजिनचन्द्रसूरि के उपदेश से पत्तन निवासी प्राग्वाटज्ञातीय शा० लाला के पुत्र शा० नाथू शा० मेघा पुत्र भीमा, खीमाने अपने कल्याणार्थ देवकुलिका करवाई।

लेखाङ्क ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १६, २० के अनुसार सं० १४८७ भाद्रपदकृ० ७ गुरुवार के रोज तपागच्छ के देवसुन्दरसूरि के पट्टधर दुर्धरचारित्र धारक सोमसुन्दरसूरि मुनिसुन्दरसूरि जयचन्द्रसूरि भुवनसुन्दरसूरि के उपदेश से कलवर्गानगर के जिन निवासीयोंने देव-कुलिकायें–आठ, नौ, दश, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह,

पन्द्रह, उन्नीश और तेंतीश बनवाई केवल उनका उक्त लेखों में वर्णित वंशो का परिचय ही यथाक्रम दिया जायगा। प्रतिष्ठाकर्त्ता इन सब के एक ही आचार्य हैं, अतः प्रतिष्ठाकर्त्ता का नामोल्लेख भी पुनः पुनः नहीं किया जायगा।

(२७९)

देवकुलिका नं० ८

×××××××× कलवर्गानिवासी ओसवालज्ञातीय शा० घणसिंह की सन्तति में शा० जयता भा० तिलकूबाई के पुत्र समरसिंह, सं० मोखसिंहने जीरावलाचैत्य में देव-कुलिका बनवाई। श्रीपार्श्वनाथ की कृपा से मंगल होवे।

(२८०)

देवकुलिका नं० ९

×××××××× कलवर्गानगरनिवासी ओसवाल-ज्ञातीय शा घणसी सन्तानीय शा० जयता बाई तिलकू पुत्र सं० समरसिंह सं० मोखसिंहने श्रीजीरावलातीर्थचैत्य में देवकुलिका करवाई। श्रीपार्श्वनाथ की कृपा से मंगल होवे।

(२८१)

देवकुलिका नं० १०

××××××× कलवर्गानगरवासी ओसवालज्ञातीय

(२८१)

शा० धणसी (धनसिंह) सन्तति में शा० जयता (जयंत-सिंह) भा० तिलकूबाई पुत्र सं० समरसिंह सं० मोखसिंहने श्रीजीराउलातीर्थ के चैत्य में देवकुलिका बनवाई। पार्श्वनाथ की कृपा से मंगल होवे।

(२८२)

देवकुलिका नं० ११

xxxxxxx कलवर्गानगरनिवासी ओसवाल कटारिया गोत्रीय कोठारी छाहड़ सामन्त की सन्तति में को० नरपति भा० देमाई के पुत्र सं० तूकदेव, पासदेव, धुनसी (पुण्यसिंह), मूलाने जीरापल्लीतीर्थ के चैत्य में देवकुलिका करवाई। श्री पार्श्वप्रभु की कृपा से मंगल होवे। मेरा श्रेष्ठ कटारिया गोत्र है, मेरे पिता नरपति, मेरी माता देमाई हैं, और श्रीसोमसुन्दरसूरिजी मेरे गुरु हैं जो श्रीछीलज? मेड़ता मात्र की पौषालों में वन्दनीय गुरुदेवों के गुरुदेव माने जाते हैं।

पूर्णचन्द्रनाहरने अपने 'लेखसंग्रह' के प्रथम भाग में यह लेख कुछ अंश को छोड कर सारा लेखाङ्क ९७४ में उध्घृत किया है। उसमें नाहरजीने 'श्रीछालजमंडनमात्र-शालं' उल्लिखित किया है; जिसका भी क्या अर्थ बैठता है? समझ में नहीं आया। छालज की जगह छाहड़ होता तो भी कुछ संगति होती।

(२८३)

देवकुलिका नं० १२

×××××××× कलवर्ग्रानिवासी ओसवालज्ञातीय वरहड़ियागोत्र के शा० झांझा की सन्तति में शा० उदयन भा० छीतू के पुत्र सं० आशपालने जीशपल्ली चैत्य में देवकुलिका करवाई, श्रीपार्श्वनाथ की कृपा से मंगल होवे।

(२८४)

देवकुलिका नं० १३

×××××××× कलवर्ग्रानिवासी ओसवालज्ञातीय नाहरगोत्र में शा० वीगा की सन्तति में शा० उदयसी (उदयसिंह) भा० वामलदेवी के पुत्र शा० पद्मसिंहने जीराउलातीर्थ के चैत्य में देवकुलिका करवाई। पार्श्वप्रभु की कृपा से मंगल होवे।

(२८५)

देवकुलिका नं० १४

×××××××× कलवर्ग्रानिवासी ओसवालज्ञातीय सांवलगोत्र में शा० धणसिंह की सन्तति में सं० माला भा० सं० पूनाई के पुत्र जगसिंह, सं० खोखसी भा० वाईहीरू के पुत्र सं० कमलसिंहने अपनी माता कस्तूरी के श्रेयार्थ पार्श्वनाथ की कृपा से जीराउलाचैत्य में देवकुलिका करवाई।

(२८३)

लेखाङ्क आठ में वर्णित वंश में प्रसिद्ध पुरुष धणसिंह ही इस लेख में वर्णित धणसिंह है। अन्तर इतना ही है कि इस लेखाङ्क में गोत्र दिया है और उसमें नहीं। दोनों कुल एक ही संतति के हैं।

(२८६)

देवकुलिका नं० १५

×××××××× कलवर्ग्गानिवासी ओसवालज्ञातीय मं० मलुसिंह की सन्तति में सं० रतना भा० वीरूबाई के पुत्र आमलसिंहने अपने पुत्र सं० गुणराज, सं० हंसराज के सहित पार्श्वप्रभु की कृपा से जीरावलाचैत्य में देवकुलिका बनवाई।

(२८७)

देवकुलिका नं० १७

सं० १४७४ श्रावणशु० ५ शनिवार के दिन खरतर-पक्षीय मं० लूणा सन्तान में मं० झूला, हापल सन्तान में मं० मूला पुत्र भीमा, हीरु, वाल्हण .... मं० हीराने ....।

(२८८)

देवकुलिका नं० १८

सं० १४८३ भाद्रपद कृ० ७ गुरुवार के दिन कृष्णर्षि-

(२८४)

गच्छ में तपापक्षी श्रीपुण्यप्रभसूरि के पट्टधर गच्छनायक श्रीजयसिंहसूरि के उपदेश से छाप्रुकीगोत्रीय चन्द्रपुर-निवासी पद्मसिंह का पुत्र चन्द्रसिंह पुत्र भाणसिंह पुत्र पुण्य-सिंह भार्या पुण्यश्री (और) शा० धणसिंह (भार्या) वामीबाई का पुत्र धनराज ओसवालज्ञातीयने जीरापल्ली तीर्थ में चतुष्किा पर शिखर बनवाया।

(२८९)

देवकुलिका नं० १९

×××××××× कलवर्ग्गानिवासी ओसवालज्ञातीय सोनी नाहरगोत्र के सं० खेतसिंह के पुत्र सं० क्षेमसिंह, सं० नहनसिंह के पुत्र सं० करणसिंह सं० पासवीर, भगिनी, भा० तिलकू आदिने जीरावलीतीर्थचैत्य में चतुष्किका शिखर करवाया।

(२९०)

देवकुलिका नं० २०

सं० १४८३ भाद्रपद कृ० ७ गुरुवार के दिन धर्मघोष-गच्छ के श्रीमलयचन्द्रसूरि के पट्टधर श्रीविजयचन्द्रसूरि (के उपदेश से) ओसवालज्ञातीय नाहरगोत्र के शा० आल्हा का पुत्र शा० साल्हा भा० मणिबाई के पुत्र रत्नसिंह के पुत्र पासराजने जीरापल्लीतीर्थचैत्य में चतुष्किा शिखर करवाया। श्रीपार्श्वनाथ की कृपा से मंगल होवे।

(२९१)

देवकुलिका नं० २१

सं १४८३ भाद्रपदकृ० ७ गुरुवार के दिन कृष्णर्षि-गच्छ के तपापक्षीय श्रीपुण्यप्रभसूरि के पट्टधर गच्छनायक श्रीविजयसिंहसूरि के उपदेश से कलवर्गानिवासी ओसवाल-ज्ञातीय गोष्ठी(गांधी) गोत्र के ढाकल पुत्र शा० लोहिग का पुत्र शा० आंबा भार्या पोमादेवी के पुत्र शा० अजय-सिंह के भ्राता सं० आशूने जीरापल्लीतीर्थचैत्य में चतुष्किका शिखर करवाया ।

(२९२ अ)

देवकुलिका नं० २२

सं० १४२४ वैशाखकृ० २ गुरुवार के दिन बृहद्गच्छा-धिपति श्रीदिन्नविजयसूरि द्वारा कलवर्गा वास्तव्य ओसवाल-ज्ञातीय धर्वकर्मणने भार्या कर्मादेवी, खीमादेवी के साथ खीमादेवी के कल्याण के लिये श्रीपार्श्वनाथ देवकुलिका करवाई।

(ब)

सं० १४८३ भाद्रपदकृ० ७ गुरुवार के दिन मल्लधारी-गच्छ के श्रीमतिसागरसूरि के पट्टधर श्रीविद्यासागरसूरि के उपदेश से कलवर्गा निवासी ओसवालज्ञातीय गांधीगोत्र के शा० दलह का पुत्र शा० पोमा का पुत्र सं० शंसुआ भा०

(२८६)

संघविणी राजूदेवी के पुत्र सं० तुकदेव सं० सहदेवने जीरा-उलीचैत्य में चतुष्किका बनवाई।

(२९३)

देवकुलिका नं० २३

×××××××× कलवर्ग्गानिवासी श्रीमालज्ञातीय ठ० डूंगर भा० चंपादेवी के पुत्र ठ० मोखसिंह, रतनसिंहने जीरापल्लीतीर्थचैत्य में चतुष्किका शिखर बनवाया।

(२९४)

देवकुलिका नं० २८

सं० १४८३ वैशाखकृ० १३ गुरुवार के दिन अंचल-गच्छ के श्रीजयकीर्त्तिसूरि के उपदेश से ओसवालज्ञातीय दुग्धेड़गोत्र के शाह लक्ष्मणसिंह शा० भीमल शा० देवल शा० सारंग शा० झांझा भा० मेघूबाई, शा० पूंजा, भंजा आदिने देवकुलिका करवाई।

(२९५ अ)

देवकुलिका नं० २९

सं० १४८३ वैशाखकृ० १३ गुरुवार के दिन अंचल-गच्छ के श्रीजयकीर्त्तिसूरि के उपदेश से दुग्धेड(दुधेडिया) शाखा में शा० लखमसी(लक्ष्मणसिंह) शा० भीमल, शा० देवल, शा० सारंग के पुत्र शा० डोसा भा० लक्ष्मीबाई शा० चांपा, शा० डूंगर, शा० मोखाने देवकुलिका करवाई।

(ब)

....................शा० सारंग भा० प्रतापदेवी के पुत्र डोसा भार्या लक्ष्मीदेवी, शा० चांपा, शा० डूंगर, सारंग की पुत्रवधू भीखी और कौतुकदेवी, पितृव्य शा० पूंजाने देवगुरु की कृपा से तीन देवकुलिकायें अंचलगच्छीय श्रीमेरुतुङ्गसूरि के पट्टधर श्रीजयकीर्त्तिसूरि के उपदेश से जीरापल्लीतीर्थचैत्य में करवाई।

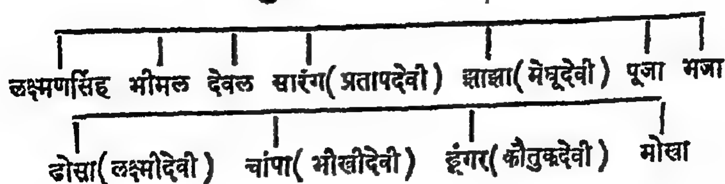
शिलालेखों का अध्ययन भी एक कला है। शिलालेखों के अर्थकर्ता ही इस कला की जटिलता को समझ सकते हैं। देवकुलिका नम्बर २८, २९ के लेखों में दुग्धेड़वंशी जिन जिन व्यक्तियों का नामोल्लेख हैं, वह इस ढंग से है कि अधिकांश के पारस्परिक सम्बन्ध का अनभ्यस्त पाठकों को सहज पता नहीं पड़ता। लेखाङ्क २९४ के अनुसार लखसी (लक्ष्मणसिंह), भीमल, देवल, सारंग, पूंजा और भजा भ्रातृगण हैं। इनके मध्य में पुत्र आदि कोई विभाजक शब्द नहीं है। विशिष्ट चिह्न 'शा' का प्रयोगक्रम भी यही सिद्ध करता है।

लेखाङ्क २९५ (अ) के अनुसार उपरोक्त स्थिति को ध्यान में रखते हुए यही प्रतीत होता है कि डोसा, चांपा, डूंगर, मोखा भ्रातृगण हैं और ये सारंग के पुत्र हैं। (ब) के अनुसार सारंग की पुत्रवधू भीखी और

शा० लक्ष्मणसिंह, भीमल, देवल या तो इस समय तक मर चुके हैं या निस्सन्तान हैं या देवकुलिकाओं के बनवाने में उनका द्रव्य नहीं लगा है, इसीलिये उनकी सन्तान और स्त्रियों का नामोल्लेख नहीं है। पूंजा और भजा का भी द्रव्य देवकूलिकाओं के करवाने में व्यय नहीं हुआ प्रतीत होता है। झांझा की स्त्री का नामोल्लेख होना और सारंग की स्त्री का नामोल्लेख लेखाङ्क २९४ में नहीं होना प्रगट करता है कि देवकुलिका नं० २८ झांझाने अपने द्रव्य से बनवाई और अपने भ्राता के नाम सौजन्यता और भ्रातृ-प्रेम के कारण अपने शिलालेख में उत्कीर्ण करवाये।

लेखाङ्क २९५ (अ) से भी यही विदित होता है कि डोसाने द्रव्य व्यय किया और लेख में उसके भ्राताओं का नाम होना उसकी सौजन्यता प्रकट करता हैं। लेखाङ्क २९५ (ब) में डूंगर, चांपा की स्त्रियों का भी नाम है तथा पितृव्य शा० पूंजा का भी नाम है इस से विदित होता है कि इस लेख में जितने भी व्यक्ति हैं उन सब का द्रव्य लगा है।

बुग्घेड़ वंशवृक्ष।



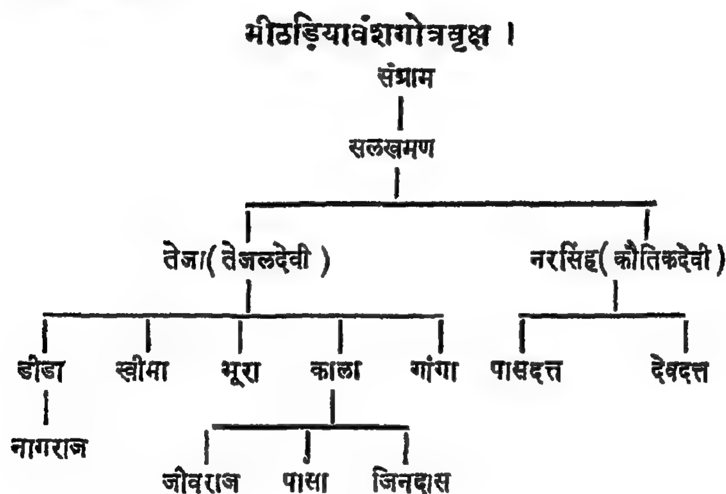
(२९६–३००)

देवकुलिका नं० ३०, ३१, ३२, ३३, ३४।

सं० १४८३ वैशाखकृ० १३ गुरुवार के दिन अंचल-गच्छ के श्रीमेरुतुङ्गसूरि के पट्टधर जगच्चूडामणि श्रीजय-कीर्तिसूरि के उपदेश से पत्तनवास्तव्य ओसवालज्ञातीय मीठड़िया गोत्र के शाह संग्राम पुत्र शाह सलखमण पुत्र शा० तेजा भार्या तेजलदेवी पुत्र शा० डीडा, शा० खीमा, शा० भूरा, शा० काला० शा० गांगा, शा डीडा पुत्र शा० नागराज, काला पुत्र शा० पासा, शा० जीवराज, शा० जिनदास, शा तेजा का द्वितीय भ्राता शा० नरसिंह भार्या कौतिक(कौतुक)देवी पुत्र शा० पासदत्त और देवदत्तने जीरापल्लीतीर्थ चैत्य में तीन देवकुलिकायें बनवाई। श्रीदेव-गुरु की कृपा से उत्तरोत्तर मंगल वृद्धि होवे।

३१ से ३४वीं नम्बर की देवकुलिकाओं पर भी लेख इसी प्रकार के सांगोपांग मिलते हुए कुछ परिवर्त्तन के साथ अलग अलग उत्कीर्णित हैं। उन में अन्तर इतना ही है कि ३२वीं देवकुलिका शा० डीडा के पुत्र नागराज की पत्नी नारंगीने, ३३वीं देवकुलिका शा० नरसिंह की पत्नी रूड़ी श्राविकाने और ३४वीं देवकुलिका शा० खीमा की पत्नी खीमादेवीने अपने अपने श्रेयार्थ बनवाई। उक्त लेख

में तीन देवकुलिकायें बनवाने का स्पष्ट उल्लेख है, परन्तु ऐसा ज्ञान पड़ता है कि दो देवकुलिका उपरोक्त लेख लगाने के बाद में बनावाई गई हों और बाद में उन पर लेख उत्कीर्णित हुए हों। मीठड़िया गोत्रवंश का वृक्ष इस प्रकार है—



(३०१)

देवकुलिका नं० ३५.

सं० १४८२ वैशाख कृ० १३ गुरुवार के दिन अंचलगच्छ के श्रीमेरुतुङ्गसूरि के पट्टधर श्रीजयकीर्तिसूरि के उपदेश से स्तम्भतीर्थ निवासी श्रीमालीज्ञातीय परीक्षक अमरा भा० माऊ के पुत्र परीक्षक गोपाल, प० राउल, प० ढोला भार्या हिचकू पुत्र प० पूना भार्या ऊंदी, प० सोमा,

(२९१)

प० राउल पुत्र भोजा, प० सोमा पुत्र आशा और हिचकूने अपने श्रेयार्थ देवकुलिका (जीरापल्ली तीर्थ में) करवाई।

पारी, पारीख और पारख गोत्र आज भी विद्यमान है जो परीक्षक का अपभ्रंस शब्द है। शिलालेखकोंने लेखों में परीक्षक न लिख कर 'परीक्ष' लिख दिया है।

(३०२)

देवकुलिका नं० ३८ के स्तम्भ पर—

सं० १५३४ वैशाखकृ० १० सोमवार के दिन सं० रत्ना के मित्र, न्याति मलुकगोत्रीय सं० जीवा के पुत्र सं० मंडन, जीवन, जीवदेव, खेता सहित मांडलगढ़ से (यहाँ अभिवर्द्धित भाव से) यात्रा करने के लिये आया।

इस लेख की रचना थोड़ी होकर भी अजीबढंग की हैं। फिर भी रत्ना न्याति परिवार से यहाँ यात्रार्थ मांडलगढ से आया इतना तो स्पष्ट हैं।

(३०३ अ)

देवकुलिका नं० ४१

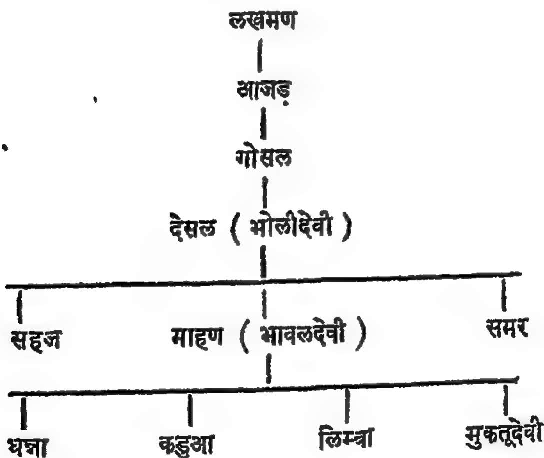
सं० १४२१ ज्येष्ठ शु० १२ बुधवार[1] के दिन मूलनक्षत्र और सिद्धिनामक योग में उपकेशगच्छीय श्रीककुदाचार्य-

---

१ लेखाङ्क ५२ में रविवार लिखा है।

सन्तानीय श्रीककसूरि के पट्ट को सुशोभित करनेवाले श्रीदेवगुप्तसूरि के उपदेश से उपकेशज्ञातीय चीवटगोत्र के वीसट के वंशज सा० लखमण पुत्र आजड़ पुत्र शा० गोसल पुत्र शा० देसल भार्या भोली पुत्र शा० सहज, शा० माहण, शा० समर शा० माहण भार्या भावलदेवी पुत्र सं० धन्ना, शा० कडुआ, शा० लिम्बा, भगिनी मुकतू आदि के सहित साध्वी भावलदेवी के द्वारा श्रीपार्श्वनाथचैत्य में आत्म-कल्याण के लिये देवकुलिका करवाई (व्यय समरने किया अधिक संभाव्य है)

चीवट गोत्र वंशवृक्ष



(ब)

सं० १४८३ वैशाखकृ० ७ के दिन बृहत्तपागच्छाधि-पति श्रीदेवसुन्दरसूरि के पट्टधरों में मुकुट के समान श्री-

(२९३)

सोमसुन्दरसूरि श्रीमुनिसुन्दरसूरि श्रीजयचन्द्रसूरि श्रीभुवन-सुन्दरसूरि श्रीजिनसुन्दरसूरि के उपदेश से श्रीमालज्ञातीय ......पुत्र ठ० सारंग पुत्र ठ० गुणराज पुत्र नागराजने अपनी भार्या के कल्याणार्थ यहाँ अग्रशिखर बनवाया।

(३०४ अ)

देवकुलिका नं० ४२

कल्याणकारी जय और अभ्युदय हो। "प्रतिष्ठराजा के नन्दन और सुसीमाराणी के अंग से उत्पन्न श्रीपद्मप्रभ-जिनेन्द्र रक्त कमल की प्रभा के समान दिखाई देते हैं वे पवित्र करें।" सं० १४२१ कार्त्तिक शु० ५ रविवार के दिन हस्तनक्षत्र में कोड़ीनारनगरनिवासी आगमिकगच्छा-नुयायी मोढ़ज्ञातीय सुश्रावक झाल्हा, समदेव, ठ० वीना, ठ० सणसव, जयता पुत्र सं० अजितने भार्या हिवा (शिवा) देवी आदि कुटुम्ब परिवार सहित भव को जीतने के लिये श्रीपद्मप्रभस्वामी का बिम्ब करवाया। नेहड़ भार्या अहिव-देवीने श्रीपार्श्वनाथ की देवकुलिका बनवाई।

(ब)

सं० १४८३ वैशाखशु० ७ के दिन भट्टारक श्रीदेव-सुन्दरसूरि के पट्टधर सोमसुन्दरसूरि मुनिसुन्दरसूरि जय-चन्द्रसूरि भुवनसुन्दरसूरि जिनसुन्दरसूरि के धर्मोपदेश से श्रीमालज्ञातीय विजयसिंह पुत्र जगतसिंह पुत्र गुणपति,

रत्नसिंह पत्नी कालुदेवी पुत्र रंगदेवने (अपने) कल्याणार्थ देवकुलिका करवाई।

(३०५–३०६)

देवकुलिका नं० ४३, ४४

सं० १४८३ वैशाखकृ० ७ रविवार के दिन तपगच्छनायक श्री देवसुन्दरसूरि के पट्ट को अलङ्कृत करनेवाले भट्टा० श्रीसोमसुन्दरसूरि श्रीमुनिसुन्दरसूरि श्रीजयचन्द्रसूरि के उपदेश से योगिनीपुर के निवासी शा० रूला पुत्र हंसराज, पुत्री हंसादेवी पुत्र रंगदेवने करवाई।

(३०७)

देवकुलिका नं० ४५

सं० १४८३ वैशाखशु० १३ के दिन तपगच्छाधिराज श्रीदेवसुन्दरसूरि के पट्ट को अलङ्कृत करनेवाले श्रीसोमसुन्दरसूरि श्रीजयचन्द्रसूरि के उपदेश से रतनपुरनिवासी सं० लक्ष्मण पुत्र सं० राघव, मंत्री गोसल पुत्र सोमप्रभराज भार्या रंगादेवी पुत्र सोमदेवने रंगादेवी के श्रेयार्थ (देवकुलिका) करवाई।

इन लेखों में भुवनसुन्दरसूरि के नाम संभवतः इसलिये नहीं है कि ये दोनों आचार्य जीरापल्लीतीर्थ में उस समय विद्यमान नहीं थे। देवकुलिका नं० ४१, ४२ के द्वितीय

लेखों में जो पश्चात्वर्त्ती और वैशाखशुक्ला सप्तमी के हैं, इन दोनों आचार्यों का नाम विद्यमान है। भुवनसुन्दरसूरि और जिनचन्द्रसूरि अनुक्रम से श्रीजयचन्द्रसूरि से छोटे हैं, इसलिये श्रीजयचन्द्रसूरि के लिये इनके उपस्थित होने पर ही इनका नाम देना मर्यादानुसार उचित है।

(३०८ अ)

देवकुलिका नं० ४६

सं० १२६३ अढाढ़कृ० २ गुरुवार के दिन श्रीधर्मघोषसूरि के उपदेश से ओसवालज्ञातीय सं० आंबड़ पुत्र जगसिंह पुत्र उदयसिंह भार्या उदयादेवी के पुत्र नेणसिंहने इस जीरापल्लीपार्श्वतीर्थ में मोक्षरूपी धन प्राप्त करने के लिये देवकुलिका करवाई।

धर्मघोपसूरि नामक दो प्रसिद्ध आचार्य तेरहवीं शताब्दि में हो गये हैं। एक वे हैं जो श्रीजयसिंहसूरि के पट्ट को अलंकृत करनेवाले थे और जिनके पश्चात् श्रीमहेन्द्रसिंहसूरि हुए। उनका जन्म सं० १२०८, दीक्षा सं० १२२६, आचार्यपद सं० १२३४ और निर्वाण सं० १२६८ में हुआ। द्वितीय श्रीदेवेन्द्रसूरि के पट्टधर और सोमप्रभसूरि के गुरु थे। मांडवगढ़ के प्रसिद्ध महामंत्री पृथ्वीकुमार(पेथड़) के ये गुरु थे। निर्वाण सं० १३३२ में हुआ। दोनों आचार्यों के कालों पर विचार करने से यही उचित प्रतीत होता है कि उक्त

(३०६)

देवकुलिका का शिलान्यास सं० १२६३ में श्रीजयसिंहसूरि के पट्टधर श्रीधर्मघोषसूरि के उपदेश से हुआ। सं० १२६५ में ये आचार्य जालोर गये थे और वहाँ पर भीमसिंह नामक क्षत्रिय को प्रतिबोध देकर सहकुटुम्ब जैनधर्मी बनाकर ओसवालज्ञाति में सम्मिलित किया था। इस घटना से इन आचार्य का सिरोही प्रान्त में सं० १२६३ में विहार हुआ होना ही चाहिये, प्रमाणित हो जाता है।

(ब)

सं० १४८३ भाद्रपदकृ० ७ गुरुवार के दिन तपागच्छनायक श्रीदेवसुन्दरसूरि के पट्टभूषण भट्टारक श्रीसोमसुन्दरसूरि श्रीमुनिसुन्दरसूरि श्रीजयचन्द्रसूरि श्रीभुवनसुन्दरसूरि के उपदेश से खंभातनिवासी ओसवालज्ञातीय सोनी नरिआ पुत्र सोनी पद्मसिंह (लक्ष्मणसिंह) भार्या आल्हणदेवीने जीरापल्लीतीर्थचैत्य में चतुष्किका के ऊपर शिखर बंधवाया।

(३०९)

देवकुलिका नं० ४८

" अपने सप्त-फणों के द्वारा श्रीपार्श्वनाथप्रभु संसारवासियों की और श्रीसंघों की सात भयों और सात नरक के भयों से रक्षा करते हैं, वे पार्श्वनाथ आपलोगों का रक्षण करें। " सं १४१२ फाल्गुनशु० १२ के दिन स्वातिनक्षत्र

में वृहद्गच्छीय श्रीदेवचन्द्रसूरि के पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरि के पट्ट को मुक्ताहार के समान सुशोभित करनेवाले श्रीरामचन्द्रसूरिने अपने आत्मश्रेयार्थ जीरापल्लीतीर्थ के चैत्य में देवकुलिका बनवाई। जीरापल्लीयगच्छ के सकल संघ को शुभकर हो। जब तक पृथ्वी रहेगी, सुमेरु रहेगा और सूर्य, चन्द्र गगन में प्रकाशक रहेंगे तब तक यह देवकुलिका लोगों के द्वारा प्रशंसा पाओ।" सकल संघ और जीरापल्लीयगच्छ का मंगल होवे।

(३१०)

देवकुलिका नं० ४९

"श्रीपार्श्वनाथ भगवान् अपने सात फणों के द्वारा संसारवासियों एवं संघ समुदायों की सिंहादि और रत्नप्रभादि नरक सम्बन्धि सात भयों से रक्षा करते हैं, वे पार्श्वप्रभु आप लोगों का रक्षण करें।" सं० १४११ चैत्र-कृ० ६ बुधवार के दिन अनुराधा नक्षत्र में वृहद्गच्छीय श्रीदेवचन्द्रसूरि के पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरि के गादीधर तप से नमे हुए तपरूप धनवाले तपस्वी साधुओं के परिवार से परिवेष्टित जीरापल्लीय श्रीरामचन्द्रसूरिने पवित्र श्रीपार्श्वनाथ के चैत्य में देवकुलिका बनवाई। "जब तक पृथ्वी, सुमेरु-पर्वत और आकाश में प्रकाशमान सूर्य चन्द्र स्थिर रहें तब तक यह देवकुलिका अभिनन्दिता (जयवती) रहो।"

(३११)

देवकुलिका नं० ५०

"श्रीशान्तिनाथप्रभु का आत्मबल मुक्तिरमणी के ललाट स्थित भौओं को आनन्द देनेवाला है और प्रभु के चन्द्रमा का मित्र (मृग) लंछन है जो दोष युक्त लोगों में नहीं पाया जाता।" सं० १४१२ आश्विनकृ० ४ बुधवार के दिन कृत्तिका नक्षत्र में ओसवालज्ञातीय व्य० अभयपाल भार्या राजुलदेवी पुत्र व्य० वीकामल भार्या पूंजीबाई पुत्र डूंगर, पाल्हा, दोल्हाने समस्तपरिवार सहित अपने कुटुम्ब के कल्याणार्थ श्रीपार्श्वनाथचैत्य में श्रीशान्तिनाथ की देव-कुलिका श्रीविजयसेनसूरि के शिष्य श्रीरत्नाकरसूरि[1] के उपदेश से बनवाई।

(३१२)

देवकुलिका नं० ५१

सं० १४८३ भाद्रपदकृ० ७ गुरुवार के दिन तपागच्छ-नायक श्रीदेवसुन्दरसूरि के पट्टधर श्रीसोमसुन्दरसूरि श्रीजय-चन्द्रसूरि श्रीभुवनसुन्दरसूरि के उपदेश से कलवर्गानिवासी ओसवालज्ञातीय शा० मांडण, शा० शिवि के पुत्र देसाने जीरापल्लीतीर्थचैत्य में देवकुलिकाका शिखर बनवाया।

---

[1] लेखाङ्क ३२७ के अनुसार ये आचार्य ब्रह्माणगच्छीय हैं।

(३१३)

देवकुलिका नं० ५२

सं० १४८३ भाद्रपदकृ० ७ गुरुवार के दिन वीसा भार्या वामादेवी, गोष्ठी सोनानी हीरा ।

(३१४)

सं० १४९२ मार्गशिरकृ० १४ रविवार के दिन वोघाग्रामनिवासी आड़ भार्या अहड़देवी पुत्री झमकुबाईने शिखर करवाया ।

(३१५)

देवकुलिका के छज्जा में—वामादेवी के पुत्र सीहड़ गोष्ठीने देवकुलिका करवाई ।

(३१६)

मूलजिनालय के पीछे देवकुलिका के स्तम्भ पर—

सं० १४८७ अरिहन्तों को नमस्कार हो । गून्दी कर पीपलगच्छ में त्रिभविया श्रीधर्मशेखरसूरि के शिष्य वाचक देवचन्द्र मुद्राकला से और तालध्वजीय वाचक सहजसुन्दर अर्हन्तों और जिनेश्वरों को नित्य वन्दन करता है ।

(३१७)

पटचतुष्किका के स्तम्भ पर—

सं० १८५१ आषाढ़शुक्ला पूर्णिमा के दिन श्रीजीरा-

पल्ली के मन्दिर के शिखर का जीर्णोद्धार सकलभट्टारक-पुरन्दर भट्टारक श्री श्री श्री श्री १००८ श्रीरंगविमलसूरि के सदुपदेश से रु० ३०२११) व्यय करके शा० रूपा, शा० जोयता, शा० आनन्दा, शा० वीरम, शा० रामजी, शा० हंजादेवीने सिरोही नगर से द्रव्य संचय कर जीरापल्ली निवासी गजधर सोमपुर केसा दला के द्वारा करवाया।

(३१८)

लोटानातीर्थ में कायोत्सर्गस्थ प्रतिमा—

सं० ११३० ज्येष्ठशु० ५............ के दिन निर्वृति-कुल के श्रीनन्द (और) आसपालने श्रीशेखरसूरि द्वारा श्रेष्ठ श्रीपार्श्वजिन की दो प्रतिमा प्रतिष्ठित करवाई।

(३१९)

ऋषभदेव पादुका—

सं० १८६९ पौषशु० १३ गुरुवार के दिन श्रीऋषभ-देवजी की पादुका को नमस्कार हो जो श्रीविजयलक्ष्मीसूरि-के द्वारा लोटीपुर पत्तन में प्रतिष्ठित हुई।

(३२०)

मंडप में स्थापित सपरिकर प्रतिमा—

सं० ११४४ ज्येष्ठकृ० ४ के दिन प्राग्वाटज्ञातीय व्य०

(३०१)

श्रे० यापु भार्या देवीने श्रीवर्धमानस्वामी की प्रतिमा करवाई जो आहनगोत्रीय सहदेवने श्रीदेवाचार्य के द्वारा लोटाणक (पुरस्थ) आदिनाथ के मन्दिर में प्रतिष्ठित करवाई।

(३२१)

धातुमय पंचतीर्थी—

सं० १०११ में प्राग्वाट शा० नल का पुत्र सिंहदेव भार्या जामलदेवीने श्रीशान्तिनाथ (पंचतीर्थी) प्रतिमा उपकेशगच्छीय श्रीदेवगुप्तसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाई।

(३२२)

सेलावड़ा (सिरोही) धातुचतुर्विंशति—

सं० (१३)२८ वैशाखकृ० ५ गुरुवार के दिन ब्रह्माण-गच्छीय श्रीविमलसूरि के पट्टधर भ० श्रीबुद्धिसूरि के द्वारा राणपुरनिवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० भूमव भार्या गूरी-देवी का पुत्र सरवण भार्या टमकुदेवी पुत्र धर्मा और उदा पितृव्य जूगणजीने श्रीधर्मनाथचतुर्विंशतिजिनपट्ट प्रतिष्ठित करवाया।

इस लेख का संवत् घिस जाने से पढ़ने में नहीं आया और २८ जो पढ़ने में आया वह भी भ्रमात्मक तो नहीं है। ब्रह्माणगच्छ के श्रीविमलसूरि के कुछ लेख जिनविजयजीने

अपनी 'प्राचीनजैनलेखसंग्रह' नामक पुस्तक में संग्रहित किये हैं। उनका अंतिम लेख सं० १३१६ का है। जैसा उक्त पुस्तक के लेखाङ्क ४६५ से प्रगट होता है। धातु-चोवीसी के उक्त लेख से स्पष्ट प्रगट है कि यह लेख उस समय के पश्चात् का है जब बुद्धिसागर विमलसूरि के पट्ट पर आरूढ़ हो चुके थे। अतः यह लेख सं० १३२८ का होना चाहिये। प्राचीनजैनलेखसंग्रह में इनके दो लेख ४९९, ५०० नम्बर के १३२६ के हैं।

(३२३)

महावीरमुछाला के मंदिर के छज्जा में—

संवत १०१३ में संबलसिंहने यह छज्जा करवाया।

(३२४)

महावीरमुछाला चैत्य में सुरक्षित पबासन पर—

सं० १२१४ फाल्गुनशु० ५ के दिन श्रीवंशीय मांडव-गोत्र के यशोभद्रसूरि सन्तानीय अनुयायी मंत्री श्रीसौहार के द्वारा श्रीप्रीतिसूरिजी की तत्वावधानता में पबासन बनवाया।

(३२५)

वरमाण के चैत्य में प्रतिमा—

सं० १३५१ माघकृ० १ सोमवार के दिन प्राग्वाट-

ज्ञातीय श्रे० झांझण भार्या राउल पुत्र सिंहराजने भार्या पद्मादेवी, लज्जालूबाई पुत्र पद्माजी भार्या मोहिनी पुत्र विजयसिंह सहित श्रीपार्श्वनाथजी की (कायोत्सर्ग) प्रतिमा करवाई।

(३२६)

सं० १३५१ में ब्राह्मणगच्छीय मेता मंडाहड्डिय श्रे० पूनसी (पुण्यसिंह) भार्या पद्मलदेवी पुत्र पद्मसिंहने (कायोत्सर्गस्थ) जिनयुग्म प्रतिष्ठित करवाये।

(३२७)

षट्चतुष्किा स्तम्भ पर—

सं० १४८६ वैशाखकृ० १ बुधवार के दिन ब्रह्माणगच्छ के भट्टारक श्रीपुण्यप्रभसूरि के पट्टधर श्रीभद्रेश्वरसूरि के पट्टाधिपति श्रीविजयसेनसूरि के पट्टधर श्रीरत्नाकरसूरि के शिष्य श्रीविमलसूरि के द्वारा पुण्यार्थ रंगमंडप बनवाया।

(३२८)

पद्माशिला की छत में—

सं० १२४२ चैत्र शु० पूर्णिमा के रोज ब्रह्माणगच्छानुयायी श्रीपूनिगपुत्री ब्रह्मदत्ता जिनहा पोल्हा, नानकी सहित श्री अजितनाथजी की देवकुलिका के लिये वीरप्रभु

की प्रतिमा तथा पद्मशिला करवाई । फूहड़ के द्वारा लेख उत्कीर्ण करवाया ।

(३२९)

सं० १३७३ वैशाख शु० ११ शुक्रवार के दिन ठ० झांझांने माता आंजना (अंजना)देवी, पुत्र के कल्याणार्थ कुलसंघीय भट्टारक श्रीपद्मनन्दी के सदुपदेश से श्रीचन्द्रप्रभ-स्वामी का (पंचतीर्थी) बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

(३३०)

सं० १४०६ फाल्गुन शु० १० गुरुवार के दिन श्री-श्रीमालज्ञातीय व्य० सुलस की भार्या सोहगदेवी के कल्या-णार्थ पुत्र व्य० धांधकने श्रीधनेश्वरसूरि के द्वारा श्रीपार्श्व-नाथ का (पंचतीर्थी) बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया ।

(३३१)

दयाणा (सिरोही) कायोत्सर्गस्थ प्रतिमा—

सं० १०११ आषाढ़ शु० ३ शनिवार के दिन सनड़ भार्या नयनाबाई पुत्र वसिया, भार्या वयजलदेवी पुत्र लक्ष्मणसिंहने श्रीपार्श्वनाथ के युग्म (दो कायोत्सर्गस्थ) बिम्ब बृहद्गच्छीय परमानन्दसूरि के शिष्य श्रीयक्षदेवसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाये ।

(३३२)

काछोली (सिरोही) मूलनायक के परिकर का—

सं० १३४३ में कछूलिका-पार्श्वनाथमन्दिर के गोष्ठिक (कार्यवाहक) श्रेष्ठि श्रीपाल भार्या सिरियादेवी पुत्र नरदेव, श्रे० वोढ़ा भार्यावीरदेवी पुत्र श्रे० रांकदेव, मंत्री देवसिंह, महं० सलखा पुत्र गला, श्रे० कर्मा भार्या अनुपमादेवी पुत्र महं० अजयसिंहने श्रे० भावुखीदा और मोहन के साथ श्रे० जगसिंह पुत्र श्रे० धनसिंह, शंभुपाल, श्रे० पूनड पुत्र धीरा, श्रे० सोहड़ पुत्र विजयसिंह, श्रे० झांझण पुत्र रामसिंह आदि गोष्ठिकों के सहित माता पिता के कल्याणार्थ श्रीपार्श्वनाथ प्रभु का द्वार परिकर सहित कच्छोलीगच्छ के गुरुओं के उपदेश से करवाया।

कच्छोली, कंछोली और कछोलीवाल गच्छ का परिचय अवश्य ग्रन्थों एवं लेखों में मिलता है, परन्तु मुनिमेरु (चन्द्र, विजय, सुन्दर) नामक कोई आचार्य या साधु तेरहवीं शताब्दि में हुए हैं, कोई पता नहीं लगता।

(३३३)

पिंडवाडा (सिरोही) महावीर मन्दिर में छोटी धातुप्रतिमा—

सं० १००१ में श्रीश्रेयांसनाथ का बिम्ब पुंनणने अपने कल्याणार्थ बनवाया।

यह लेख इस संग्रह में सर्वलेखों से प्राचीनतम है। परन्तु दुःख है कि यह अति छोटा और वह भी अपूर्ण और अस्पष्ट है। गच्छ, आचार्य, गोत्र, वंश किसीका भी इसमें उल्लेख नहीं है।

(३३४)

भीलड़ियातीर्थ में धातुपंचतीर्थी—

सं० १३६७ वैशाखशु० ९ के दिन प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० तिहुअणसिंह भार्या हांसलदेवी के कल्याणार्थ० पुत्र श्रे० सोमाने श्रीआदिनाथजी का बिम्ब मडाहडियगच्छ के श्रीचन्द्रसिंहसूरि के शिष्य श्रीरविकरसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(३३५)

सं० १५३५ माघकृ० ९ शनिवार के दिन कुतुबपुर-निवासी प्राग्वाटज्ञातीय व्य० काजा भार्या देवीबाई पुत्र भोलाने स्वपत्नी राजुलबाई पुत्र हांसा, रथ, आदि परिजनों के सहित अपने पिता माता के कल्याणार्थ तपागच्छ के श्रीलक्ष्मीसागरसूरि के द्वारा श्रीशान्तिनाथजी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(३३६–३३७)

चरणयुगल का लेख—

सं० १८३७ पौषकृ० १२ सोमवार के दिन भट्टारक

श्रीश्रीश्री १००८ श्रीहीरविजयसूरीश्वर गुरुवर को नमस्कार हो। श्रीहेतविजयगणी के चरणयुगल हैं, श्रीमहिमाविजयगणी के चरणयुगल हैं।

(३३८)

पार्श्वनाथचैत्य के भूगृह की पंचतीर्थी--

सं० १५०७ माघमास में कावलीग्रामनिवासी श्रे० डूंगर भार्या रूपी पुत्र मालाने स्वभार्या टीवूबाई पुत्र कर्मा हेमा आदि परिजनों के सहित तपागच्छनायक श्रीसोमसुन्दरसूरि श्रीजयचन्द्रसूरि के शिष्य श्रीरत्नशेखरसूरि के द्वारा श्रीसुमतिनाथजी का बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(३३९)

सं० १३३४ वैशाखकृ० ५ बुधवार के दिन श्रीजिनेश्वरसूरि के शिष्य श्रीजिनप्रबोधसूरि के द्वारा शा० बोहिल्ल पुत्र शा० वइजलने स्वभ्रातृ मूलदेव आदि के साथ अपने और अपने कुटुम्ब के कल्याणार्थ श्रीगौतमस्वामी की प्रतिमा प्रतिष्ठित करवाई।

(३४०-३४१)

पबासन की भित्ति के स्तंभ पर 'श्रीजीराउलाजी

---

१ अर्बुदप्राचीनजैनलेखसंग्रह भा० द्वि० के लेखाङ्क ३१७ के अनुसार ये आचार्य खरतरगच्छीय हैं।

भूः उ ठं क' और सीढ़ी के पासवाले स्तंभ पर 'सा जस
बवल संघपति' ये दो लेख उत्कीर्णित हैं, परन्तु इनके
रचना अर्थ समझ में नहीं आये, इसलिये इनका अनुवाद
छोड़ दिया है।

भीलड़ियाग्राम के गृहमन्दिर में मूलनायक–

इस गृहमन्दिर में मूलनायक प्रतिमा के अतिरिक्त
आदिनाथ और चन्द्रप्रभु की प्रतिमायें दोनों ओर विराज-
मान हैं। इन तीनों प्रतिमाओं के लेख एक ही हैं।

(३४२)

सं० १८९२ वैशाखशु० १३ शुक्रवार के दिन भीलड़ी
के तपागच्छीय समस्त महाजन संघने श्रीनेमिनाथजी की
प्रतिमा करवाई। श्रीईडरनगर में चन्द्रप्रभस्वामी और श्री-
आदिनाथस्वामी के बिम्बों की अंजनशलाका हुई ऐसा इन
लेखों से सिद्ध होता है।

(३४३)

अम्बिका की मूर्त्ति–

सं० १३४४ ज्येष्ठशु० १० बुधवार के दिन श्रे० लक्ष्मण-
सिंहने अम्बिका की मूर्त्ति करवाई।

(३४४)

अधिष्ठायक मूर्त्ति—

सं० १३४४ ज्येष्ठशु० १० बुधवार के दिन श्रे० लक्ष्मणने अधिष्ठायक मूर्त्ति करवाई।

(३४५)

नेसड़ा (पालनपुर) के पार्श्वनाथ चैत्य में धातुमयमूर्त्ति—

सं० १२४४ माघ शु० १० सोमवार के दिन श्री-प्रसन्नसूरि के द्वारा डीसावाल श्रे० राणा पुत्र आशपाल, भ्राता प्रेमसेन, भ्रा० कलत्र रत्नदेवने भार्या सिरियादेवी के कल्याणार्थ यह चतुर्विंशतिजिनप्रतिमा प्रतिष्ठित करवाई।

कलत्र का यहाँ क्या अर्थ होता हैं, यह अस्पष्ट है। वैसे कलत्र का प्रचलित अर्थ स्त्री है यहाँ आशपाल और प्रेम-सेन के कुटुम्बी जन से अर्थ लिया हुआ अधिक संगत है।

(३४६)

सं० १२६९ फाल्गुन कृ० ५ सोमवार के दिन श्री-मुनिचन्द्रसूरि के उपदेशसे श्रीसूरि के द्वारा श्रीमालज्ञातीय श्रावक सज्जनने पिता खेता (क्षेत्रसिंह) माता लच्छुबाई के कल्याणार्थ श्रीआदिनाथपंचतीर्थी प्रतिमा प्रतिष्ठित करवाई।

(३४७)

वात्यम (दियोदर) के चैत्य में पंचतीर्थी—

सं० १४४९ वैशाख शु० ६ शुक्रवार के दिन अंचलगच्छ के श्रीमेरुतुङ्गसूरि के उपदेश से श्रीसूरि के द्वारा शालाशाह ठ० राणा भार्या भोलीदेवी पुत्र विक्रमसिंहने अपने माता पिता के कल्याणार्थ श्रीमहावीरस्वामी (पंचतीर्थी) बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(३४८)

सं० १७८२ वैशाख शु० पूर्णिमा गुरुवार के दिन पं० श्रीजयविजयजी, पं०श्रीशुक्लविजयजी, पं०श्रीनित्यविजयजी, पं० श्रीहीरविजयजी, पं० श्रीजीवविजयजी की पादुकायें प्रतिष्ठित हुई।

(३४९)

वासणा (पालनपुर) के चन्द्रप्रभचैत्य में—

सं० १२४० माघशु० १३ के दिन लखमसी(लक्ष्मणसिंह), रणसी(रणसिंह) श्रे० पोण(सिंह) और देपाल(सिंह)ने श्रीयशोदेवसूरि के द्वारा (धातुपंचतीर्थी) प्रतिष्ठित करवाई।

(३५०)

मूलनायक प्रतिमा—

सं० १९५५ फाल्गुनकृ० ५ गुरुवार के दिन प्राग्वाट

केरा के पुत्र रूपा तल्लाजीने श्री(चन्द्रप्रभस्वामी का) बिम्ब करवाया जिसकी प्रतिष्ठाञ्जनशलाका तपागच्छीय आहोर-नगर के संघने भट्टा० श्रीविजयराजेन्द्रसूरि के द्वारा आहोर में करवाई।

(३५१)

दक्षिणभाग में स्थापित–

सं० १९५५ फाल्गुनकृ० ५ गुरुवार के दिन आहोर-निवासी तपागच्छीयसंघने श्री(चन्द्रप्रभप्रभु का) बिम्ब करवाया। जसरूप जीतमलने श्रीराजेन्द्रसूरि के द्वारा आहोर में जिसकी प्रतिष्ठा (अंजनशलाका) करवाई।

(३५२)

बायें भाग में स्थापित–

सं० १९५५ फाल्गुनकृ० ५ गुरुवार के दिन सांथू-निवासी वृद्धशाखीय ओसवाल शा० केशरीमल कस्तूरचंदने श्री(चन्द्रप्रभप्रभु का) बिम्ब भरवाया, जिसकी प्रतिष्ठा आहोर नगर में मुता जसरूप जीतमलने भ० श्रीराजेन्द्रसूरि के करकमल से करवाई।

(३५३)

पद्मासन के नीचे के प्रस्तर पर–

श्रीराजेन्द्रसूरि, श्रीधनचन्द्रसूरि, श्रीभूपेन्द्रसुरि सद्-

(३५३)

गुरुओं को नमस्कार हो। सं० १९९७ मारवाड़ी पंचांग के अनुसार उत्तम माह फाल्गुनकृष्णा ६ के दिन कुम्भलग्न स्थिरांश सोमवार को प्रातःसमय वासनानगरनिवासी श्री-मालज्ञातीय बृहच्छाखीय श्रीसंघने वर्तमानाचार्य भट्टारक श्री श्री १००८ विजययतीन्द्रसूरि के आदेश से मुनिवर श्रीमद् हर्षविजय के द्वारा ठा० भीमसिंह के राज्यकाल में स्थापित करवाई। श्रीसौधर्मबृहत्तपागच्छ में शुभ कारक हो।

(३५४)

लुआणा (दियोदर) के आदिनाथ चैत्य में प्रस्तर प्रतिमा–

धातु चोवीशी पंचतीर्थियाँ–

सं० १९५५ फाल्गुनकृ० ५ के दिन सियाणानगर के समस्त संघने० श्रीराजेन्द्रसूरिजी के द्वारा (आहोर में श्री-विमलनाथजी का) बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(३५५)

सं० १९५५ फाल्गुनकृ० ५ के दिन सियाणानिवासी संघने (श्रीमहावीरप्रभु का) बिम्ब करवाया। जिसकी प्रतिष्ठा आहोर में जसरूप जीतमलने सौधर्मबृहत्तपागच्छ के भ० श्रीविजयराजेन्द्रसूरि के द्वारा करवाई।

(३५६)

सं० १५११ माघशु० ९ सोमवार के दिन जाणदीग्राम निवासी श्रीमालज्ञातीय व्य० पाल्हा भार्या पाल्हणदेवी पुत्र वानरने अपनी भार्या वीकलदेवी और सुपुत्र सहित पिता, माता, पितृव्य जाल्हा, भ्राता पीताम्र और पूर्वजों के कल्याणार्थ श्रीअजितनाथचतुर्विंशतिजिनपट्ट पूर्णिमागच्छीय श्रीराजतिलकसूरि के द्वारा प्रतिष्ठित करवाया।

(३५७)

सं० १५२२ माघशु० ९ शनिवार के दिन सहुआला-ग्रामनिवासी प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० विरुआ भार्या आलीदेवी पुत्र सं० मांकडा भार्या झालीबाई पुत्र सं० अर्जुनने अपनी पत्नी अहिवदेवी सहित द्वितीया पत्नी रामती के कल्याणार्थ बृहत्तपागच्छीय प्रभु भट्टारक श्री श्री श्रीजिनरत्नसूरि के द्वारा श्रीमुनिसुव्रतस्वामी की प्रतिमा (पंचतीर्थी) प्रतिष्ठित करवाई।

(३५८)

सं० १५२३ वैशाखशु० ३ के दिन वीरमगाँव निवासी प्राग्वाटज्ञातीय सं० नापाने भार्या लखमा (लक्ष्मी) देवी पुत्र खोना, हाइय, हांसा, जावड, भावड भार्या क्रमशः अमरादेवी, नाथीदेवी, कनाईदेवी, मेघाईदेवी, आशादेवी उनके पुत्र नाकर, झटका, रूपा, सूरा आदि परिजनों सहित

श्रीरत्नशेखरसूरि के पट्टधर श्रीलक्ष्मीसागरसूरि के द्वारा श्रीविमलनाथ (पंचतीर्थी) बिंब प्रतिष्ठित करवाया।

(३५९)

सं० १५१७ फाल्गुनशु० ३ शुक्रवार के दिन विमल-गच्छीय श्रीधर्मसागरसूरि के द्वारा अहमदाबाद में श्रीमाल-ज्ञातीय शाह नागसिंह भार्या डाहीबाई पुत्र वानर भा० आशीदेवीने स्वकल्याणार्थ श्रीअजितनाथ–पंचतीर्थी प्रतिष्ठित करवाई।

(३६०)

सं० १५०५ माघशु० ५ रविवार के दिन पूर्णिमापक्षीय श्रीगुणसुन्दरसूरि के उपदेश से श्री श्रीमालज्ञातीय श्रे० नगरसिंह भार्या सांभलदेवी पुत्र समधरणने अपने माता पिता के कल्याणार्थ श्रीकुन्थुनाथ (पंचतीर्थी) बिम्ब सविधि प्रतिष्ठित करवाया।

(३६१)

सं० १५३२ वैशाखशु० १० शुक्रवार के दिन श्री श्री-वंशीय मंत्री घन्ना (घनराज) भार्या धांधलदेवी पुत्र मंत्री पांचा(पंचराज) सुश्रावकने स्वभार्या फकू, पुत्र महं० सालिग सहित पिता के पुण्यार्थ अंचलगच्छ के श्रीजयकेशरसूरि के उपदेश से लोलाड़ाग्राम में (संभवतः लुआणा) श्रीसंघने श्रीसुमतिनाथ-पंचतीर्थी बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(३६२)

सं० १६२४ विक्रम, शक सं० १४८८ माघशु० १ सोमवार के दिन ओसवालज्ञातीय श्रे० धरणा भार्या धरणादेवी पुत्र देवचन्द्र भार्या सुजाणदेवी, प्रेमलदेवीने अपने वंश के कल्याणार्थ साधु पूर्णिमापक्ष के श्रीविद्याचन्द्रसूरि के उपदेश से श्रीवासुपूज्यस्वामी का (पंचतीर्थी) बिम्ब बनवाया और संघने उसको प्रतिष्ठित करवाया।

(३६३)

सं० १५१३ पौषकृ० ३ शुक्रवार के दिन महाजनी सुहड़ भार्या सुहड़ादेवी पुत्र भोजराजने भार्या अमरादेवी, माता पिता तथा आत्मकल्याणार्थ पूर्णिमापक्ष के श्रीकमलसूरि के द्वारा श्रीशान्तिनाथ का (पंचतीर्थी) बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(३६४)

सं० १५९० वैशाखशु० ५ के दिन तपागच्छीय वृद्धशाखा के श्रीधनरत्नसूरि के द्वारा पत्तन नगर में मोढ़ज्ञातीय वृहच्छाखा के भणशाली भांगा भार्या सोनाई(सुवर्णादेवी) पुत्र तुलखाईने आत्म कल्याण के लिये श्रीशान्तिनाथ (पंचतीर्थी) बिम्ब प्रतिष्ठित करवाया।

(३६५)

सं० १५१० फाल्गुनशु० ३ गुरुवार के दिन नागेन्द्र-

गच्छीय श्रीगुणसमुद्रसूरि के द्वारा वाराही ग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय सोरतियागोत्र के श्रे० मोकल भार्या सोहागदेवी पुत्र गोईद(गोविन्द)ने माता, पिता, पितृव्यज (चचेरी भाई) तिहुण(त्रिभुवन) भार्या मांगूदेवी के कल्याणार्थ श्रीकुन्थुनाथचतुर्विंशतिजिनपट्ट प्रतिष्ठित करवाया।

(३६६)

सं० १६६५ वैशाखशु० ६ के दिन राजपुर में श्रीश्रीमालज्ञातीय शाह वहोला नागा भार्या पूनीबाई पुत्र शिवसिंहने भार्या रत्नादेवी पुत्र मेघसिंह भार्या वीरादेवी प्रमुख कुटुम्ब सहित (सर्व या स्व) कल्याणार्थ श्रीपार्श्वनाथ (पंचतीर्थी) बिम्ब करवाया जिसकी प्रतिष्ठा तपागच्छीय भट्टारक श्रीहीरविजयसूरि के पट्ट को सुशोभित करनेवाले भट्टारक श्रीविजयसोमसूरि के द्वारा हुई।

(३६७)

सं० १५८२ वैशाखशु० १० शुक्रवार के दिन लूंदाग्राम निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० वल्हटा भार्या मांकूबाई पुत्र सोभा भार्या सुहवदेवी पुत्र श्रीपाल भार्या श्रीदेवीने अपने पूर्वजों के आत्मकल्याणार्थ श्रीनमिनाथ (पंचतीर्थी) बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा चैत्रगच्छ में धरणपद्रीय भ० श्रीविजयदेवसूरि के द्वारा हुई।

(३६८)

सं० १५१५ आषाढ़शु० ५ के दिन श्रीश्रीमालज्ञातीय परीक्षक हंसराज भार्या वरजूबाई पुत्र भोजराजने स्वभार्या सोनीबाई, स्वकुटुम्ब के सहित आत्मश्रेयार्थ श्रीविमलनाथजी का (पंचतीर्थी) बिम्ब करवाया, जो पूर्णिमापक्षीय श्रीसागरतिलकसूरि के उपदेश से प्रतिष्ठित हुआ।

लेखाङ्क ३५६ से ३६८ तक की धातुमूर्त्तियाँ बनासकांठा उत्तरगुजरात के छोटे गाँव एटा के समीपवर्ती एक कृषीकार के क्षेत्र में हल चलाते समय प्रस्तरमय श्री आदिनाथजी की सर्वाङ्गसुन्दर प्रतिमा के सहित भूमि से प्रगट हुई हैं। लुआणा के जैनसंघने वहाँ से लाकर अपने गाँव के सौधशिखरी जिनालय में अष्टाह्निक–महोत्सव पूर्वक श्री आदिनाथप्रभु को मूलनायक के स्थान पर और धातुमूर्त्तियों को ऊपर शिखर में विराजमान की हैं। मूलनायक की प्रतिमा पर लेख नहीं है। परन्तु इनके दाहिने और बाँये भाग में श्रीविमलनाथजी और श्रीमहावीरस्वामी की प्रतिमायें स्थापित हैं, जो अर्वाचीन हैं और इनके लेख लेखाङ्क ३५४ तथा ३५५ में आ गये हैं। एटा गाँव लुआणा से ३ मील दूर थराद की ओर है। किसी समय यहाँ भव्यतम जैनमन्दिर होगा और जैनों के विशेष घर भी होंगे। वर्त्तमान में यहाँ न मन्दिर है और उसका न कुछ चिह्न है और न

एक भी जैन घर है। यह पचीस-तीस कृषक झोंपड़ों का ग्राम रह गया है। यही तो काल की विचित्रता है।

(३६९)

मोटी पावड़ (वाव-बनासकांठा)-

सं० १४७२ ज्येष्ठकृ० ११ सोमवार के दिन श्रीमाल-ज्ञातीय पीता बुहरा माता माल्हीदेवी पिता माता कल्याणार्थ पुत्र हेमा, धूड़ा, धन्ना आदिने श्रीशान्तिनाथचतुर्विंशतिजिन-पट्ट करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा नागेन्द्रगच्छीय श्रीरत्नसिंह-सूरि के द्वारा हुई।

जेतड़ा (थराद) के चैत्य में स्थापित-

मूलनायक की प्रतिमा का लेख घिसा जाने से बिल-कुल वांचा नहीं जाता। इनके दोनों ओर एक पार्श्वनाथ की और दूसरी चन्द्रप्रभप्रभु की प्रतिमायें स्थापित हैं। दोनों पर लेख एक ही व्यक्तियों के हैं।

(३७०-३७१)

संवत् १८३३ माघशु० शुक्रवार के दिन गेलाग्राम-निवासी श्रीश्रीमालज्ञातीय समस्तसंघने चन्द्रप्रभस्वामी और पार्श्वनाथप्रभु का बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीविजय-जिनेन्द्रसूरि के द्वारा हुई।

(३७२)

धातुमय पंचतीर्थियाँ–

सं० १४२५ वैशाखशु० ११ के दिन ब्रह्माणगच्छीय श्रीश्रीमालज्ञातीय पितामही रामादेवी, पिता नथमल, माता लीलादेवी श्रे० ठ० श्रीपालने श्रीशान्तिनाथ की पंचतीर्थी करवाई, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीबुद्धिसागरसूरि द्वारा हुई।

(३७३)

सं० १४८८ मार्गशिरकृ० ५ गुरुवार के दिन श्रीमाल-ज्ञातीय व्य० आंजन(अर्जुन) भार्या मोलीबाई पुत्र आका-(अक्षयराज)ने श्रीपार्श्वनाथजी का (पंचतीर्थी) बिम्ब करवाया, जिसकी प्रतिष्ठा श्रीसोमसुन्दरसूरि के द्वारा हुई।

(३७४)

सं० १४२४ माघशु० ८ के दिन व्य० जयता भार्या हंसादेवी पुत्र बाहड(वाग्भट)ने अपने पिता माता के कल्याणार्थ श्रीपद्मप्रभस्वामी का (पंचतीर्थी) बिम्ब करवाया।



एक भी
ग्राम रह

मोटी

सं

ज्ञातीय
पुत्र हेमा
पट्ट करा
सूरि के

जेतड़ा

मू
कुल वां
और दू
पर लेख

सं
निवासी
पार्श्वना
जिनेन्द्र



शुद्धिपत्रकम्

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
कनुक्रमणिका	अनुक्रमणिका	२	१८
सकती है	सकती हैं	३	२२
पुस्सक में	पुस्तक में	४	२०
कर्म हैं	कर्म है	५	११
यतीन्द्र	धातुप्रतिमा	५	११
प्राप्रि में	प्राप्ति में	५	१३
सौ० स्त्रियों के	सौ स्त्रियों के	६	१३
वहा	वहाँ	६	१६
गया हैं	गया है	७	५
कभ भी	कम भी	८	१९
होता हैं	होता है	९	९
प्राचीनतम्	प्राचीनतम	१०	८
करानेवाले	करानेवाला	१०	१८
वर्षो	वर्षों	१४	३
गुभ	गुम	१५	५
करते ही है	करते ही हैं	१५	९
विघर्भी	विधर्मी	१५	१९
मचानेवाली हैं	बचानेवाली है	१६	११

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
षटचतुष्किका	षट्चतुष्किका	२१	१३
ब्रह्माण	ब्रह्माण	३४	१
ब्रह्माण	ब्रह्माण	३४	२०
जिनचन्द्र	जिनचन्द्र	४३	२
पट्टे	पट्टे	४३	४
चद्र	चन्द्र	४८	२२
काव्यों की	शब्दों की	६४	१
व्यव	व्यव०	६८	२
वर्षे	वर्षे	६८	१९
मं	मं०	७४	७
कुटुब	कुटुम्ब	७८	११
शीपज्जून	श्रीपज्जून	७९	३
भ्रातनि०	भ्रातृनि०	८६	८
चतुावशति	चतुर्विंशति	८८	५
श्रीजिवीतस्वामी	श्रीजीवितस्वामी	८९	२
माग	मार्ग	९७	७
बुधे	बुधे	९७	१२
बधि	बदि	९८	११
भद्रसूरि	चंद्रसूरि	११३	७
बजूर	बरजू	११५	३
स्वपुण्थार्थं	स्वपुण्यार्थं	१२०	१०
श्रीराउला	श्रीजीराउला	१४७	५

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
सं	सं०	१५०	७
पदृावतंसं	पट्टावतंस	१५८	३
प्राग्वाठे	प्राग्वाटे	१६९	१२
असरूप	जसरूप	१७४	२
पडेरक	पं(खं)डेरक	१९०	१५
स्पष्ट हैं	स्पष्ट है	१९१	५
विग्व	विम्ब	१९४	१७
अचलगच्छे	अंचलगच्छे	१९८	१
श्रीश्रोमाल	श्रीश्रीमाल	२०१	१
वन रहा रहा है	वन रहा है	२०४	४
टही कुवाई	टहीकु वाई	२०७	१४
मा०	भा०	२१५	९
भा०	मा०	२१९	५
मुनिसिंइ	मुनिसिंह	२२१	१०
जीवितस्वामि	जीवितस्वामी	२२३	६
श्रीश्रीमालज्ञातिय	श्रीश्रीमालज्ञातीय	२२७	१८
घडसिंह	घडसिंह	२२८	११
भं	मं	२२९	५
भांडन	मांडण	२३१	१०
श्रवार्थ	श्रेयार्थ	२३१	१२
जीवितस्त्राभि	जीवितस्त्रामी	२३६	३

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
मापू	मापू	२३९	१५
भांजीबाई	मांजीबाई	२४०	१२
धनतिलकसूरि	धनतिलकसूरि	२४८	१७
अयने	अपने	२५२	१३
आरदा	आल्हा	२५४	८
घनराज	धनराज	२५६	८
प्राग्वाठ	प्राग्वाट	२५६	१३
मेहुण	मेहुण	२५८	१४
भं० लूणा	मं० लूणा	२८३	१५
शा	शा०	२८९	१०
पटचतुष्किका	षट्चतुष्किका	२९९	१९
सोमपुर	सोमपुरा	३००	६
दो	दो कायोत्सर्गस्थ	३००	११
सेलावाडा	सेलवाड़ा	३०१	१०
भंडाहडिया	मडाहडिय	३०३	६
जिंनहा	जिनहा	३०३	१८
झांझांने	झांझाने	३०४	५
मिलता हैं	मिलता है	३०५	१३
लमता	लगता	३०५	१५
कल्याणार्थ०	कल्याणार्थ	३०६	८
श्रीसोमसुन्दसूरि	श्रीसोमसुन्दरसूरि	३१९	११

